CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आह्वान

[ऐतिहासिक नाटक]

श्री गणेश वर्णी दि. जैन (शोध) संस्थान
1173
नरिया, (का. हि. वि. वि.) वाराणसी

अक्षयवट त्रिपाठी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्ग संख्या.................. प्राप्ति-संख्या.......................

ग्रन्थ-कार्ड

श्री गणेश वर्णी दि० जैन (शोध) संस्थान

ग्रन्थागार

नरिया, वाराणसी-५

ग्रन्थ नाम आह्वान ऐतिहासिक नाटक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आह्वान

[ऐतिहासिक नाटक]

अक्षयवट त्रिपाठी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशक व स्वत्वाधिकारी
मनबहालप्रसाद सर्राफ
बबुरी, वाराणसी

प्रथम संस्करण १९६६
मूल्य एक रुपया

मुद्रक
महावीर प्रेस
बी० २०/४४ भेलूपुर
वाराणसी-१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रास्ताविक वक्तव्य

मानव जीवन स्वाधीनताका सदासे उपासक है, अतः किसी भी दूसरे देशकी पराधीनता सर रहते वह बरदाश्त नहीं किया करता। सन् १८५७ के स्वातन्त्र्य संग्रामकी पृष्ठभूमिमें भी यही भावना कार्य्य करती रही होगी। अतः उसके असफल होनेपर भी इसे हम अपने आत्मसम्मानका विषय समझते हैं। प्रस्तुत नाटकमें यह भावना कितनी स्पष्टतासे विकसित हुई है, इसका निर्णय मेरे जैसे जनता-जर्नादनसे अज्ञात प्रकाशकका कार्य्य नहीं है; इसे तो निष्पक्ष साहित्य विवेचक्र ही समझ सकते हैं। फिर भी मुझे इस बातका हर्ष है कि इस प्रकाशनके माध्यमसे मैंने अपने उन पूर्वजोंके असाधारण त्याग-बलिदानोंके विषयको प्रकाशमें लानेका प्रयत्न किया है। आज संसार बड़ी तीव्र गतिसे आगे बढ़ रहा है, पर हमारा नैतिक जीवन भी उन हुतात्माओंसे आगे बढ़ पाया है, जिनके सामने राष्ट्रहित व्यक्तिगत स्वार्थोंसे कहीं ऊपर था? यदि हम १८५७ के स्वातन्त्र्य युद्धके विषयमें एक वाक्यमें कुछ कहना चाहें, तो कह सकते हैं, कि वह समष्टि एवं व्यक्तिगत संघर्षोंसे असफल हुआ था। क्या आज स्वाधीन कहलाते हुए भी हम उसी भूल-भुलइयामें तो नहीं फँसे हैं; इस नाटकको मैं आशा रखता हूँ कि विवेचकजन इसी आदर्शको सामने रखकर देखेंगे। नाटकीय दृष्टिसे यह नाटक कहाँ तक सफल हुआ है; इसके विषयमें मेरा यही निवेदन है कि विज्ञजन देश, काल एवं पात्रोंकी वर्तमान स्थितिको देखकर ही इसपर विचार करें। आजसे लगभग डेढ़-दो हजार वर्ष पहले लिखे गये संस्कृत नाटकों तथा आधुनिक 'प्रसाद' जैसे नाटककारोंकी कृतियोंका तुलनात्मक अध्ययन किया जाय, तो पर्याप्त अन्तर प्रतीत होगा। इसी प्रकार काल चक्रके बड़ी तीव्रतासे घूमते रहनेके कारण इस नाटकमें भी अनेक अन्तरोंका दृष्टिगोचर होना स्वाभाविक ही समझा जाना चाहिये। फिर भी मुझे तो अपने इस प्रकाशनको आपके सामने उपस्थित करतेहुए केवल इसीसे पर्याप्त संतोष है, कि मैंने इसके माध्यमसे राष्ट्रकी सांस्कृतिक सरस्वतीकी किंचिन्मात्र सेवा की है।

महावारुणी, श्रीसंवत् २०२२ विक्रमी — **मनबहालप्रसाद सर्राफ**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पात्र-सूची

पुरुष

बहादुरशाह 'ज़फ़र'	भारत-सम्राट्
नाना साहब	स्वातन्त्र्य युद्धके कर्णधार
तात्त्याटोपे	विशिष्ट सेनापति
अज़ीमुल्ला खाँ	पेशवाके वकील

स्त्री

ज़ीनत महल	भारत-साम्राज्ञी
लक्ष्मीबाई	झाँसीकी रानी
हज़रत महल	लखनऊकी राजमाता

नागरिक, सैनिक, नाविक, गुप्तचर, फ़क़ीर-साधु आदि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आह्वान

प्रथम अङ्क

प्रथम दृश्य

स्थान—बिठूरमें ब्रह्मावर्त भवनका मन्त्रणा-कक्ष।
समय—प्रभात

(नाना साहब धुन्धुपन्त पेशवा तथा सेनापति तात्त्या टोपे परस्पर बातें कर रहे हैं।)

नाना साहब—पूनाके सौभाग्य नाना फड़नवीसने अपने अतीन्द्रिय ज्ञानसे कुटिल फिरङ्गी शासनको भारतसे तिरोहित करनेकी जिस महती योजनाका सृजन किया था, उसकी सफलता आसन्न होगी, यदि हमारा मनोवल हिमाञ्चलके समान अचल रह सका।

तात्या टोपे—देव! अपने दृढ़ निश्चयपर स्थिर रहनेवाले अतिमानवोंका आविर्भाव प्रचुरताकी अपेक्षा नहीं रखता, फिर भी वह राष्ट्रोंको नयी चेतनायें प्रदान करता है, वशर्तें वह देशद्रोहियों पर हावी हो सके।

नाना साहब—(चिंतिन्त मुद्रामें) विश्वकी वरेण्य संस्कृतियोंके उद्गम भारत! क्या इतिहाससे सीख लेनेवाली तुम्हारी सन्ततिके लिये वह भी अवसर आवेगा, जब यह राष्ट्रके नामपर व्यक्तिगत स्वार्थोंको बलि देनेमें अपना अहोभाग्य समझेगी?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तात्या टोपे—श्रीमन्त ! व्यक्तिगत स्वार्थोंकी सङ्कीर्ण सीमाओं-ने ही तो हमारे राष्ट्रको बार-बार हतभाग्य बनाया है, फिर भी इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि इनकी रञ्चमात्र भी परवाह न कर अनेक असाधारण अवसरोंपर अपनी तलवारें सोल्लास चमकी हैं।

नाना साहब—तात्या ! हम आज जिस स्थितिमें हैं, उसके निरा-करणके लिये गौरवमय अतीतकी विरुदावलीका पारायणमात्र अक्षम होगा। (कुछ सोचतेहुये) इङ्गलैण्डसे लौटे मौलवी अजीमुल्लाका कहना था, कि अपने देशमें इन फिरङ्गियोंकी स्थिति कोई बहुत अच्छी नहीं है, तथापि ये इसलिये हमपर शासन करनेमें समर्थ हैं कि वहाँ व्यक्तिगत स्वार्थोंके लिये राष्ट्रहितके बलि देनेवाले मनुष्यों ही नहीं, पशु-पक्षियों तकका अभाव है। आगामी स्वाधीनता संग्रामके लिये टेम्स-तटपर बैठकर योजना बनानेवाले उनके सहयोगी रङ्गोजी-बापूजीका भी यही मत था।

तात्या टोपे—देव ! नियतिके जागरूक नियन्त्रणको हृदयङ्गम करते हुये यदि हम कर्तव्यपथसे स्वयं पराङ्मुख न होंगे, तो भावी पीढ़ीके लिये हमारे उत्सर्ग प्रेरणास्रोत होकर जीवित रहेंगे, जिनके माध्यमसे राष्ट्रकी स्वाधीनता चिर-ञ्जीविनी रहेगी।

नाना साहब—तात्या, चाहे भविष्यमें कुछ भी हो, किन्तु मैं अपने कार्योंसे जगत्को यह बतला देना चाहता हूँ कि द्वितीय बाजीराव पेशवाका यह दत्तक पुत्र उनके तथा पितामह रघुनाथरावके कलङ्कोंको इन फिरङ्गियोंसे लोहा लेकर परिमार्जित करनेको बद्धपरिकर है। मैं दिल्लीके बाद-शाह अकबर द्वितीयके प्रतिनिधि राजा राममोहनरायकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इङ्गलैण्ड-यात्राकी असफलतासे अवगत था, अतः अजीमुल्ला इसलिये वहाँ नहीं भेजे गये थे कि मुझे भूतपूर्व पेशवाके उत्तराधिकारीके रूपमें मिलनेवाली आठ लाख वार्षिक पेन्शनके चालू करानेकी तथा बासठ हजार बकायेके पानेकी एवं बिठूरकी इस जागीरकी भूख थी, अपितु वे इसलिये पश्चिमी देशोंके इतने दिनों तक चक्कर लगानेके बाद लौटे हैं, कि हम आगामी स्वातन्त्र्य संग्रामकी सफलताके लिए समुचित उपकरणोंसे अपनेको अवगत करा सकें।

तात्या टोपे—उस पूज्य प्रथम बाजीराव पेशवाके पीठाधीश्वरसे भारत यही आशा भी रखता है, जिनके युद्धके मैदानमें पहुँचनेपर अपने सैनिक अनुभव करते थे कि लाखोंकी फ़ौज अपने साथ है—पश्चिमी इतिहास जिनकी प्रतिद्वन्द्वितामें सिकन्दर व नेपोलियनके अतिरिक्त किसी अन्य दिव्य-मानवको न खड़ा कर सका।

नाना साहब—वीरवर! जैसे नीतिकी गोपनीयता सफलतासे समादृत होती है, वैसे ही गौरवमय अतीतकी सार्थकता तो उज्ज्वल भविष्यपर ही निर्भर रहती है। यद्यपि कल्पनाकी तरङ्गें तो प्रायः सभी महत्त्वाकांक्षी मस्तिष्कोंको आलोडित किया करती हैं, तथापि विश्वमें ऐसे अल्पतम भाग्यवान् ही दृष्टिगोचर होते हैं, जिनकी यह भावना-तरङ्गें सिद्धिमें सहायक होकर उन्हें अजर-अमर बनानेमें समर्थ बन पाती हैं।

तात्त्या टोपे—श्रीमन्त! इसकी निष्पत्तिके लिये आजके समयकी माँग यह है कि व्यक्ति विशेष ही नहीं, अपितु प्रत्येक भारतीय हृदयमें धर्मसापेक्ष सामाजिक-आर्थिक एवं राजनीतिक विकृतियोंके विरुद्ध विद्रोहाग्नि सहसा धधक उठे, एवं अपने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शकप्रवर्तकोंके आदर्श इसके संसिध्यर्थ हमारे प्रेरणा-स्रोत बनें।

(एक भृत्यका सविनय प्रवेश)

नाना साहब—क्या है ?

भृत्य-देव ! दक्षिणभारतसे एक दूत सातारा के प्रतिनिधि श्रीरङ्गोजी बापूजीका पत्र लेकर आया है।

नाना साहब—उसे ससम्मान यहाँ उपस्थित होनेकी सूचना दो।

भृत्य—जो आज्ञा। (प्रस्थान)।

नाना साहब—तात्या ! पूनाकी सत्ताको समाप्त करनेमें सातारा-दरबार फिरङ्गियोंका कभी प्रमुख सहयोगी था, परन्तु परिस्थितिवश आज उसीके प्रतिनिधि हमारे विशिष्ट सहयोगी बननेको वाध्य हुए हैं।

तात्त्या टोपे—देव ! जब अग्नि एवं जलके समान तत्त्व भी संसर्ग स्थापित करनेको बाध्य हो सकते हैं, तो हम तो कर्त्तव्याकर्त्तव्य विवेचक प्राणी हैं। वस्तुतः परिस्थितियाँ ही यथावसर शत्रुको मित्र तथा मित्रको शत्रु बननेको सदैव वाध्य करती रहती हैं। क्या यह भी कहनेकी आवश्यकता है, कि मुहम्मदबिनकासिमसे लेकर आजतक जिन मुसलमानों-से हम भारतीयोंका अनवरत सङ्घर्ष रहा है, आज उसीके एक घटक सम्राट् बहादुरशाहको हम अपना हृदय-सम्राट् माननेको वाध्य हो रहे हैं। (दूतका सविनय प्रवेशकर रङ्गोजीका पत्र नाना साहबके हाथमें समर्पित करना)।

नाना साहब—(पत्रको देखते हुए तात्त्या टोपेसे) तात्त्या ! इसे पढ़कर सुनाओ।

तात्त्या टोपे—(पत्र पढ़ता है) श्रीमन्त पूज्य पेशवा महाराजकी पुनीत सेवामें श्रीरङ्गोजी बापूजीका सविनय निवेदन है कि आपके आदेशानुसार दक्षिण भारतके आगामी स्वातन्त्र्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संग्राममें सम्मिलित होनेके लिए सैकड़ों साधु-सन्तों एवं फ़क़ीरों द्वारा जनता एवं सैनिकोंमें प्रचार कराया जा रहा है। इसके अतिरिक्त अंग्रेजोंकी फ़ौजी छावनियोंमें भी अपने जागरूक गुप्तचर कार्यरत हैं। यद्यपि देशी रजवाड़ोंसे भी आवश्यकतानुसार अपनी दक्ष सेनाओंके साथ आगामी धर्म-युद्धमें सहसा कूद पड़नेके लिए आश्वासन माँगे जा रहे हैं और कतिपयने इस विषयमें हमें आश्वस्त भी किया है, परन्तु निजाम अफ़ज़ुलुद्दौला तथा उसके वज़ीरे आजम सर सालार जङ्गपर अपना कोई वश नहीं चलनेवाला है। यद्यपि १८ अप्रैल सन् १८५६ के सर आर्सकाइन पेरीके अंग्रेजी संसद्के भाषणसे उन्हें ज्ञात है कि निजाम-मालवा-गुजरात एवं राजस्थानके राज्योंको कम्पनी शीघ्र ही अपनानेवाली है, फिर भी मृगतृष्णावश ये दोनों उस्मानाबाद एवं रायपुरके जिले कम्पनीसे लौटानेकी खातिर हमेशाके लिए भारतको अंग्रेजोंके गुलाम बननेको उधार खाये बैठे हैं। ऐसी दशामें भावी धर्मयुद्धका श्रेयस्कर नेतृत्व उत्तर-भारतको ही ग्रहण करना उचित होगा।

नाना साहब—(चिन्तित मुद्रामें, भृत्यसे) बहादुर ! चलकर अतिथिगृहमें विश्राम करो।

दूत—देव ! पत्रके प्रत्युत्तरमें ही इस आशावादीका विश्राम अन्तर्निहित है।

नाना साहब—मातृभूमिके सैनिक ! मौखिक रूपमें श्रीरङ्गोजी बापूजीसे सप्रेम कहना कि देशको फिरङ्गियोंसे मुक्ति दिलानेमें चाहे जिस किसी भी साधनको उपयोगमें लाना पड़े, वही करना। इस धुन्धुपन्तका तुम्हारे लिये यही एक मात्र सन्देश है। हाँ, उनके लिए गुजरातके नर्मदा तटस्थ विहार गाँवके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पण्डित रुद्रदत्तजीसे भी सम्पर्क बनाये रखना आवश्यक होगा।

(इनका सविनय प्रस्थान)

तात्या टोपे—श्रीमन्त ! निजामका उदय प्रारम्भसे ही भारतके लिए धूमकेतुके समान रहा है।

नाना साहब—मराठी रियासतोंका सङ्गठित बल कभी निजामकी सत्ताको समाप्तकर डालनेमें समर्थ था, पर किया क्या जाय, हम किसी भी आदर्शपर एक होनेमें असमर्थ हो रहे थे ! (कुछ सोचते हुए) अंग्रेजी राज्य एवं निजामकी सल्तनतका अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है, अतः उसकी सत्ताकी तो उसी दिन समाप्ति हो जायगी, जिस दिन यहाँसे फिरङ्गी शासनका अन्त हो जायगा, किन्तु इसका निर्णय तो भविष्यके गर्भमें है।

तात्या टोपे—देव ! पूज्य प्रथम बाजीराव महाराजका आदर्श था कि जड़पर कुठाराघात करो, डाल-पत्ते स्वयं ध्वस्त हो जायँगे, अतः मेरी समझसे इस विषयमें भी इसी आदर्शको हमें सदैव अपने सम्मुख रखना होगा।

नाना साहब—अवश्य !

(एक भृत्यका सविनय प्रवेश)

नाना साहब—क्या है ?

भृत्य—श्रीमन्त ! मौलवी अजीमुल्ला खाँ साहब सेवामें उपस्थित होना चाहते हैं।

नाना साहब—उन्हें ससम्मान यहाँ आनेकी सूचना दो।

भृत्य—जैसी आज्ञा। (प्रस्थान)

(अजीमुल्लाखाँका सामने आकर नानासाहबको अभिवादन करना)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाना साहब—विराजिये वकील साहब ! कहिये भारत-सम्राट्का कोई आज्ञा-पत्र तो मेरे लिए नहीं लाये हैं ?

अजीमुल्ला—(पयामे आज़ादीकी प्रतिलिपि नाना साहबके हाथमें देतेहुए) बज़रिये आपके समूचे हिन्दके फ़र्ज़न्दगानको जहाँ-पनाहका यह फ़रमान है ।

नाना साहब—(ससम्मान फ़रमानको अजीमुल्लाके हाथ लौटाते हुए) इसे पढ़कर सुनायें ।

अजीमुल्ला—(जोरसे पढ़ते हैं) । 'हिन्दुस्तानके फ़र्ज़न्दगान उठो । आज़ादी ख़ुदाकी ओरसे इन्सानको अता की गई सभी बरक़तोंमें क़ीमती है । ख़ुदा अब नहीं चाहता कि तुम ख़ामोश रहो । क्योंकि उसने हिन्दुओं व मुसलमानोंके दिलोंमें अंग्रेजोंको अपने मुल्कसे बाहर निकालनेकी ख्वाहिश पैदा कर दी है । इस पाक़ जङ्गमें शामिल होनेवाले सभी आपसमें भाई-भाई हैं । लिहाज़ा मैं अपने तमाम हिन्दी भाइयोंसे दरख़्वास्त करता हूँ कि वह ख़ुदाके बतायेहुए इस पाक़ फर्ज़को पूरा करनेको मैदाने जङ्गमें कूद पड़ें ।'

तात्त्या टोपे—हमारे लिए यह कितने बड़े सम्मानकी बात है कि भारत-सम्राट् हमें आगामी स्वाधीनता संग्राममें अग्रसर करनेके लिए स्वयं युद्धस्थलका यशस्वी पथ प्रशस्त कर रहे हैं । संसार यह देखकर स्तब्ध रह जायगा कि हममें अपनी खोई हुई स्वाधीनताकी प्राप्तिकी जिज्ञासा आज सर्वाधिक बलवती है ।

नाना साहब—नर-नाहर ! वीर-प्रसविनी भारत वसुन्धरा तुम्हारे ही समान अपनी अधिकाधिक जागरूक सन्ततिके स्वातन्त्र्य युद्ध में पदार्पण करनेकी प्रतीक्षा कर रही है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(कुछ सोचतेहुए अजीमुल्लासे) कहिये वकील साहब, तीर्थ-यात्राका प्रबन्ध तो ठीक हो चुका है न ?

अजीमुल्ला—सब तय्यारी पूरी हो चुकी है हुज़ूर ! इसे ख़ुदाका शुक्र ही समझना चाहिए, कि बिठूर, देहली, लखनऊ, कलकत्ता व सातारा, अपने इन पाँचों सदर मुकामोंसे अपने हमराही जिस मुस्तैदीसे आजादीकी लड़ाईमें बिरादराने वतनको शामिल होनेकी तम्बीहें दे रहे हैं, उसका फिरङ्गियोंको कोई सूराग तक लगनेकी गुञ्जाइश नहीं है।

नाना साहब—वकील साहब ! यद्यपि तीर्थयात्राके कार्यक्रममें बाला साहब एवं हम दोनोंका सर्वप्रथम दिल्ली चलकर भारत-सम्राट् तथा उधरके अन्य नेताओंसे आवश्यक परामर्श करना निश्चित है, तथापि मैं वाराणसी होते हुए दिल्ली पहुँचना चाहता हूँ, अतः आप अन्य स्थानोंका सरसरी तौरपर स्वयं निरीक्षण करते हुए दिल्लीमें आकर मुझसे मिलें, मैं उचित समझता हूँ कि दिल्लीके बाद अम्बाला, लखनऊ व कालपीकी यात्रा भी अत्यावश्यक होगी और अप्रैलके अन्ततक हमें यहाँ लौट भी आना है, ताकि विप्लवके समस्त केन्द्रोंको एक सूत्रमें आवद्ध करनेके बादकी आवश्यक काररवाई की जा सके।

अजीमुल्ला—हुज़ूर ! मैं भरसक कोशिशें करूँगा कि मियादके अन्दर ही सब तय्यारी पूरी हो जाय।

नाना साहब—(तात्त्या टोपेकी ओर देखते हुए) तात्त्या ! तुम्हें भी कुछ कहना है ?

तात्त्या टोपे—देव ! मैं तो आपका एक आज्ञाकारी सेवक हूँ, फिर भी यदि श्रीमन्त इस विषयमें मेरी रायका महत्त्व समझते हैं, तो इसके बारेमें मेरा यही कहना है कि दक्षिण भारत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और उसमेंसे भी महाराष्ट्रपर विशेष ध्यान दिया जाय। अपने सङ्गठन-केन्द्रोंकी संख्या जिस तीव्रगति से बढ़ रही है, उसे देखते हुए हमें निश्चित समयसे आगे बढ़ना होगा, इसके साथ ही सुरक्षाके लिए आपसी पत्र-व्यवहारके उपयोगमें आने योग्य अनेक साङ्केतिक लिपियाँ तय्यार करानी होंगी, इसके अतिरिक्त मद्रास जैसे ईसाई बहुल प्रान्तमें आज़ादीके लिए प्रेरणा देनेके हेतु प्रकाशित होने-वाली विज्ञप्तियोंके बड़ी मात्रामें वितरणके साथ ही, बड़ी-बड़ी गुप्त सभाओंकी अपेक्षा कुछ सुलझे मस्तिष्कवाले देशभक्तोंका छिटपुट विचरणकर जनताको सन्नद्ध करना आवश्यक होगा। इसके अतिरिक्त खेल-तमाशों, पावड़ों-लावनियों तथा कटपुतलियों, एवं नटों व नाटकोंको भी प्रचारके साधन बनानेमें हमें संलग्न होना पड़ेगा।

नाना साहब—तात्त्या, मैं यथाशक्ति अपने सहयोगियों द्वारा तुम्हारे विचारोंको कार्यरूपमें परिणत करानेमें कुछ उठा न रखूँगा। (अजीमुल्लाकी ओर देखते हुए) तो अब यहाँ से प्रस्थान करना चाहिए।

अजीमुल्ला—जरूर।

तान्त्या टोपे—शिवास्ते पन्थानः।

नाना साहब—(चौंककर) नेपथ्यसे यह कैसी गीत सुनाई पड़ रही है, इसे ध्यानसे सुनो।

गीत

चाहती है संसृति बलिदान !
नहीं माँगनेसे मिलता आज़ादीका वरदान।
हिमगिरि जिसका मुकुट, सिन्धु प्रहरी, सङ्घर्ष-प्रधान—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिसकी सन्ततियोंके हैं विख्यात त्याग-बलिदान,
गोरा-बादल, जयमल-पत्ता, बाजी-मुरार, चौहान–
संयुक्ता, पद्मिनि-पन्ना-कर्मा जिनमें उपमान।
बर्बरता कुशाण-शक-हूणोंकी कर लुप्त, कृपाण,–
जिस भारतकी चमकी, उससे है आश्वस्त जहान।
जभी सिकन्दर बाग मुड़ी, था सिल्यूकस हैरान,
देख परख भास्वर भारतके अव्याहत अभियान।
उस अतीतसे अनुप्राणित अबतक समष्टिगत प्राण,
भान न अपना करा सके, मझधार पड़ा जलयान।
अनियन्त्रित विदेशियोंके व्रणवत् भौतिक उत्त्थान,
मानवताकी व्याधि-आधि, बन गये विवश अभिमान।
बीती है कुहू–निशा अरुणोदयका आर्युविज्ञान,
इसे जान; तत्पर है करनेको उपयुक्त निदान।
पराधीन जीवनका भी होना है तय अवसान,
ले शस्त्रास्त्र शत्रु पर टूटो एक साथ दिन जान।

(नेपथ्यसे हर हर महादेवकी ध्वनि, सबका प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन]

द्वितीय दृश्य

स्थान—वाराणसीमें गङ्गातटपर स्थित नाना फड़नवीसके बाड़ेका एक कक्ष।

(नाना साहब ध्यानस्थ हो नेपथ्यसे होती गीत सुन रहे हैं)।

गीत

प्रलयङ्करको स्वीकार नहीं, औरोंको यह अधिकार नहीं,
इस संस्कृतियोंकी जन्मभूमिमें अनाचार खुलकर खेले !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पर निज न आज आवाज रही, हैं त्रस्त हो रहे निज चोले,
जीनेकी इच्छा व्यक्त करें तो हमपर गिरें वृटिश गोले।
जो हैं अपद्रव्य विवर्जित दृष्ट्या धार्मिक जीवनमें घोले,—
उनसे स्वदेशकी संस्कृति रोती, हम लखते श्रुति-स्मृति खोले।
हम मृग-मरीचिकामें उलझे, गन्तव्य मार्गसे चल, विचले;
दूरीकी तो कुछ बात नहीं, स्तरसे भी मानवके फिसले।
इसलिए उचित है हमें, फेंक मत-भेदोंके विषधर थैले,
स्वातन्त्र्य मार्गको अपनावें, राष्ट्रीय स्तरके साधन ले।
विजयी हों, गति वीरोंकी या प्राप्त करें असि करमें ले,
पर तेजस्वी नेतृत्व न अपने स्थलसे पलभरको विचले।
फैलाकर फूट विदेशी शासन, हममेंसे जीवन-बल ले,
घपलेमें हमें डाल नित्य प्रति, स्वार्थ-हेतु हमको कुचले,
हम अज्ञ बने इससे, कपोल-कल्पित—हित किये निजी हमले,
दे राष्ट्र स्वार्थको स्थान प्रथम वह धर्म हमें संयत कर ले।

नाना साहब—(स्वगत) इसे भगवान् विश्वनाथका वरदान ही समझना चाहिए कि अंग्रेजोंकी दारुणदासतासे विमुक्तिकी भावना जनताके हृदय-स्थलसे स्पन्दित हो रही है; क्या ही अच्छा होता, यदि जन-मानसको यथावसर उचित मार्ग-प्रदर्शनमें समर्थ उपनेता प्रचुर मात्रामें हमें उपलब्ध हो पाते। (साधारण वेशमें स्थित दो व्यक्तियोंको अपने पास आते देख, प्रकट) कौन हो भाइयो !

पहला व्यक्ति—मैं देशमें आज़ादीकी अलख जगानेवाला अंग्रेजोंका सेवा-निवृत्त एक सैनिक हूँ।

दूसरा व्यक्ति—मैं अंग्रेजोंके अनाचारोंसे लक्षपतिसे रङ्क बनाया गया एक पीड़ित जमींदार हूँ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाना साहब—आखिर तुम दोनोंका इधर कैसे आना हुआ ?

पहला व्यक्ति—सुना है कि अन्तिम पेशवा पूज्य नाना साहब इस समय यहींपर हैं।

दूसरा व्यक्ति—मेरी भी ऐसी ही धारणा है।

नाना साहब—आखिर तुमलोग उनसे किस लिए मिलना चाहते हो ?

पहला व्यक्ति—मैं स्वातन्त्र्य युद्धके सफल सैनिक होनेकी भावनासे प्रेरित हो उनसे दीक्षित होना चाहता हूँ।

दूसरा व्यक्ति—मैं भी यही चाहता हूँ।

नाना साहब—आजके प्रत्येक विवेकशील भारतीयको ऐसी ही धारणा रखनी चाहिए। अच्छा यह बताओ कि तुम लोगोंने नाना साहबको कभी देखा है ?

(दोनोंका सन्देहास्पद मुद्रामें स्थित होना)

नाना साहब—तुम दोनों नाना साहबसे ही बातें कर रहे हो।

(दोनों नाना साहबके पैरोंपर गिरते हैं एवं पेशवा इनके सरपर क्रमशः अपना दाहिना हाथ रखते हैं।)

प्रथम व्यक्ति—देव ! आप अपने अनुशासनसे मुझे अनुगृहीत करें।

दूसरा व्यक्ति—मेरी भी यही प्रार्थना है।

नाना साहब—बन्धुओ ! कोई किसीको नया ज्ञान नहीं सिखलाता अपितु उसे विस्मृत ज्ञानकी याद मात्र दिलाता है, अतः तुमसे मेरा यही कहना है कि अपने देशकी अपरिमित सम्पत्तिको बाहर जानेसे रोकनेके लिए हमें विदेशी दस्युओंसे सङ्घर्ष करना पड़ेगा। हमें अपनी भाषा, रहन-सहन, वेश-भूषा एवं भारतीय संस्कृतिके अन्य सभी स्रोतोंको विकृत न होने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देनेके लिए अपने जीवन-धनतककी बाजी लगा देनी होगी। अतः यदि हमने इसमें कुछ भी शिथिलता दिखाई, तो संसारमें हमारी उन खानाबदोश यहूदियोंसे भी बुरी गति होगी, जिन्हें सेमेतिक सभ्यताको विश्वमें दाऊदियों, ईसाइयों एवं मुसलमानोंसे बहुत पहले ही चमकानेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। भाइयो! यूनान-मिश्र एवं रोममें पहलेकी अपेक्षा आज कहीं अधिक प्राणी हैं; किन्तु ये महादेश इसलिए संसारसे मिट गये कि इनकी संस्कृतियाँ धरातलसे नष्ट हो गईं। हमारे लिए तो यह भी कम आश्चर्यकी बात नहीं है कि इस्लामकी नङ्गी तलवारें जिस भारतवर्षको अपने ६ सौ वर्षोंके बर्बर शासनमें न मिटा सकीं, निकट भविष्यमें ही वह फिरङ्गियोंकी मिठी छुरियोंकी मारोंसे नष्ट हो जाना चाहता है, इसलिए ऐसी भीषण परिस्थितिमें प्रत्येक देश-बन्धुका परम पुनीत कर्तव्य है कि आत्म-रक्षार्थ एवं भारतके रक्षार्थ स्वातन्त्र्य युद्धमें कूद पड़े।

प्रथम व्यक्ति—देव! मैं आपके अनुशासनसे अपने कर्तव्य-पथके परिष्कारमें समर्थ हुआ हूँ।

दूसरा व्यक्ति—गुरुदेव! मैं इस उपदेशको कार्यरूपमें परिणत करनेको दृढ़प्रतिज्ञ हूँ।

प्रथम व्यक्ति—(बिहार-केशरी कुँवर सिंहका पत्र नाना साहबको देते हुये) महाराज! हम आपके आदेशपर आत्माहुति देनेवाले व्यक्ति महाराज कुँवर सिंहके द्वारा आपकी सेवामें भेजे गये हैं।

नाना साहब—(पत्रको ध्यानसे देखते हुये पढ़ते हैं।) 'अंग्रेजोंके क्रीतदास किसी भी भारतीयपर उसकी परिस्थितियोंपर तनिक भी ध्यान न देकर सन्देह मात्रपर उसे जेलोंमें ठूँस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देते हैं, ऐसा तो उन्हें अपने मालिकोंकी हुकूमत क़ायम रखनेके लिये करना ही पड़ेगा, लेकिन अपनी तय्यारी पूरी न होनेतक निर्भय होते हुये भी हमें उनकी चपेटोंसे तो बचना ही होगा। आज देशको विवेक-युक्त वीरत्वकी सर्वाधिक आवश्यकता है'। (विचारमग्न रहने के बाद दोनों व्यक्तियोंसे) इस पत्रके उत्तरमें बिहार केशरीकी सेवामें मेरी ओरसे निवेदन करना कि उचित अवसर आनेपर वे अपने बहुसंख्यक अनुयायियोंके साथ फिरङ्गियोंसे गुरिल्ला युद्धको सन्नद्ध रहें। इससे अतिरिक्त महाराज कुँवर सिंहसे निवेदन करना कि वे सदैव मुझसे निकट सम्पर्क बनाये रखें।

(नाना साहबको अभिवादन करते हुये दोनों व्यक्तियोंका प्रस्थान)

नाना साहब—(जाह्नवीकी ओर ध्यानसे देखते हुये) काशी-तलक वाहिनी सुरसरित्का दृश्य कैसा शान्तिमय है, इसीसे तो यहाँका वातावरण जनमानसको शान्तिप्रधान संन्यास-की ओर अग्रसर करता है। इसीलिए तो 'येषां क्वाऽपि गति-र्नास्ति, तेषां वाराणसी गतिः' की उक्ति यहाँ चरितार्थ होती है। लेकिन मेरे लिये सम्भवतः विश्वनाथका ऐसा विधान नहीं है। मेरे भाग्यमें तो निष्क्रिय संन्यासकी अपेक्षा निष्काम भावसे सङ्घर्षरत हो मातृभूमिकी बेड़ियाँ काटनेके हेतु आत्मसमर्पण ही श्रेयस्कर समझा गया है। (एक गैरिक वस्त्रधारी व्यक्तिको अपने पास आते देख, प्रकट) आप कौन हैं ?

साधु—कोकणस्थ ब्राह्मण-परिवारमें उत्पन्न एक मानव ! मैंने घरकी सम्पत्तिकी समाप्तिके साथ ही पारिवारिक विपदासे व्यथित हो यहाँ आकर प्रव्रज्या ग्रहण कर ली है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाना साहब—आजकी परिस्थितिमें निष्क्रिय संन्यासकी अपेक्षा देशकी हित-साधनामें सक्रिय हो, गृहस्थाश्रममें समाविष्ट होनेकी सर्वाधिक आवश्यकता है। बालाजी जनार्दन भानु भी कोकणस्थ ब्राह्मण परिवारमें उत्पन्न हुए थे, और इतिहास इसका साक्षी है कि आपके ही समान समस्यायें उनके सामने भी मुँह बाये खड़ी थीं, लेकिन उन्होंने ऐसे संन्यास-से विरत हो नाना फड़नवीसके रूपमें परिवर्तित हो पूनाके माध्यमसे राष्ट्रके प्रति अपना जैसा कर्त्तव्य पालन किया, वह हमारे लिए प्रेरणास्रोत बनकर चिरञ्जीवी है।

साधु—'भिन्नरुचिर्हि लोकः' यह कहावत चिरकालसे चली आ रही है।

नाना साहब—विभिन्न रुचिके व्यक्ति राष्ट्रिय अभ्युदयके साधक होकर ही जीवित रह सकते हैं न कि बाधक होकर, अगर ऐसे व्यक्ति बलात् जीवित रहनेकी चेष्टा करेंगे, तो प्रकृति स्वयं उन्हें नष्ट हो जानेको बाध्य कर देगी, क्योंकि आज जबकि राष्ट्रके जीवन-मरणकी सांस्कृतिक समस्या हमारे सामने है, तो स्वयं अपने बचावके लिए ही हमें साधनोंमें भिन्नताके बावजूद साध्यमें एकनिष्ठ होना आवश्यक है। आज हमारा साध्य देशसे विदेशी शासनको हटाकर यहाँ लोकमाङ्गलिक स्वशासनकी स्थापना है और इसकी संसिद्धि-के लिए भारतीयोंके अन्तरालमें विलीन विद्रोहाग्निको प्रज्वलित करना है। अवश्य ही इसके लिये अनेक साधन हो सकते हैं। मेरी समझसे तो व्यक्तिगत स्वार्थोंसे ऊपर उठे आप जैसे महामानव इस दिशामें किसी विशिष्ट साधनके साथ बड़ी सुगमतासे अग्रसर हो सकते हैं!

साधु—वेशके बदलनेसे राष्ट्रियता नहीं बदलती, एवं सम्राट्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अशोक व कनिष्क जैसी धार्मिक उदारता होनेसे विभिन्न धर्मावलंबन बाधक न होकर राष्ट्रियताके साधक हो जाते हैं। अतः इस देशमें रहते हुए भी हम राष्ट्रके प्रति अपने कर्त्तव्य-को यथाशक्ति निभायेंगे, किन्तु 'अभयम्मित्रादभयममित्रात्' इस वैदिक आदर्शपर भी आपने कभी विचार किया है। जहाँ तक मेरी धारणा है, आज अमित्रोंसे पहले मित्रोंसे अभय होनेकी जितनी आवश्यकता है, इससे पहले शायद ही कभी रही हो।

नाना साहब—इस आदर्श सिद्धान्तसे स्वाधीनता-संग्रामके सैनिक अपरिचित नही हैं, किन्तु इतने बड़े राष्ट्रकी स्वाधी-नताके लिये 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' का आदर्श ही उक्त सिद्धान्तके प्रत्याख्यानके लिए यथार्थ प्रतीत होता है, क्योंकि परिस्थितियाँ हमें ऐसा ही समझनेको वाध्य कर रही हैं।

साधु—संन्यासका प्रतीक हमें सदासे इसी आदर्शकी ओर आकृष्ट करता रहा है।

नाना साहब—तो हम चाहे किसी भी आश्रममें अवस्थित हों, एक ही पथके पथिक हैं।

साधु—अवश्य, विदेशी आक्रमणकारीके लिए गृहस्थ और संन्यासीमें कोई अन्तर नहीं। यही नहीं, हिन्दू या मुसल-मान तकमें भी कोई अन्तर नहीं है।

नाना साहब—हमारा सङ्गठन भी इसी आदर्शपर दृढ़ है। (नेपथ्यसे कोलाहल सुनाई पड़ते ही साधुका प्रस्थान, एवं नाना साहबके ध्यानावस्थित होते ही सहसा आवाज आती है, एवं एक व्यक्ति सम्मुख दीखता है।)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गाज़ियोंमें बू रहेगी जब तलक ईमानकी,
तख़्ते लन्दन तक चलेगी तेग़ हिन्दुस्तानकी।

नाना साहब—(चौंककर) तुम कौन हो भाई ?

आगन्तुक—देव ! मैं प्रयागका निवासी एक भूतपूर्व राजपूत सैनिक हूँ, एवं अपने नेता मौलवी लियाकतअलीके द्वारा मौखिक सन्देश लेकर आपकी पुनीत सेवामें उपस्थित हुआ हूँ, धृष्टता क्षम्य हो।

नाना साहब—बन्धुवर ! सैनिक सैनिकके पास बेरोक-टोक न आयगा, तो फिर और किसके पास जायगा ? इसमें धृष्टता-की कौन सी बात है ? अच्छा कह सुनाओ, मौलाना साहब-का मेरे लिए क्या सन्देश है ?

आगन्तुक—आपकी पुनीत सेवामें मौलवी साहबका निवेदन है कि वे अपने सहयोगियोंकी सहायतासे इस समय ऐसी स्थितिमें पहुँच चुके हैं, जहाँसे प्रयागका मोर्चा भली-भाँति सँभाल सकें और केवल यहीं तक नहीं, अपितु वे फिर-ङ्गियोंसे प्रयागमें निर्णायक युद्धका सञ्चालन करनेमें भी क्षम हो सकते हैं, यदि श्रीमन्त सिखोंको फिरङ्गियोंसे बरगलानेमें समर्थ हो सकें।

नाना साहब—मातृभूमिके सपूत ! हमारे विश्वस्त सहयोगी अहर्निश् इस प्रयत्नमें लगे हैं कि चाहे जैसे हो, सिख सैनिकोंको ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण पञ्चनद प्रदेशको फिरङ्गि-योंसे विरुद्ध आचरण करनेको तय्यार किया जाय; और तो और, स्वयं भारत-सम्राट् तक इसके लिए एड़ीचोटी तकके पसीने एक कर रहे हैं, लेकिन किया क्या जाय, अबतकके इस सम्बन्धमें किये-गये अपने सम्पूर्ण प्रयत्न व्यर्थ हो गये

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं। पता नहीं धर्म-विध्वंसक इन फिरङ्गियोंका ऐसा कौनसा जादू श्रीगुरु गोविन्दसिंहजीके इन वन्दोंके ऊपर चल गया है, जिसके सामने अपनी तमाम कोशिशें बेकार होती चली जा रही हैं।

आगन्तुक--देव ! आप ऐसी धारणा रखते हैं, कि जिन महाराज रणजीतसिंहने सिख जातिको सैनिकोंका आधुनिक कलेवर प्रदान किया, उन्हींके पुत्र दिलीपसिंहको जबरन् ईसाई बनानेवाले फिरङ्गियोंसे बदला लेनेकी भावना क्या अमृतपुत्र इन सिखोंके अन्तरालोंसे सदाके लिये लुप्त ही हो जायेगी ? मुझे तो इनसे ऐसी आशा नहीं है।

नाना साहब--बहादुर ! मानव समाजके ऐसे अधः पतनका दृश्य भारतको छोड़ शायद ही कहीं अन्यत्र देखनेको मिला हो। सिख-सम्प्रदायको सैनिक कलेवरमें पहले पहल परिणत करनेवाले स्वरूपावस्थित श्रीगुरु गोविन्दसिंहजी अपने अनुयायियोंके इस राष्ट्र-द्रोही कार्यको देख क्या सोचते होंगे ? राष्ट्रके वरदपुत्र ! प्रतापका राजस्थान आज सो रहा है, शिवाका महाराष्ट्र अँगड़ाइयाँ ले रहा है, फिर भी भारतीय महाराष्ट्रकी इससे कोई क्षति नहीं होनेवाली है, किन्तु वीरचेता हरिसिंह नलुवाका पञ्जाब प्रदेश एवं उसका हृदय सिख-सम्प्रदाय, समथ होते हुये भी, जो आज शत्रुके शिविरमें चला गया है, उसपर गम्भीरता-पूर्वक विचार करनेपर मैं तो इसी निर्णयपर पहुँचता हूँ कि जिस प्रकार आत्म-रक्षार्थ शरीरके किसी विकृताङ्गका नष्ट हो जाना ही श्रेयस्कर होता है, वैसे ही राष्ट्रके रक्षार्थ ऐसे विद्रोही समुदायका मिट जाना ही उचित होगा। हा ! जिस सम्प्रदायने अपने त्याग एवं बलिदानोंसे रावीको रक्तरञ्जित कर दिया, क्षणिक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वार्थके वशीभूत होकर आज वही मातृभूमिकी बेड़ियाँ कड़ी करनेमें प्रवृत्त हो रहा है।

आगन्तुक—देव ! इसके लिए अपने राष्ट्रके विकृत चरित्रको छोड़ और किसे दोषी बनाया जाय। ऐसी दशामें मैं तो आपसे यही आग्रह करूँगा कि आप मौलवी साहबको उनके समाधानार्थ उचित सन्देश दें।

नाना साहब—बहादुर ! मेरी ओरसे जाकर मौलवी लियाक़तअलीसे यही कहना कि हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी शक्तिपर निर्भर रहकर यथावसर फिरङ्गियोंका डटकर मुक़ाबला करें। हम भारत-सम्राट् दिल्लीश्वरकी प्रजा हैं और उन्हींके आदेशपर अपने राष्ट्रके युद्धरत सैनिक बने हैं, अतः यदि हमारे सम्राट्ने परमात्माके सम्मुख सच्ची लगनसे हमारी प्रार्थना अपने माध्यमसे पहुँचाई है तो हम अवश्यमेव सफल होंगे। हमें इसकी कोई भी परवाह नहीं है कि हमारे सम्मुख शत्रु-पक्षसे कौन कौन खड़े हैं। हम तो इस सम्बन्धमें यही उचित समझते हैं कि अनावश्यक बातोंमें उलझ अपनेको विकृत-मस्तिष्क न होने दें। हाँ, मौलवी साहबसे त्रिवेणीकी याद दिलाते हुए यह भी कहना कि हम जिस प्रकार अपने सैनिक मोर्चेके प्रति जागरूक रहें, उसी प्रकार राजनीतिक मोर्चेपर भी और परिस्थितिके अनुसार अधिकारके हस्तगत होनेपर प्राशासनिक मोर्चेके प्रति भी। अभीसे यह हिदायत करनेके लिए मुझे इसलिए आवश्यकता पड़ रही है कि युद्धके दौरान सम्बन्ध-विच्छेदकी सम्भावना बढ़ जाती है।

(आगन्तुकका सविनय प्रस्थान)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाना साहब—(स्वगत) गङ्गा-तटके इस सान्ध्य वातावरणकी शान्तिमें अन्तर्दाहका ज्वालामुखी कब फूट पड़ेगा, कहा नहीं जा सकता। भारत एक विशाल देश है, कौन जाने निश्चित समयसे पहले ही कोई पटाखेबाजी करके अंग्रेजोंको होशियार हो जानेका अवसर न दे दे।

(सहसा नेपथ्यसे गीत सुनाई पड़ते ही उधर ही पेशवाका ध्यान आकर्षित हो जाता है।)

गीत

सार्थक प्राकृत सन्ध्या भी है, स्वान्तस्थ ज्योति यदि लख पावें,
तिमिरावृत आशा-किरण लखें, यदि दिव्य-दृष्टि अपना पावें।
उत्थान-पतनकी दौड़-धूपमें भ्रमवश विपथ न अपनावें,
तो सैनिक-जीवनकी सार्थकताका आलिङ्गन कर पावें।
जीवन-सन्ध्यामें विचरण करता है सैनिक, पर वास्तवमें—
है, अमृत-तत्त्व क्षण-क्षण बिखेरता राष्ट्र-सांस्कृतिक जीवनमें।
होता है राष्ट्र चिरञ्जीवी बलिदानी गाथा संबल ले,
ज्योतिष्पथ ज्योनिर्मय है योगीकल्प हुतात्मा-वर्चस् ले।

(घण्टेकी ध्वनि सुनते ही नाना साहबका प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन]

तृतीय दृश्य

स्थान—दिल्लीके लालक़िलेमें सम्राट् बहादुरशाह 'ज़फ़र'का विश्राम-कक्ष।

बादशाह—(स्वगत) ख़ुदा जिनसे मुहब्बत करता है, उन्हें आजमानेके लिए ज़ुल्म ढालेवालोंको उनके पीछे पीछे दौड़ाता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं, फिर भी अल्लाहताला अपने ऐसे बन्दोंको उनसे ऐसी हिक़मतोंसे महफ़ूज़ रखता है, जो रश्कें जहाँ हो जाती हैं। बज़रिये बदतरीन अहमक़ क़ुरैशियों क़ाबा शरीफ़से खदेड़े जाते हुए रसूल अल्लाह व उनके हमराही खलीफ़ा अबूबकर सिद्दीक़की मकड़ीके जालेके ज़रिये हुई हिफ़ाज़त इसकी बेमिशाल नज़ीर है।(मलकाये हिन्द ज़ीनत महलको सामने आती देख, प्रकट) ज़ीनत ! मैं भी कैसी अजीब क़िस्मतका इन्सान हूँ। अगर मेरी मनहूस हालातपर ग़ौर किया जाय तो मैं दग़ाबाज़ अंग्रेजोंके एक सफेदपोश क़ैदीके सिवा और कुछ नहीं हूँ, लेकिन जब मैं आज़ादीके दीवानोंकी ज़बानोंसे बार-बार निकलनेवाले 'शाहनशाहे हिन्द ग़ाज़ी जिन्दाबाद' के धरती व आसमानको गुँजा देनेवाले नारोंपर ग़ौर करता हूँ, तो यही महसूस कर दिल मसोसते रह जाता हूँ कि क्या 'ज़फ़र' उसी तैमूरी नस्लमें पैदा हुआ है, जिसमें बाबर व हुमायूँ, अकबर व जहाँगीर, शाहजहाँ व औरङ्गज़ेब जैसे दुनियाँकी बेढङ्गी रफ़्तारको बदल देनेवाले शाहनशाहान वारिद हुये थे। ज़ीनत ! जिस रब्बेजलीलकी इनायतसे आनन-फाननमें गदासे शाह हुआ करते हैं क्या वह फ़ैय्याज़ ख़ुदा ज़फ़रको ज़फ़रके मौरूसी हक़का मुश्तहक़ बनानेकी मेहर अता नहीं कर सकता ?

ज़ीनत महल—ग़मग़ीन न हों बादशाह सलामत ! मुमकिन है दुनियाँकी तवारीखसे और मुग़ल बादशाहोंके नामों-निशान तक मिट जायँ, मगर 'ज़फ़र' की शकलमें आप उसके दिलो-दिमाग़पर अर्सा दराज़तक काबिज़ रहेंगे। लेकिन एक शायरसे भी बढ़कर जो एक आला इन्सानका दर्जा है उसकी शकलमें तो आप सिर्फ़ तवारीख़ ही नहीं, बल्कि धरती व आस-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मानके ज़िगरपर मानिन्द दाराशिकोहके रोज़े हश्र तककी ख़ातिर कायम बदस्तूर रहेंगे।

बादशाह—कह नहीं सकता कि मेरी आक़बतमें क्या बदा है, लेकिन इतनी बात तो ज़रूर है कि चाहे मेरे एक राजपूतनी-की औलाद होनेसे या और भी किन्हीं बजहोंसे हो, मेरे वफ़ादारोंमें अपनी दरियादिलीसे रश्केजहाँ हिन्दुओंकी तादाद मुसलमानोंसे कई गुना ज्यादा है, लिहाज़ा अगर अपने ही शाहजादों व अपनेको हमेशा घेरे रहनेवालोंने मेरी नाक़िस अक़्लको धोखा न दिया, तो सिराजुद्दीन मुहम्मद बहादुरशाह 'ज़फ़र' हिन्दुस्तानका वह बादशाह होगा, जिसके दरबारमें दुनियाँकी न सही, लेकिन समूचे मुल्ककी रूह तो ज़रूर ही खुलकर बोलेगी। ज़ीनत, मैं तुमसे सच कहता हूँ कि अगर ख़ुदाकी मर्ज़ी हुई तो मुल्कको दाराशिकोहसे जो उम्मीद थी, वह मुकम्मल तौरपर पूरी होकर रहेगी।

(सहसा एक दासीका सामने आकर
बादशाहको कोर्निश करना।)

बादशाह—क्या बात है ?

दासी—जहाँपनाह ! एक सौदागर शाही ख़िदमतमें हाज़िर होना चाहता है।

ज़ीनत महल—क्या वह कोई क़ीमती तोहफ़ा तो आलीजाहकी ख़िदमतमें नज़र करनेकी खातिर यहाँ नहीं आया है ?

दासी—मलकाये आज़म ! उसके रङ्ग-ढङ्गसे तो कोई ऐसी बात नज़र नहीं आती। खासतौरपर उसका लिबास तो बिलकुल यतीमों जैसा है।

बादशाह—जानती हो, लाल गुदड़ियोंमें ही छिपे रहते हैं, वर्ना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

म्यानोंको उनके लिए हमेशाकी ख़ातिर तलवारोंसे अलहिदा हो जाना पड़े ! तुम्हें मालूम होना चाहिए कि कभी क़ीमियाके मैदानमें अंग्रेजोंकी खिदमत करनेवाले सैयद अजीजुल्ला व ताज़िन्दगी आज़ादीकी अलख जगानेवाले गुजराती पं० रुद्रदत्तके साथी महावीर जैसे इन्सानतक यतीमोंके जैसे लिबासोंसे पोशीदा होकर ही हमारे काम कर रहे हैं।

ज़ीनत महल—तो क्या ऐसे इन्सानको तरजीह देनेकी ख़ातिर ज़ीनतको यहाँसे रुखसत लेनी होगी, बादशाह सलामत ?

बादशाह—ज़रूर !

ज़ीनत महल—क्या अवाम शाहनशाहे हिन्दके आरामगाहमें भी जब कभी चाहें आ-जा सकते हैं ?

बादशाह—वे इसलिए और भी आसानीसे यहाँ आ-जा सकते हैं, कि शाहनशाहे 'ज़फ़र'की हुक़ूमत यहाँकी धरती व आसमानके किसी टुकड़ेपर क़ायम न होकर हरएक हिन्दोस्तानीके दिलोदिमाग़पर क़ाबिज़ है।

ज़ीनतमहल—कौन जाने बदली हुई शकलमें दुश्मनका कोई भेदिया ही न यहाँ आ रहा हो ? जहाँपनाह इसे बख़बी समझ लें कि इस क़दरकी जानकर की गई ग़लती सीधे अपनी मौत तकको अपने पास बुला लेती है।

बादशाह—ज़ीनत ! ख़ुदाकी शानपर ईमान लानेवाली तैमूरी औलाद इस क़दरकी मुसीबतोंसे नहीं डरा करती, मुझे इस मामलेके मुतल्लिक तुमसे इससे ज्यादा और कुछ नहीं कहना है।

(ज़ीनतमहलका प्रस्थान)

बादशाह—(कुछ सोचते हुए, दासीसे) देखो जाकर उस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सौदागरसे इत्तला करो कि वह बाइज्जत यहाँ हाज़िर हो सकता है।

दासी—जैसा हुक्म। (प्रस्थान)

बादशाह—(स्वगत) या ख़ुदा ! मैं तेरी इनायतसे एक शायर-का जिगर तो ज़रूर पाया हूँ, मगर मुझमें वह ख़ामी तो रह ही गई है, जो इन्सानको उसकी असली शकलमें मिलने देनेसे मुझे रोकती है, या परवरदिगार ! मुझमें वह रूहानी क़ूवत अताकर, जिसकी बदौलत मैं किसी भी मामलेमें असलियत तक पहुँचनेमें कामयाब हो सकूँ। (ताज़ीम करते हुये अजीमुल्लाको सामने देखकर, साश्चर्य) बैठो अजी-मुल्ला कहो क्या रङ्ग-ढङ्ग है ?

अजीमुल्ला—जहाँपनाह ! ग़र्चें हुज़ूरे आलीके ख़ानदानी वक़ील उलमुल्क़ नाना साहबका हिन्दोस्तानका तयशुदा दौरा तो अभी शुरू ही हुआ है, फिर भी 'पयामे आज़दी'में साया हुये आलीजाहके फ़रमानोंकी तामीलकी ख़ातिर सरफ़रोसी-की तमन्ना लिये बिरादरे वतन उस दिनका मुस्तैदींसे इन्तज़ार कर रहे हैं, जिसदिन हम उन दग़ाबाज़ फिर-ङ्गियोंसे प्लासीकी धोख़ेबाजीका बदला उन्हें सात समुन्दर पार भेजकर लेंगे। जो ग़द्दार अभी हाल तक अपनेको आली-जाहके वफ़ादार फ़िद्वी कहनेमें अपनी इज्जत महसूस करते थे, उनके सातवें आसमानपर चढ़े दिमाग़के पारेको जमीं-दोज़ करके ही अब हम दम लेंगे।

बादशाह—इन्शाअल्लाह, अज़ीमुल्ला ! 'ज़फ़र' यह महसूस करता है कि चाहे 'पयामे आज़ादी'में हो या और कहीं भी हो; शाही फ़रमानके नामसे मुल्क़के फ़र्ज़न्दगानको जङ्ग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आज़ादीमें शामिल होनेकी तम्बीह देनेकी ख़ातिर भले ही किसीके भी ज़रिये जुमले साया किये जाते हों, लेकिन उनमें 'ज़फ़र' ही नहीं, बल्कि पूरे हिन्दोस्तानकी रूह बोलती है। आज मेरी उम्र इक्यासीके करीब पहुँच रही है, इसलिये मेरे दिमाग़में सियासती मामलातको सुलझानेकी समायत बाकी नहीं रह गई है, ऐसी हालतमें बेहतर तो यही होगा, कि मैं मानिन्द एक वफ़ादार सिपाहीके लड़ता हुआ जङ्गे आज़ादी के पहले शहीद होनेका मर्तबा हासिल करूँ।

अजीमुल्ला—आलीजाह! आज़ादीकी ख़ातिर हुज़ूरे आलाकी शहादत भले ही शाही मर्तबेको बढ़ानेमें किसी हद तक कारगर हो, मगर इतनी बड़ी कुर्बानीका अञ्जाम यह होगा कि जङ्गे आज़ादीका कोई भी दिमाग़दार सिपाही किसी भी नये इन्सानकी सदारत पसन्द न कर सकेगा। जिससे सब किये-करायेपर पानी फिर जायगा। हुज़ूरे आली, क्या यह बात सच नहीं है कि नया लहू तलवारकी चमकती धारमें ही अक्सर कामयाबीके तुख़्मकी तलाश करनेका आदी हुआ करता है।

बादशाह—किसी हदतक तुम्हारी बातें सही हैं, फिर भी तुम्हें यह हर्गिज़ न भूलना चाहिये कि वह इन्सान सल्तनत तो क्या, किसी अदने मुहक़मे तकके बानी होनेका भी मुश्तहक़ नहीं हो सकता जो दिमाग़का रोगी हो, और इसके साथ ही मुसीबतोंसे ख़ौफ खाता हो।

अजीमुल्ला—सच्ची बात कहनेके लिये ख़ता माफ़ हो ज़िल्ले इलाही! हिन्दोस्तानके बाशिन्दगान न तो आलीजाहको दिमाग़का रोगी समझते हैं और न तो मुसीबतोंसे खौफ़-खानेवाला इन्सान ही महसूस करते हैं, बल्कि हर एक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हिन्दोस्तानी चाहे वह भले ही किसी भी फ़िर्केका हो, यही महसूस करता है कि सिवा खुदावन्दके समूचे मुल्कमें और कोई भी ऐसी अजीमुश्शान हस्ती नहीं है, जिसके नामपर एक झण्डेके नीचे जङ्गे आज़ादीकी ख़ातिर समूचे मुल्कको खड़ा किया जा सके। मैं मानता हूँ कि देशमें गद्दारोंकी कमी नहीं है, लेकिन यहाँ ऐसे अपाहिजोंकी परवाह ही कौन करने-वाला है? आज ऐसे लोग भले ही हमारे दुश्मनोंके रिश्ते-दारान बनकर अपनी गोटियाँ लाल करलें, लेकिन क़यामत के रोज़ इन्हें अपने कारनामोंकी ऐसी सख्त् सजायें मिलेगीं, जिन्हें देख देखकर धरती व आसमान तक थर्रा उठेंगे, इसके सिवा मुल्कमें आगे आनेवाली, औलादें इन बदतरीन अहमक् इन्सानों या हैवानोंके नामोंपर नफ़रतके साथ थूकेगी। क्योंकि हमेशासे ऐसा ही होता आया है।

बादशाह—अज़ीमुल्ला! तुम्हारी बातोंमें सच्चाई है, लेकिन मेरा दिमाग़ बड़ी दूर तककी सोच रहा है। तुम बज़रिये तवारीख़ यह तो जानते ही होगे, कि बादशाह बाबर बाहरी हमलावर होकर हिन्दोस्तानमें आये थे और उनकी खुश-क़िस्मतीने उन्हें हिन्दोस्तानके तख्त्पर रौनक अफ़रोज़कर दिया, इसके सिवा तुम यह भी देख रहे हो कि उन्हींके तख्त्पर मानिन्द बुझते हुये चिराग़के बैठा हुआ, ज़फ़र उन्हीं के नस्लका होते हुए भी बिलायती न समझा जाकर हर एक मानीमें हिन्दोस्तानी महसूस किया जा रहा है।

अजीमुल्ला—इसमें जरासी भी शको-सुबहेकी गुञ्जाइश नहीं है जहाँपनाह!

बादशाह—लेकिन अगर बादशाह बाबरसे लेकर 'ज़फ़र' तकके मुगल बादशाहोंके कारनामोंके लेखे-जोखे लिये जायँ, तो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुतेरी इनकी अच्छाइयाँ भी मानिन्द तस्वीरोंके हिन्दोस्तानियोंके सामने आकर नाचने लगेंगी और बहुत सी बुराइयाँ भी !

अजीमुल्ला—मेरी समझमें यह नहीं आता, कि गड़े मुर्दोंको उखाड़ने से क्या होने जानेवाला है हुज़ूरे आला !

बादशाह—अज़ीमुल्ला, मेरे कहनेकी ग़रज यह है कि मैं अगर मानिन्द एक सिपाहीके हाथमें शमशीर लिये जङ्गे आजादीमें शहीद होकर हिन्दोस्तानकी मिट्टीमें मिल जाता, तो कमसे कम आगे आनेवाली औलाद यह तो महसूस कर पाती, कि सल्तनते मुग़लिया दुनियाँसे मिट तो ज़रूर ही गई मगर मुल्कके नमककी हलालीके साथ। रह गई मेरी पहली शहादतकी हिन्दोस्तानियोंकी नामञ्ज़ूरीकी बात; इसके मुतल्लिक तुमसे मेरा यही कहना है कि किसीके रहने या न रहनेसे मुल्कका काम हर्गिज़ रुकनेवाला नहीं है। अजीमुल्ला ! तुम यकीन रखो, जिस रब्बेजलीलने हममें आज़ादी की तमन्ना पैदा की है, वही फ़ैयाज़ खुदा 'ज़फ़र' की शहादतके बाद इससे बढ़कर इन्सानोंको जङ्गे अज़ादीकी बागडोर सँभालनेकी ख़ातिर हिन्दोस्तान अता करेगा। तुम इसे अच्छी तरहसे समझ लो कि आज़ादीकी गाड़ी अब रुकनेवाली नहीं है।

अज़ीमुल्ला—बादशाह सलामत.................

बादशाह—अज़ीमुल्ला ! आज न अपने पास ज़मीनका कोई टुकड़ा है, न अपनी कोई फ़ौज है और न तो अपना खजाना ही है; ऐसी हालतमें मैं बादशाह किस बातका हूँ ? हाँ, इतनी बात ज़रूर है कि मैं तुम हिन्दोस्तानियोंके दिलो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिमाग़पर क़ाबिज़ हूँ, लिहाज़ा तुम चाहे जिस किसी भी मर्तबेसे मुझे अपनी याददाश्तपर रखो।

अज़ीमुल्ला—आलीजाह, इसे महसूस करते हुए भी आपकी खिदमतमें मेरी अर्ज़ है कि आप मुल्ककी बदलती हुई हालातसे चश्मपोशी न करें। अंग्रेजोंके जुल्मोंसे हम आज़िज़ आ गये हैं। अगर लातोंकी मार सहते-सहते धूल सरपर चढ़ सकती हैं, तो हम तो फिर अक्लमन्द इन्सान हैं। आप यक़ीन रखें कि आज़ादीके दीवाने बातकी बातमें अंग्रेजोंके खजाने लूटकर शाही खजाने भर देंगे; अपने साथ ही क़ैदियोंको जेलोंसे बाहर निकालकर शाही लश्करोंकी ताक़त बढ़ावेंगे। इसके सिवा चपाती व कमलके फूलोंकी करामातोंसे अंग्रेजी फ़ौजोंके अस्सी फ़ीसदी सिपाहियोंको ऐन मौक़ेपर अपने हरे झण्डेके नीचे लाकर खड़े कर देनेका एलान हमारे दिमाग़दार सिपाहियोंने ताल ठोंककर कर दिया है। झाँसीकी रानी लक्ष्मीबाई व लखनऊकी बेगम हज़रत महल जैसी बहादुर औरतों तकने जब हिन्दोस्तानसे अंग्रेजी अमलदारीको नेश्तनाबूद कर डालनेकी क़सम खा ली है, तब तो इसमें शको-सुबहेकी कोई गुञ्जाइश ही नहीं रह जाती कि ख़ुदाकी फ़ज़लसे हिन्दोस्तानियोंके सामने वह दिन जल्द ही आनेवाला है, जिसदिन अपनी ही ज़मीं और अपना ही आसमाँ होगा! आजका हर एक हिन्दोस्तानी 'ख़ल्क खुदाकी मुल्क बादशाहका' डंकेकी चोटपर कह रहा है।

बादशाह—अज़ीमुल्ला! ऐसा अगर होकर रहनेवाला है तो तुम जैसोंके ख़्यालसे; तुम्हें यह न भूलना चाहिए कि 'ज़फ़र' एक शायर है लिहाज़ा जंगे आज़ादीके अञ्जामको जानते हुए भी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उतावलेपनमें आकर 'इसने हिन्दोस्तानियोंकी सदारत नहीं क़बूल की है, बल्कि औरङ्गज़ेब जैसे मुग़ल बादशाहोंके काले धब्बोंको मिटा डालनेकी ग़रज़से इसने कुर्बानीका यह रास्ता अख़्तियार किया है। तुम इन नज़्मोंपर ठण्डे दिमाग़से गौर करो।

एतबारेसब्रो-ताक़त ख़ाक मैं रखूँ 'ज़फ़र'
फ़ौजे हिन्दुस्तानने कब साथ टीपूका दिया।
ऐ 'ज़फ़र' अब है तुझीतक इन्तज़ामे सल्तनत,
बाद तेरे न वलीअहदी न नामे सल्तनत।

अज़ीमुल्ला—यह कहावत बड़ी पुरानी है कि देहली किसीकी नहीं रही है। फिर भी आलीजाह जब एक शायर होनेकी सबबसे जङ्गे आज़ादीकी नाकामयाबीकी बात जान सकते हैं, तो कामयाबीके तरीक़ोंको भी तो आसानीसे समझ सकते हैं ?

बादशाह—इसके मुतल्लिक़ मेरा यही कलाम है कि देहलीमें पेशवा नाना साहब मय अपने हमराहियोंके दाख़िल हो ही चुके हैं और जल्द से जल्द यहाँ अंग्रेजोंके ख़िलाफ होनेवाली बग़ावतके सिलसिलेमें बड़े पैमानेपर जो बातचीत चलनेवाली है, उसके दौरान मैं अपनी ओरसे अर्ज़ करूँगा कि बक़सरत रायसे कोई ऐसा इन्सान चुना जाय जो समूचे हिन्दोस्तानकी जङ्गे आज़ादीकी नकेल अपने हाथमें रखनेमें चुश्त व चालाक हो और इसके सिलसिलेमें मैं पेशवा नाना साहबका नाम सबके आगे रखूँगा।

अज़ीमुल्ला—लेकिन मैं पेशवा नाना साहबके वकील की हैसियतसे जहाँपनाहकी ख़िदमतमें अर्ज़ करूँगा कि पेशवा साहब इसे मञ्ज़ूर न करेंगे। अलीजाहको मालूम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होना चाहिए कि महादजी सिन्धियाने पेशवा सवाई माधवरावको जबसे मुग़लदरबारका वकील उलमुल्क बनाया, तबसे आजतक उनके मूरिसान अपनेको देहली दरबारके मुतल्लिक समझाते आ रहे हैं लिहाज़ा खुदाको जो मंज़ूर है वह भले ही होकर रहे, लेकिन कांटोंके ताजको हुजूरे अलाके सिवा पेशवा ही नहीं और कोई भी हिन्दोस्तानको औलाद आज सँभालनेको नहीं तय्यार की जा सकेगी।

बादशाह—(सहसा 'शाहनशाहे हिन्द ग़ाजी ज़िन्दाबाद व खल्क़ ख़ुदाकी राज बादशाहका' आदिकी आवाजें सुनते ही चौंककर) अजीमुल्ला! इस समय यह कैसी आवाज़ सुनाई पड़ रही है।

अजीमुल्ला—जहाँपनाह! जान पड़ता है कि पेशवा नाना साहब व उनके हिन्दोस्तानके कोने-कोनेमें फैले हुए हमराही देहलीमें दाख़िल हो चुके हैं, इसीकी ख़बर अलीजाह तक पहुँचानेकी गरज़से हुज़ूरकी रियायाके अगुवा किलेके सामने आना चाहते हैं, लिहाज़ा मैं भी जाकर उनमें मिल जाना ज़रूरी समझता हूँ। आलीजाह व मिहरबानी इसकी ख़ातिर इज़ाजत दें।

बादशाह—बख़ुशी जा सकते हो।

अजीमुल्ला—जैसा हुक्म। (सविनय प्रस्थान)

बादशाह—(स्वगत) मुल्कके बाशिन्दगानने जिस कदर जफ़रको सरपर चढ़ा रखा है उसे देखते हुए तो अनायास ही ज़बानसे निकल पड़ता है कि 'अभी तो चैनसे कटती है आक़बतकी ख़ुदा जाने'। (नेपथ्यसे बार-बार 'ख़ल्क़ ख़ुदाकी राज बादशाहका, 'शाहनशाह हिन्द गाजी ज़िन्दाबाद'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आदिकी गगनभेदी ध्वनि सुनते ही ज्योंही बादशाह झरोखेसे जनताको दर्शन देनेके लिये अपने आराम-गाहसे बाहर आते हैं, त्योंही शाहनशाहे हिन्द ग़ाज़ी ज़िन्दाबाद, हम पलासीकी दग़ाबाजीका फिरङ्गियोंसे बदला लेंगे। 'इनक़लाब ज़िन्दाबाद'के आदिके नारोंसे आसमान गूँज उठता है। इतनेमें ही घण्टेकी ध्वनि होनेसे नमाज़के लिये बादशाहके सामनेसे हटते ही जनता शान्त भावसे लाल क़िलेके पाससे प्रस्थान करती है।)

[पट-परिवर्तन]

चतुर्थ दृश्य

स्थान—झाँसी नगरके समीपके एक विस्तृत उद्यानकी कुटीर।

(रानी लक्ष्मीबाई तथा सेनापति तात्त्या टोपे परस्पर विचार-विमर्श करते हुए दृष्टिगोचर हो रहे हैं।)

लक्ष्मीबाई—तात्त्या! डलहौसीकी अपहरण नीतिके कारण केवल अपने राज्य अथवा अपनी जागीरें हड़पी जानेवालोंका ही नहीं, अपनी धार्मिक मान्यताओंपर आघात होनेसे आहत व्यक्तियोंका भी नहीं; अपितु अंग्रेजोंकी सत्ताके विरुद्ध होनेवाला आगामी संग्राम इस संस्कृति-प्रधान देशकी जनताकी सुनियोजित भावनाका प्रतिनिधित्व करनेवाला होगा। वस्तुतः कोई भी समर्थ देश किसी भी स्थितिमें स्वेच्छासे परशासनको बरदास्त नहीं कर सकता।

तात्त्या टोपे—इसे भारतका विवेकशील मस्तिष्क एवं मानवताका प्रतीक हृदय भलीभाँति समझता है देवि! हमारी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बलिदानी गाथाएँ ऐसी स्थितिमें रहनेकी अपेक्षा मर मिट-नेको हमें प्रेरित कर रही हैं।

लक्ष्मीबाई--फ़िर भी शक्ति एवं साधनोंकी अपनेमें कमी न होते हुए भी अतीतके समान हममें कर्तव्याकर्तव्य विवेचक मानवोंका आज अभाव स्पष्ट दीखता है। क्या यह भी छिपानेकी बात है कि जिस मुग़ल-राजवंशका सम्मान भारतव्यापी है, उसकी स्थिति ज्वालामुखीके समान अन्त-र्विस्फोटात्मक हो रही है।

तात्त्या टोपे--सुना जाता है कि शाहजहाँका शासनकाल मुग़ल साम्राज्यका स्वर्णयुग था, लेकिन गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाय तो उसे मुग़ल-शासनका सबसे बड़ा अधःपतन काल कहना उचित होगा, क्योंकि बादशाह शाहजहाँने अपने भाई-भतीजोंको क़त्ल करवाकर अधिकारारूढ़ होनेकी जो प्रथा चलाई और उसके बेटे औरङ्गज़ेबने उसकी नकल उससे भी अधिक स्पष्टतासे कर स्वयं उसे ही कैदमें डाल इस प्रथाको जिस प्रकार आगे बढ़ाया, सम्भवतः उसीसे प्रभावित आसन्न भविष्य पूरे मुग़ल राजवंशको हुमायूँके मकबरेमें व्यस्त होनेको न बाध्य कर दे और इसका आघात हमारे भारतव्यापी होनेवाले उपक्रमपर भी न पड़ेगा, यह कैसे न मान लिया जाय ?

लक्ष्मीबाई—तात्त्या, सुननेमें यह बात भले ही अप्रिय लगे, किन्तु शाहजहाँके इस प्रकारके पापको संसारकी निगाहोंसे ओझल करनेवाले ताज़महलमें मुमताज़ महल एवं उसकी कब्रोंके पास प्रथम बाजीरावकी स्मशानवासी भूतनाथको बतौर संरक्षक स्थापित करानेकी योजनामें उनकी अल्पायु अन्तराय न बन पाती, तो इतिहासका रुख किसी और ही

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिशामें होता। सच तो यह है कि मानवताके पुजारी हुमायूँ-के नामसे विख्यात वह मकबरा भी भारतके दुर्भाग्यका प्रतीक होते दीखता है, जहाँ अकाल-शस्त्र-कवलित महामानव दाराशिकोहका पर्थिव कलेवर कभी न्यस्त हुआ था। यदि शाहजहाँकी प्रेतात्माके पास भूतनाथका पहरा रहता तो कमसे कम वह मुग़लोंको पारिवारिक हत्याओंकी प्रेरणायें तो नहीं ही दे पाती।

तात्त्या टोपे—देवि ! इतिहासके पादविक्षेप हमारे वशसे परे हैं, अतः हम तो ऐतिह्यसे यही सीख ले सकते हैं कि हमसे भविष्यमें अतीतके समान भूलें न हों। महत्त्वाकांक्षा एवं अधिकारलिप्सायें मानवको दानव बना डालनेमें कहाँतक आगे बढ़ा सकतीं हैं, इसके लिए आपको स्वयं अपने भी इतिहासका अवलोकन करना होगा। रघुनाथरावकी महत्त्वाकांक्षाने भारतकी उत्तरी सीमासे आगे बढ़कर जब अटकपर भगवाध्वज फहराया, तो अपने पूर्वजोंने सोचा होगा कि राघोवा अपने पुण्यश्लोक पिता प्रथम बाजी-रावके समकक्ष होगा, परन्तु जब उसीने पेशवाईपर अधिकार करनेकी ग़रजसे पेशवा नारायणरावकी हत्या करा डाली, तो तत्कालीन राजनीतिज्ञोंने उसे पवित्र पेशवा परिवारके धूमकेतुकी संज्ञा दी और यद्यपि सर्वस्व स्वाहा करके भी रघुनाथराव पेशवाई न प्राप्त कर सका, फिर भी उसके औरस पुत्र द्वितीय बाजीरावने अनेक षड्यन्त्रोंके बाद पेशवाई तो अवश्य प्राप्त की, किन्तु राघोवाने अपने भ्रातृज नारायणरावकी जो हत्या कराई थी, उसके प्राय-श्चित्त-स्वरूप लाखों ब्राह्मणोंको भोजन कराने व नाना प्रकारके दानोपदानके पश्चात् भी उसे पूनाकी स्वतन्त्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पेशवाईसे सदाके लिए हाथ धोना पड़ा। इन घटनाओंपर गम्भीरतापूर्वक विचार करनेके पश्चात् क्या यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता, कि रघुनाथराव तथा बाजीरावके स्थानपर यदि प्रत्येक दृष्टिसे प्रथम, बालाजी विश्वनाथ अथवा उनके पुत्र प्रथम बाजीराव होते तो भारतका इतिहास कुछ और ही होता ?

लक्ष्मीबाई—तात्त्या, यह तो तुम मराठा—मण्डलके अधः पतन-कालकी बातें कह रहे हो, इससे पहले भी हमारे पूर्वजोंसे महत्वाकांक्षाके कारण ही भयानक भूलें हो चुकी हैं और वह भी इसलिए कि नाना फड़नवीस जैसे प्रखर राजनीतिज्ञ एवं महादजी सिन्धिया जैसे उद्भट सेनानी चरमोत्कर्षसे अभिभूत हो, कभी एक न हो सके। इतिहास बतलाता है कि जब रुहेले सरदार गुलामक़ादिरने बादशाह शाह-आलमकी आँखेंतक निकलवा लीं, तब भी भारतकी समूची मुस्लिम जनता ही नहीं, अपितु किसी मुस्लिम शासक तकके कानोंमें जूँ तक न रेंगी। ऐसी दशामें स्वयं महादजी सिन्धियाने केवल दिल्ली-सल्तनतकी रक्षा ही नहीं की, अपितु रुहेलोंकी ईंटोंका जवाब उन्हें पत्थरोंसे दे, सम्पूर्ण उत्तरी भारतमें मराठा-शक्तिकी धाक जमा दी थी; ऐसी दशामें अधिक नहीं, यदि सम्पूर्ण मराठे राज्यसंस्थानोंने मैसूरके सुल्तान हैदरअलीकी व्यावहारिक राजनीतिका अनुसरणकर शिन्देके नेतृत्वमें आगे बढ़कर फिरङ्गियोंसे जमकर लोहा लिया होता, तो वस्तुतः आज भारतमें अपनी तूती बोलती होती। हमें अपने पूर्वजोंकी इस भूलका आज प्रायश्चित् करना होगा।

(सहसा नेपथ्यसे गीत सुनाई पड़ती है।)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गीत

रण-भेरी बजने ही वाली है, सैनिक-गण तय्यार रहे !
तय्यार रहे भारतकी जनता, राष्ट्र-प्रकृतिमें रखती ममता,
परख फिरङ्गी-नीति-कुटिलता, एकत्रित कर अपनी क्षमता,–
अपना पक्ष गहे ।।रण०।।
राजनीति वह युक्ति सुझावे, जिससे सङ्घ-शक्ति जग पावे,
जो सङ्घर्षोंमें चमकावे, क्षात्र, क्षात्र जो शत्रु झुकावे,–
कर रण-भूमि रहे ।।रण०।।
शौर्य जगे पेशवा-शिवाका, छत्रसाल-गोविन्द सिंहका,
इतिहास लिए विक्रम-गाथाका, झुक न सके स्वातन्त्र्य पताका,–
जीवित देश रहे ।।रण०।।

(एक भृत्यका सविनय प्रवेश)

लक्ष्मीबाई—क्या बात है ?

भृत्य—भगवति ! पुण्यश्लोक पेशवा महाराजका एक दूत आपकी सेवामें उपस्थित होना चाहता है। वह यहाँसे कुछ दूरी पर ठहरा हुआ है।

लक्ष्मीबाई—उसे ससम्मान यहाँ उपस्थित होनेकी सूचना दो।

भृत्य—जो आज्ञा। (प्रस्थान)

लक्ष्मीबाई—तात्त्या ! यदि सच कहा जाय तो हमारे भावी स्वातन्त्र्य संग्रामके एकमात्र नेता नाना साहब ही हैं, क्योंकि वे हिमालयके समान अपने निश्चयपर अडिग रहनेवाले हैं और इसके साथ ही समुद्रके समान रत्नावलीवत् अपनी सुविचारित योजनाओंको यथास्थिति गुप्त रखनेमें गम्भीर हैं। वस्तुतः यदि यही गुण उनके कनिष्ठ बन्धु बाबासाहब एवं बाला साहबमें भी होते और यदि उनके भतीजे राव-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साहब भी ऐसी ही प्रकृतिके होते, तो हमारे लिये दैवी वरदान सिद्ध होते।

तात्या टोपे—देवि! प्रत्येक व्यक्तिकी अपनी निजी विशेषतायें हुआ करती हैं, इसीलिये तो व्यक्तिगत जीवनमें साम्यवाद-की व्यवस्थायें लागू नहीं हुआ करतीं। सच तो यह है कि शक्ति-सञ्चयके समान ही उसके यथावसर प्रयोगमें ही किसी की महत्ता या लघुताकी परीक्षा हो जाती है। इसीलिये तो शस्त्रबलके साथ शास्त्रबलका होना भी अत्यावश्यक समझा गया है एवं क्षात्रको इन दोनोंका समुच्चय माना गया है!

लक्ष्मीबाई—यदि इस दृष्टिसे अपने महानेता सम्राट् बहादुर-शाहकी आन्तरिक स्थितिपर विचार किया जाय तब तो कोई तुक ही नहीं बैठेगा।

तात्त्या टोपे—लेकिन फिर भी सम्राट् 'ज़फ़र' ने फ़िरङ्गियोंसे मिलनेवाली अपनी पन्द्रह लाख वार्षिककी पेन्शन, दिल्लीके लाल क़िला, अपने विशाल परिवार एवं इन सभीसे बढ़-कर अपनी जीर्णावस्थाकी तिलभर भी परवाह न कर, जो हमारा कण्टकाकीर्ण नेतृत्व स्वीकार किया है, देश इसके लिये उनका चिरकृतज्ञ रहेगा और सम्भवतः सहिष्णु भारतीय प्रकृति इसीके कारण अपने ऊपर हुए मुसल्मानोंके बहुमुखी अत्याचारोंको भी भूल जाय!

लक्ष्मीबाई—सम्राट् बहादुरशाहके प्रति देशके कृतज्ञ होनेमें किसीके दो मत नहीं हो सकते, किन्तु उनके स्वातन्त्र्य संग्रामके नेतृत्व-स्वीकार करनेके विषयमें गम्भीरतासे विचार करना होगा। इसमें पहली बात तो यह है कि श्रद्धा एवं विश्वासकी उत्कट भावनायें किसी निम्नस्तरके व्यक्ति-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

को भी चरित्रवान् बननेको बाध्य करती हैं। सम्राट् बहादुर-शाह जैसे राजकुलमें उत्पन्न एवं जन्मजात कविकी तो बात ही निराली है। दूसरी बात यह है कि अधिकार-सुख इतना मादक होता है कि उसके सामने जीवनका भी कोई महत्त्व नहीं रहा करता। भला जिस अकिञ्चन 'ज़फ़र' के सामने बात-बातमें अंग्रेज़ोंके साधारण कर्मचारी तक ताव दिखाया करते हैं, उन्हें यदि भारतके करोड़ों नागरिकों ही नहीं, अपितु प्रभूत शक्ति-सम्पन्न जन-नायक तक अपना हृदयसम्राट् मान, उनके सम्मानमें 'ख़ल्क ख़ुदाका मुल्क़ बाद-शाहका' का नारा लगाते हैं, तो इस अपनी कल्पित ही सही, असाधारण स्थितिके प्रभावसे सम्राट् 'ज़फ़र' का कवि-हृदय कैसे अप्रभावित रह सकता है? वस्तुतः आजकी नैसर्गिक परिस्थितिने बाबरसे बहादुरशाह तककी शृङ्खलाको अनायास ही सुदृढ़ कर दिया है, जो हमारे लिये एक आकर्षणकी वस्तु बन गई है।

(दूतका सविनय सामने आकर नाना
साहबका पत्र रानीको देना।)

लक्ष्मीबाई—(पत्रको ध्यानसे देखतीहुई) तात्त्या! पूज्य पेशवा महाराज अपनी तीर्थयात्रा सकुशल समाप्तकर इस समय कानपुरमें जाह्नवीके तटपर स्थित होकर एकान्त साधनोंमें प्रवृत्त हैं, यद्यपि इस धर्मयात्रामें श्रीमन्तको अनेक शक्ति-सम्पन्न देशभक्तोंसे आशाजनक आश्वासन मिले हैं, तथापि अपनी जालोंमें फँसानेकी अंग्रेज़ोंकी पटुताका देशी रजवाड़ों-पर कब कैसे असर पड़ेंगे, इसे वे भली-भाँति परख नहीं सके हैं। श्रीमन्तने अपनी इस यात्राके सिलसिलेमें भारत-स ाट्से विशेषरूपसे निकटका सम्पर्क स्थापित किया है;

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेकिन सम्राट् इस समय अपनी जिन आन्तरिक विकट परिस्थितियोंसे होकर गुजर रहे हैं, उन्हें देखतेहुये उनके भारतव्यापी प्रभावको उपयोगमें लानेके अतिरिक्त स्वाधीनताके सेनानायकोंको उनसे और अधिक सहायता न मिल सकेगी। लखनऊके युवक नवाब बिरजिस क़द्र व उनकी माता बेगम हज़रत महल एवं मन्त्री बालकृष्णसे भी श्रीमन्तका निकटका सम्पर्क स्थापित है और अवधकी परिस्थितिसे स्पष्ट हो गया है, कि यह प्रान्त अपनी भूमिपर होनेवाले संग्रामका सञ्चालन सफलतापूर्वक कर सकेगा; किन्तु अवध राज्यसे बदला चुकानेकी नीतिसे प्रेरित गोरखोंके अंग्रेजोंके सहयोगी होनेके कारण, यह प्रान्त अपनी सहायता अन्यत्र न भेज सकेगा। अस्तु, चाहे जो भी हो, यह तो मानना ही पड़ेगा कि श्रीमन्तकी यह तीर्थयात्रा आंशिक रूपसे सफल हुई है। (दूतसे) मातृभूमिके सैनिक! मेरे विश्वस्त व्यक्तिके साथ जाकर झाँसीके अतिथि-गृहमें विश्राम करो।

दूत—देवि! मेरे जैसोंको विश्रामके किये निरापद आश्रय कहाँ? कृपया आप पत्रका जबानी उत्तर दें और मैं चम्पत हो जाऊँ, ताकि यथाशीघ्र बिहार-केशरी महाराज कुँवर सिंहकी भी सेवामें पेशवा महाराजका सन्देश पहुँचा सकूँ और इसके बाद काशी एवं प्रयागमें भी पहुँच सकूँ।

लक्ष्मीबाई—पूज्य पेशवा महोदयकी सेवामें मेरी ओरसे सविनय निवेदन करना कि झाँसीकी लक्ष्मीबाई भावी स्वातन्त्र्य युद्धमें निष्ठापूर्वक अपना कर्त्तव्य निभायेगी और जब तक इसके शरीरमें रक्त रहेगा, अपने स्वाधीनताकी बलिवेदी पर चढ़े पूर्वजों का तर्पण शत्रुओंके रक्तसे करती रहेगी। बिहार-केशरीसे भी मेरा यही सन्देश कहना और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उनसे निवेदन करना कि दूरस्थ होतेहुये भी एकही पथके पान्थ होनेके कारण हम सभी मातृभूमिके सैनिक अत्यन्त सन्निकट हैं।

तात्त्या टोपे—बहादुर ! मेरी ओरसे पूज्य नाना साहबसे साभिवन्दन निवेदन करना कि आपका यह अनुचर आपके आदेशानुसार प्रकाश एवं अन्धकारके बीचसे अपने पथको प्रशस्त करते हुए यथाशक्ति अपना कार्य कर रहा है; फिर भी यह आपको विश्वास दिलाना चाहता है कि इसका निःस्वार्थ उत्सर्ग भावी पीढ़ीके लिये प्रेरणास्रोत होकर चिरञ्जीवी रहेगा। विहार-केशरीसे मेरी ओरसे निवेदन करना कि यथावसर फिरङ्गियोंसे होनेवाले युद्धमें गुरिल्ला युद्धकी कलाके आप जैसे आचार्यसे दीक्षा-ग्रहण करनेके लिये तात्त्या आपसे निकट सम्पर्क स्थापनके लिये सचेष्ट है। आशा है पाटलीपुत्र अपना अतीत वह सुरक्षित रखेगा। जिसने कभी विश्वकी मानवताको सुरक्षित किया था।

दूत—यथाशक्ति आप लोगोंके सन्देश शीघ्रतया आपके नेताओंके पास पहुँच जाँयगे। (सविनय प्रस्थान)

तात्त्या टोपे—देवि ! आपको यह तो मालूम ही है न, कि ग्वालियर राज्यकी जनता तथा सेना भावी संग्राममें अपना साथ देनेको पूर्णतया तैयार है, फिर भी सिन्धिया-दरबारकी स्थिति अनिश्चित है। अतः ऐसी स्थितिमें अपना कर्तव्य है कि अवसर आनेपर हम इस महत्त्वपूर्ण मोर्चेको अपने अनुकूल बनानेके लिए अभीसे प्रयत्न करते रहें।

लक्ष्मीबाई—जो हितार्थ नहीं समझ पाते, परिस्थितिके अनुसार प्रकृति स्वयं उन्हें उसे समझनेको बाध्य कर देती है। सिन्धिया-दरबार यदि बार-बार समझानेपर भी हमारे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिविरमें आनेको तैयार नहीं होगा, तो बाध्य होकर हमें उसे ग्वालियरसे हटा देना पड़ेगा। इस सम्बन्धमें नीतिशास्त्रकी बातें कहते-कहते हमारे नेता थक गये। अतः इसके समाधानका विकल्प सिन्धियाके निर्वासनके अतिरिक्त और कुछ हो ही नहीं सकता। हमें 'शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्र-चिन्ता प्रवर्तते' आचार्य चाणक्यके इस आदर्श वाक्यके दूरङ्गम अर्थका अनुसन्धान करना होगा।

तात्त्या टोपे—अच्छा हो कि इसके दूरङ्गम अर्थके विवेचनमें माथापच्ची न कर, तलवासे अभी अभी सिन्धियाके सिंहासनपर अधिकार कर लिया जाय, ताकि अवसर आनेपर उसकी शक्तिको उपयोगमें लानेके विषयमें नूतन होने से हम अनभिज्ञ न प्रतीत हों।

लक्ष्मीबाई—वीरवर तात्या! शस्त्र-प्रयोग तो उसी स्थितिमें उपयोगी होता है, जब नीतिकी सम्पूर्ण पद्धतियाँ अनावश्यक हो जाती हैं। तुम्हें यह न भूलना चाहिये कि सिन्धिया-दरबार नवीन नहीं, अपना ही अङ्ग है। अतः इस समय हमें विदेशियोंकी दासतासे विमुक्तिके लिये आपसमें एक होना चाहिये; क्योंकि यदि हम आपसमें ही लड़ने-झगड़ने लगेंगे, तब तो उद्धत यदुवंशियोंके समान अपने ही शस्त्रास्त्रोंसे आपसमें लड़-झगड़कर हमें अपनी सत्ताको समाप्त कर देना होगा। अतः उतावलेपनसे हमें बचना है।

तात्त्या टोपे—देवि! आपको यह न भूलना चाहिये कि हम मुट्ठीभर फिरङ्गियोंसे भयभीत होकर पराधीन नहीं बनाये गये हैं, अपितु अपनी क्षमा-प्रधान नीतिके कारण, उनके शिविरमें घृणित व्यक्तिगत स्वार्थवश अवस्थित अपरिमित अपने देशबन्धुओंके द्वारा ही, पराधीनता नामकी इस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विकृत दशामें पहुँचाये गये हैं, अतः भविष्यमें हमें इन्हींसे लोहा लेना है। हमारे शस्त्र मीरज़ाफ़र, जगत सेठ एवं अमीचन्द जैसोंसे राष्ट्रकी रक्षा न कर सके, आज इसीके परिणाम स्वरूप उनके पथोंपर चलनेवालोंकी महती संख्यासे हमें सङ्घर्ष करनेको बाध्य होना पड़ेगा। हमारा कर्तव्य यही है कि पहले हम फिरङ्गियोंके पोषकतत्त्वोंके उन्मूलनमें प्रवृत्त हों और बादमें आततायी अंग्रेजोंसे !

लक्ष्मीबाई--तुम्हारे मन्तव्यके हितकर प्रतीत होते हुये भी ऐसा करनेसे समस्याके समाधानकी अपेक्षा अड़चनोंके बढ़जानेकी अधिक सम्भावना है तात्या ! हमारा इतिहास हमें बताता है कि शक, यवन, हूण एवं कुषण जैसे बर्बर विदेशी आक्रमणकारी तक जब यहाँ आकर केवल हममें विलीन ही नहीं होगये, बल्कि हमारे सबल अङ्ग राजपूत तक बन गये, तो क्या अपने प्रत्येक दृष्टिसे सशक्त होजानेपर अपने ही अङ्ग-प्रत्यङ्ग अनायास ही अपने सहायक न बन जाँयगे ? तात्या ! अधिकार शक्तिका मुखापेक्षी होता है, अतः जब ग्वालियरकी जनता तथा सेना अपने साथ है, तो हम यथावसर क्षणमात्रमें सिन्धियाको पदच्युतकर बादमें रावसाहबको सिंहासनासीनकर इस मोर्चेको अपने अनुकूल बना लेंगे व यथावसर कालपीको हस्तगतकर बालासाहबको वहाँका प्रबन्धक बना शत्रुसे जमकर लोहा लेंगे।

तात्या टोपे--ठीक कहती हो देवि ! शक्तिशालीके साक्षात्कारके पश्चात् तो आन्तरिक अन्तराय भी बाधक होकर साधक ही हो जाया करते हैं; अतः अब तो हमारे लिये यही उचित होगा कि अपने पास जो साधन हैं, उन्हें ही लेकर निष्काम भावनासे हम कर्तव्य-पथमें अग्रसर हों।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लक्ष्मीबाई—अवश्य, यदि हम ईमानदारीसे राष्ट्रके प्रति अपने कर्तव्यका पालन करते रहेंगे, तो आत्मविज्ञापनके विना ही हमारे मार्गको प्रशस्त करनेवाले निष्ठावान् व्यक्ति हमारे अनुयायी होते चले जाँयगे। यही नहीं, इसे देख शत्रुपक्षमें सम्मिलित अपने व्यक्तियोंके भी हृदय-परिवर्तित हो जाँयगे। (नेपथ्यसे स्वयंसेविकाओंकी गीत सुनाई पड़ते ही दोनोंका ध्यान इधर ही केन्द्रित हो जाता है।)

गीत

कैसी है यह छलना री!
नभमें तारे छिटक रहे हैं, स्थलपर दीपक चमक रहे हैं;
जलके सावज किलक रहे हैं, पर निज वैभव बिखर रहे हैं;
अपनी कहीं न गणना री ॥ कैसी० ॥
पराधीनता-पाश जटिल है, इससे भी विमुक्ति सम्भव है;
यदि हममें जीवन बाकी है, जौहर ओझल नहीं हुआ है;
बलि-पथपर है चलना री ॥ कैसी० ॥
राष्ट्र-शक्तियाँ सञ्चित करना, दृढ़ निश्चयपर आधृत रहना;
कर्मयोग गीता-श्रुत गहना, सावित्री हृदयस्थ देखना;
जल-थल-नभ है अपना री ॥ कैसी० ॥
अम्बरमें कुमकुम बिखेरती, उषा-छटा भू-रञ्जित करती;
सान्ध्य गगन सौन्दर्य बढ़ाती, रजनी शशि-किरणें छिटकाती;
चेतना-प्रभा-सँग बढ़ती री ॥ कैसी० ॥
नेताकी प्रतिभा प्रभावती, राष्ट्रिय प्रगति-साधना करती;
संस्कारोंमें दृढ़ता लाती, नैसर्गिक अधिकार जताती;
इतिहास बनाती रहती री ॥ कैसी० ॥

(आलोक)

[पटाक्षेप]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वितीय अङ्क

प्रथम दृश्य

स्थान—लखनऊमें गोमती-तटपर स्थित
बेग़म हज़रत महलकी राजबाटिका।

हज़रत महल—(स्वगत) हम चाहे शिया हों या सुन्नी, मुग़ल हों या पठान या और कुछ भी क्यों न हों, लेकिन आज दरअसल हम हिन्दोस्तानी अंग्रेज़ोंके ग़ुलाम हैं। मज़हब तो अपनी मर्ज़ीसे बदले भी जा सकते हैं, मगर फ़िरङ्गियों-की ग़ुलामीका जुआ अपने कन्धोंसे उतार फेंकना अपने बूतेकी बात नहीं है। क्योंकि जब हम आपसमें ही एकराय नहीं हैं, तो इन ज़ालिमोंको मुल्क़से कैसे बाहर खदेड़ा जाय ? क्या तबर्रा व मदहे सहाबाके झगड़े दफ़नाये नहीं जा सकते ?

(दासीका सामने आकर एक पत्र बेगमके हाथमें देना।)

हज़रत महल—यह कैसा ख़त है ?

दासी—हुज़ूर ! 'पयामे आज़ादी' में साया हुये शाहनशाहे हिन्द-ग़ाज़ीके फ़रमानकी यह नक़ल है। इसी क़दरके और भी ख़त दूसरी रियासतोंमें भेजे गये हैं।

हज़रत महल—(बाअदब इसे देखनेके बाद दासीके हाथमें देती हुई) इसे पढ़कर सुनाओ।

दासी—(ज़ोरसे पढ़ती है।) 'हिन्दके फ़र्ज़न्दगान ! अरसेसे जिसका इन्तज़ार था, आज़ादीकी वह पाक घड़ी आ पहुँची

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है। हिन्दी अब तक धोखेमें आकर खुदकुशी करते रहे। अब हमें मुल्कफ़रोसीके इस गुनाहका कुफ़्फ़ारा करना चाहिये। अंग्रेज़ दग़ाबाज़ीसे बाज़ न आवेंगे। वे मुसलमानोंको हिन्दुओंके और हिन्दुओंको मुसलमानोंके ख़िलाफ़ उभाड़ेंगे। लेकिन भाइयो! उनके जाल व फ़रेबमें न फँसना। भाइयो! अपने छोटे मोटे तफ़रक़ोंको भूल मैदाने जङ्गमें एक झण्डेके नीचे खड़े हो जाओ!'

हज़रत महल— इसमें शक नहीं हैं कि यह फ़रमान हमारे लिए मानिन्द आबेहयातके है, लेकिन क्या इसमें भी कोई शक़ व सुबहेकी गुञ्जाइश है कि ख़ुद शाही ख़ान्दान ही मुल्कके लिए एक खौफ़नाक पहेली बना हुआ है। ताज्जुब की बात तो यह है कि शाहजादा मिर्ज़ा कोयाश मिर्ज़ा फखरू मरहूमका रास्ता अख़्तियारकर दिल्लीका लाल क़िला अंग्रेज़ोंको सौंप, उनके फेंके टुकड़ोंपर जीना कबूलकर बादशाहकी जगह शाहजादाका ख़िताब अख़्तियार करनेकी ख़ातिर, एड़ी-चोटीके पसीने एक कर रहा है। इसके सिवा धरती व आसमानको कँपा देनेकी बात तो यह है कि मिर्ज़ा इलाहीबक्स हकीम एहसानुल्लाखाँ व महबूब अलीसे साँठ-गाँठकर अपने दामादके क़त्लके बदला लेनेकी नीयतसे समूचे शाही ख़ान्दानको ही नेश्तनाबूद करनेकी ग़रज़से अंग्रेज़ोंका भेदिया बना हुआ है। मिर्ज़ा मुग़लमें किसी हद तक मुल्ककी ख़ातिर हमदर्दी ज़रूर है, लेकिन सियासती व फ़ौजी मसायल सुलझानेकी ताक़त उसमें नहींके बराबर है। ऐसी हालतमें कहा नहीं जा सकता कि ऊँट कौन सी करवट लेगा!

दासी—किया क्या जाय बेग़म साहिबा! दिया-तले अँधेरा रहता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ही है। क्या इससे भी इनकार किया जा सकता है कि शिया व सुन्नत जमातके तफ़रक़ोंने मुसलमानों व छूत और अछूतके भूतोंने हिन्दुओंको पामाल कर दिया। इसके सिवा हमारी ग़ुलामीकी मीयाद बढ़ानेवाले मतलबी इन्सान तो ऐसी बुराइयोंसे भी अपने साथ ही, मुल्कके लिये भी ज्यादा ख़तरनाक साबित हुये हैं। क्या जम्बू व काश्मीरके राज्य पानेकी ख़ातिर पञ्जाबको अंग्रेजोंके हवाले करनेवाले गुलाबसिंह व हैदराबादके तख़्तको क़ायम बद्स्तूर रखनेकी ग़रजसे सल्तनते मुग़लियाकी गद्दारी करनेवाले निजाम व उसके हमराहियोंके सबूत इसके लिये काफ़ी न होंगे ? हमें फ़ख़्र है कि हमारे बादशाहको ज़बरन् लखनऊसे भले ही हटा दिया गया, लेकिन उन्होंने उटरमकी बात मानकर मुल्कको धोक़ा नहीं दिया।

हज़रत महल—मुग़ल ख़ान्दानमें ख़ौफ़नाक ख़ामियाँ है और ख़ुदग़रज़ इन्सान इन सबोंसे भी आगे हैं, लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं होता कि इनकी वजूहातसे हमारे आज़ादीके हौसले पस्त होनेवाले हैं, या हम हाथपर हाथ रखकर बैठे रहेंगे! वल्कि कहनेकी ग़रज़ तो यह है कि अपनी इस क़दरकी ख़ामियाँ हमें जल्दसे जल्द क़ामयाबीकी मञ्ज़िल तक पहुँचनेमें गाड़ीके आगे काठकी तरह अक्सर दिक्क़तें पैदा कर देती हैं। (कुछ सोचतीहुई) हमें यह तो मानना ही पड़ेगा कि अपनी घरेलू ख़ामियोंको महसूस करतेहुये भी शाहनशाह 'ज़फ़र' ने अंग्रेज़ोंके गुमाश्तोंके फुसलाने व डराने-धमकानेके बावजूद उन्हें टकेसे जवाब देते हुये डङ्केकी चोट एलान कर दिया, कि हिन्दोस्तानके बाशिन्दगान मेरी सल्तनतकी रियाया हैं, लिहाज़ा अगर वे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुझे अपना बादशाह मानकर तुम्हारे विलायती आक़ाओंसे अपने पिण्ड छुड़ानेकी गरज़से बग़ावत करनेको आमादा हैं, तो मैं बज़रिये शाही फ़रमान उन्हें इससे रोक नहीं सकता; फिर जो आग आज समूचे मुल्क़में धधक चुकी है, चाहनेपर भी, इस ढलतीहुई उम्रमें मुझमें उसे बुझानेकी ताकत नहीं है। ताज्जुब तो यह है कि बेगम ज़ीनतमहलपर भी बादशाहके इस रुख़का बड़ी मेक़दारमें असर होता दीख रहा है।

दासी—लेकिन बेगम साहिबा! यह लड़ाई तो अमीरो-उमरा, राजा-महाराजाओं व नवाबों-बादशाहोंकी है, हम ग़रीबोंको इससे कौन सा फ़ायदा होनेवाला है? हमें तो हमेशाको ख़ातिर ताक़तवरों व अमीरोंकी ख़िदमतें करते ही रहना है, चाहे वे जो भी हों, या जहाँके भी बाशिन्दग़ान हों।

हज़रत महल—अपनी इस ग़लतफ़हमीको दूर करनेके लिये तवारीख़के पन्ने उलटो। बज़रिये फ़िरङ्गियों ढाकेके बुनकरोंके अंगूठे इसलिये काटे गये कि उनसे बुनेगये मख़मलके थानोंसे इङ्गलिस्तानके बाज़ार पटे रहते थे, जिनकी वजहसे अंग्रेज़ बुनकर हाय-तोबा मचाये रहते थे। ऐसी ही और भी इस क़दरकी बहुत सी नज़ीरें हैं, जिनसे साबित किया जा सक़ता है कि फ़िरङ्गियोंकी मार बनिस्वत राजा-नवाबोंके छोटे तबक़ेवालोंपर कई गुना ज्यादा पड़ी है। क्या यह सच नहीं है कि साठ फ़ीसदी यतीम बज़रिये फ़िरङ्गियों ईसाई बननेको मजबूर हुये। ख़ैर, इसे भी जाने दो; 'जिसे न दे मौला, उसे दिलावे आसफ़ेउद्दौला' के मतलब पर ज़रा दूरसे ग़ौर करे।

दासी—मैं आपकी तमाम बातें भलीभाँति समझती हूँ हुज़ूर;

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेकिन हिन्दुस्तानके सभी मालदार व ताक़तवर मानिन्द बादशाह आसफ़ेउद्दौलाके परवरदिगार नहीं हो सकते !

हज़रत महल—कमसे कम लखनऊके शाही खान्दानपर तो यक़ीन रखो। फिर भी अगर तुम्हें यहाँसे हटाकर इङ्गलिस्तानके शाही हरममें बतौर बेग़मके बहाल कर दिया जाय तो क्या तुम ख़ुश रह सकोगी ?

दासी—बेगम साहिबा ! हम तो इन्सानकी औलाद हैं, लिहाज़ा हमारी तो बात ही निराली है, इसे तो चिड़ियाँ भी और शायद वह ख्वाबमें भी पसन्द न कर सकेंगी।

हज़रत महल—(मन्द मुसकानसे) लेकिन कमसे कम लखनऊके शाही हरममें तो इस क़दरकी हरकतें पसन्द की ही जा सकती हैं ?

दासी—गुस्ताख़ी माफ़ हो बेग़म साहिबा !

हज़रत महल—शतरञ्जके खेलके मानिन्द ख़ुदाके खल्क़में ग़रीबी अमीरीमें और ख़ुशक़िस्मती बदनसीबीमें तब्दील हुआ करती है। तवारीख़के पन्ने उलटनेवाले ख्वाबमें भी यह नहीं भूल सकते कि हिन्दोस्तानकी हैरतअङ्गेज़ बहमनी सल्तनतको ज़हूरमें लानेवाले हज़रत हसन बहमनशाह कभी रोटियोंके भी मुहताज थे और रश्केजहाँ बेग़म नादिराकी ख़ुशक़िस्मती अपने शौहर दाराशिकोहकी दुनियाँको रुलादेनेवाली महरूमीके साथ ही स्याह हो गई। इसलिये आज़ादीके इस पाक़ जङ्गके ऐन मौक़ेपर तुमसे मेरा यही कहना है, कि अपनी ही भलाईकी ख़ातिर अमीरी व ग़रीबीके मसलेको ताक़ पर रख दो। याद रखो, मुल्ककी नमक अदायगीके ऐसे मौके ज़िन्दगीमें बार-बार नहीं आते, लिहाज़ा बहादुरोंकी मौत मरना सीखो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(सहसा नेपथ्यसे एक नज़्म सुनाई पड़ती है और
एक दासी पत्र लाकर बेग़मको देती है।)
बहार आयी असीराने क़फ़स आपसमें कहते हैं।
फड़ककर तोड़ना है ग़र क़फ़स तय्यार हो जाओ ॥

हज़रत महल—(ख़तको देखतीहुई) फैज़ाबादके मौलवी अहमदशाहका यह ख़त है। नाना साहबसे हाल हीमें उनकी मुलाक़ात हुई थी। अब क़रीब क़रीब मुल्कके हर एक मोर्चे पर अंग्रेज़ोंसे लोहा लेनेकी तय्यारी पूरी हो चली है। चूँकि जनाब मौलवी साहब फ़िरङ्गियोंसे भी बढ़कर उनके हिन्दोस्तानी गुमाश्तोंकी आँखोंके काँटे बने हुए हैं, इसलिये उनके मुतल्लिक़ किसी भी बातका पता दुश्मनोंको न चलने देना हमारा फ़र्ज़ है। यह भी हमारे लिये खुशीकी बात है कि रुहेले सरदार भी मौलवी साहबसे मिल गये हैं।

दासी—बेग़म साहिबा ! मौलवी अहमदशाहकी शकलमें मुल्कको ऐसा ख़ुदाई ख़िदमतगार मिला है, जिसपर हमको नाज़ होना चाहिये। वह जैसे बहादुर हैं वैसे ही अक़्लमन्द। इसके साथ ही मुल्ककी ख़ातिर सरफ़रोसीकी तमन्ना रखनेवाले ऐसे इन्सान भी कम ही मिल सकेंगे, यही तो वजह है कि लाखों हिन्दू व मुसलमान उनकी सदारतमें आज़ादीकी तमन्नाएँ लिये क़ुर्बान होनेको उतावले हो रहे हैं।

हज़रत महल—बेशक, ठीक कहती हो। जाकर ख़त लानेवाले दीनदार इन्सानसे बतौर जवाब मेरी ओरसे जनाब मौलवी साहबसे कहलवा दो कि ग़र्चे हज़रत महलकी ज़िन्दगी लखनऊके शाही हरममें ऐशो आरामसे बीती है, फिर भी आज़ादीके मैदानमें वह झाँसीकी रानी लक्ष्मीबाईके मानिन्द हमेशा आगे बढ़नेकी कोशिशें करती रहेगी। अगर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हो सके तो पेशवा नाना साहबसे खातूने जन्नत चाँदबीबी की जवाँमर्दीकी याद दिलाते हुये कहलवाना कि हम औरतें आज भी उनकी नज़ीर आपके सामने रखेंगी। इसके अलावा पेशवा बहादुरसे यह भी कहलवाना कि गुज़रे जमानोंसे हम हिन्दुओं व मुसल्मानोंमें चाहे जिन किसी भी मक़सदोंसे आपसी लड़ाइयाँ हुई हों, मगर आज हमें इसलिये एक झण्डेके नीचे आकर खड़ा होना है कि हम सभी अंग्रेज़ोंके ज़ुल्मोंसे कराह रहे हैं और इसीलिये हमें गोमतीके किनारे बसे लखनऊ व नीमिसार दोनोंमें एक ही हिन्दुस्तानकी शकल देखनी है।

दासी—जैसा हुक्म! (दोनों दासियोंका प्रस्थान)

हज़रत महल—(स्वगत) आज मुल्ककी आवाज़पर हमें हरम छोड़कर दर-दरकी खाक छाननी है, हमें ताश व शतरञ्जको हमेशाकी खातिर गोमतीमें डुबो देना है। हममें ऐसी कौन-कौन सी खामियाँ हैं, जिनसे फ़ायदे उठाकर सात समुन्दर पारसे तराजू लेकर आये अंग्रेज़ बनिये हमपर आज तक हावी हैं, उन्हें दूर करना होगा। चूँकि उन गोरे चमड़ीवालोंको हमपर हुकूमत करनेका कोई भी जायज़ हक़ नहीं, है लिहाज़ा अगर ख़ुदाने चाहा तो आगे आनेवाली जङ्गे आज़ादीके मैदानमें इसका फैसला आसानीसे हो जायगा।

(सहसा एक दासीका प्रवेश)

हज़रत महल—कहो क्या बात है?

दासी—हुज़ूर! मौलवी अज़ीमुल्ला ख़ाँ साहब ख़िदमतमें हाज़िर होना चाहते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हज़रत महल— उन्हें बाइज्ज़त यहाँ आनेकी इत्तला करो।
दासी—जैसा हुक्म ! (दासीके प्रस्थानके बाद अज़ीमुल्लाका सामने आकर बेगम साहिबाको सलाम करना ।)
हज़रत महल—तशरीफ़ रखिये वकील साहब, ख़ैरियत तो है ? कहिये और क्या हाल-चाल है ?
अज़ीमुल्ला—(यथोचित स्थानपर स्थित होकर) मुल्ककी सलामतीके साथ अपनी भी ख़ैरियत है। आगेकी दास्तान यह है कि हमारे बनारसके लक्ष्मण शास्त्री जैसे नजू-मियोंने अवाममें कम्पनीकी सल्तनतके हिन्दुस्तानसे उठ जानेकी जो अफ़वाहें मुल्कके घर घरमें फैला रखी हैं, उनका अपनी ताक़तोंको बढ़ानेमें बड़ा असर हो रहा है, फिर भी मुक़म्मल कामयाबी हासिल करनेकी ख़ातिर मेरी समझसे दो बातें ज़रूरी जान पड़ती हैं। पहली यह कि एतवार ३१ मई सन् १८५७ ई० से पहले कहीं भी और किसी भी क़दरकी गड़बड़ी न फैलने पावे, क्योंकि ऐसी वारदातें होनेसे हरमानीमें चुश्त व चालाक फिरङ्गियोंको सँभल जानेका सुनहला मौक़ा मिल जायगा। इसके सिवा दूसरी बात यह है कि कलकत्ता, बम्बई व मद्रासकी अंग्रेजी व उनकी मददगार हिन्दुस्तानी फ़ौजोंको किसी भी हालतमें मिलने देनेका मौक़ा न दिया जाय। इस वक्त इलाहाबादमें अंग्रेजोंकी सबसे बढ़कर वफ़ादार सिख पल्टनें जिस मुस्तैदीसे कवायदें करनेमें लगी हुई हैं, उसे देखते हुये तो यही जान पड़ता है कि हमें अपने सूबेमें ही उलझना पड़ जायगा। जान पड़ता है कि कैनिङ्ग इस सूबे-की ज़बर्दस्त ताक़तको समझकर ही इलाहाबादमें जम जानेकी सोच रहा है। ख़ैर, ख़ुदाकी फ़ज़लसे हमें इससे डरने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

का कोई सवब नहीं है, लेकिन परेशानी देहलीके मोर्चेकी सलामतीकी है, क्योंकि सिखोंके गढ़ पञ्जावके अंग्रेजोंके मुट्ठीमें चले जानेसे हमारे सामने बहुत बड़ी मुसीवत खड़ी हो गई है। फिर भी रुहेले सिपहसालार मुहम्मद बख़्तख़ाँने हमें इतमीनान दिलाया है कि ज्यों ही मैं देहलीके मोर्चेको कमजोर होते देखूँगा, आगे बढ़ना छोड़कर देहलीकी ओर दौड़ पड़ूँगा। (कुछ सोचते हुए) चाहे जो भी हो हुजूर ! इस वक्त अपनी जैसी फ़ौजी तय्यारी है, उसपर ग़ौर करने पर तो यह साफ़ ज़ाहिर होता है कि हम कम्पनीके राजकी नींव तो ज़रूर ही हिला देंगे, बशर्ते फिरङ्गियोंके हमक़ौम गुमाश्तोंके ज़रिये हम व हमारे वहादुर सिपहसालारान क़त्ल न करवा डाले गये व अम्बाला और देहलीके बीचमें पड़ी सिख रियासतोंने हमें जख़्मी न बना दिया !

हज़रत महल—वकील साहब, इससे तो इनकार नहीं ही किया जा सकता कि चालाकी व दग़ा-फ़रेब करनेमें फ़िरङ्गियोंकी टोली हमसे बहुत आगे है, फिर भी ऐसा समझ दिल मसोसकर बैठे रहना भी तो ठीक नहीं होगा। मैं तो समझती हूँ कि अवधका सूबा आज़ादीके इस पाक जङ्गमें गोरखोंको अपने सरपर शैतानोंके मानिन्द मँडराते देखते हुये भी अपना फ़र्ज़ मर्दानगीके साथ अदा करेगा और बहन लक्ष्मीबाईकी झाँसीसे भी मुझे ऐसी ही उम्मीद है। बिहारके राजा कुँवरसिंह व उनके भाई अमरसिंहके बारेमें तो कुछ कहना ही नहीं है; लेकिन अगर तात्त्याटोपे अहमदशाह व लियाक़तअलीको खुले अंग्रेजोंपर छिटफुट हमले करनेकी छूट देदी जाय, तो लड़ाईमें जान आ जाय। इसके सिवा अगर नाना साहबके सिपहसालारे आज़म नादिरख़ाँ, बाबासाहब

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बालासाहब व रावसाहबके साथ कानपुरका मोर्चा सँभाल लें और नाना साहबको समूचे मराठे सूबेका पेशवा एलान करके उनकी सहादतमें समूचे मराठे सिपाहियों व रैयतको लाया जा सके, तो हिन्दुस्तानको आज़ाद होनेमें कोई शको-सुबहा न रह जाय। लेकिन किया क्या जाय, अंग्रेज़ोंका पक्का हिदायती निजाम मानिन्द शैतानके उधर जमा हुआ है, इसके सिवा मराठे सरदार व रजवाड़े भी अंग्रेज़ोंसे चोली-दामनके ताल्लुक़ात क़ायम किये उधर बैठे हुये हैं। (कुछ सोचती हुई) जो राजपूताना कभी हिन्दोस्तानका सरताज समझा जाता था, आज मानिन्द मुर्देके क़यामत तककी ख़ातिर सो रहा है। पूर्वी हिन्दुस्तानकी भी क़रीब क़रीब यही हालत है, लेकिन इधर पता चला है कि हमारे वज़ीर अली नक़ी ख़ाँ व उनके हमराहियोंने कलकत्तेमें बैठे-बैठे भी कुछ करामाती काम कर दिखाये हैं, अभी हालमें ही नक़ीख़ाँने ख़त भेजा है, जिससे मालूम हुआ है कि साधु फ़क़ीरोंके ज़रिये बङ्गालमें मुस्तैदीसे फ़ौजी छावनियों व अवाममें ज़रूरी काम हो रहे हैं।

अज़ीमुल्ला—हुज़ूर! इस क़दरकी वारदातोंसे कामयाबी होनेकी बात नामुमकिन न समझी जानी चाहिये। सच्ची बात तो यह है कि किसी मुल्कको आज़ाद करनेकी ख़ातिर उसके बच्चे बच्चे तकका मानिन्द फ़ौजी सिपाहियोंके शामिल होना ज़रूरी नहीं है, बल्कि इसके लिये कुछ माहिर इन्सान ही, अगर उनके हमराही अपनी आनपर मर मिटनेवाले हों, काफ़ी हुआ करते हैं। इसके लिये जार्ज वाशिङ्गटनकी सदारतमें अमेरिकाकी आज़ादीके लिये लड़ी गई लड़ाईकी मिसाल मेरी समझसे जायज होगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हज़रत महल—कौन जाने कि हरमानीमें चुश्त व चालाक फ़िरङ्गी हमारे सबसे बड़े देहलीके मोर्चेको कमज़ोर बनाने की गरज़से शाहंशाहे 'ज़फ़र' को ही न लाल क़िलेसे हटाकर हिन्दुस्तानके किसी कोनेमें भेज दें !

अज़ीमुल्ला—गुज़रे ज़मानेमें जब हमारे बुजुर्ग ग़ाफ़िल थे; लार्ड वेलेज़लीने बादशाह शाहआलम मरहूमको लाल क़िलेसे हटा मुँगेरके क़िलेमें भेजकर हमेशाकी ख़ातिर देहलीको हमसे ओझल करनेकी गरज़से एड़ी-चोटीके पसीने एक कर दिये थे; लेकिन जब उस वक्त ख़ुदा कोयह मंज़ूर न हुआ तो आज तो हम उसकी मर्ज़ीसे चौकन्ने हो गये हैं और एक जान होकर फिरङ्गियोंके सामने अपनी फ़ौजें खड़ी करनेको तैयार हो रहे हैं।

हज़रत महल—काश, आजके मानिन्द हमारे बुजुर्ग प्लासीके बदले चुकानेकी ख़ातिर बक्सरके मैदाने जङ्गमें एक हुए होते; तो आज इन फ़िरङ्गियोंका नामोनिशान तक हिन्दोस्तानमें न रह गया होता। नवाब मीरक़ासिमको अवध व देहलीकी इमदाद तो ज़रूर मिली थी, लेकिन बादशाह शाहआलमकी रायके मुताबिक़ लड़ाईमें शामिल होनेको तय्यार उस वक्तकी हिन्दुस्तानकी सबसे अज़ीमुश्शान ताक़त मराठी रियासतोंको वे न अपना सके; जिसका नतीज़ा आज हमें भुगतना पड़ रहा है।

अज़ीमुल्लाह—हुज़ूर! 'होता है वही, जो मंज़ूरे ख़ुदा होता है'; इसे महसूस करते हुये भी अपने बुज़ुर्गोंकी इस क़दरकी ग़ल्तियोंसे बचनेकी गरज़से ही तो अज़ीमुल्लाने पेशवा नाना साहबका पल्ला पकड़ा है। कौन जाने बक्सरकी ख़ामी इस बार कामयाबीमें न तब्दील हो जाय ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हज़रत महल—वक़ील साहब ! अगर हमारे दिमाग़ मुग़ल या मराठा-राजके ख़्वाबसे परेशान न होकर हिन्दुस्तानके बाशिन्दग़ानके राजकी ख़ातिर एका कर सकें, तो मुल्कके ग़द्दारोंके सिवा ऐसी कौन सी ताक़त है, जो हमें फिरङ्गियों से अपने पिण्ड छुड़ानेमें रुकावट डाल सके ?

अज़ीमुल्ला—बदलते हुये ज़मानेकी हवासे हम अछूते नहीं रह सकते हुज़ूर ! हिन्दुस्तानके बच्चे बच्चेकी ज़बानसे निकलनेवाले फ़िरङ्गियोंसे प्लासीके बदला लेनेके नारेमें यही राज़ हमें महसूस होता है।

हज़रत महल—ख़ुदाकी शान निराली है !

हज़रत महल—(एक दासीको सामने आती देख) क्या है ?

दासी—हुज़ूर ! मग़रिबका वक्त़ हो चला है, चलकर वज़ू बनायें।

हज़रत महल—(अज़ीमुल्लाकी ओर देखती हुई) हाँ, चलो।

अज़ीमुल्ला—चलिये।

(सबका प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन]

द्वितीय दृश्य

स्थान—बिठूरमें गङ्गा-तटपर स्थित एक मन्दिरका अतिथि गृह।

(पेशवा नाना साहब तथा अज़ीमुल्लाख़ाँ परस्पर विचार-विमर्श कर रहे हैं।)

अज़ीमुल्ला—हुज़ूर ! बैरकपुरमें फिरङ्गियोंने हिन्दुओं व मुसलमानोंके मज़हबी मामलोंमें दख़ल देने की ग़रज़से जो कारतूस दाँतोंसे काटनेका हिन्दोस्तानी सिपाहियोंको हुक्म दिया था, उसे नामञ्ज़ूर करनेवालोंके अगुवा मङ्गल पाण्डेय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की शहादत व दशवीं मईकी मेरठकी वाक़यातोंपर ग़ौर करनेके बाद मैं तो इसी नतीजेपर पहुँचा हूँ अब कि इन्तज़ारकी कतई जरूरत नहीं है; इसलिये अभी-अभीअंग्रेजोंपर धावा बोल देनेसे ही कामयाबी हासिल हो सकेगी। क्योंकि मेरठ, अलीगढ़ मैनपुरी इटावा बुलन्दशहर नसीराबाद व नीमच वग़ैरहपर अपना क़ब्जाकर हमारी पलटनें राजधानीमें मय खज़ानों व सरो-समानके आज देहलीमें जमा हो रही हैं।

नाना साहब—चाहे कुछ भी हो, हमें तो रविवार ३१ मई तक मौन रहना ही चाहिये। फाँसीके फन्देके अपने गलेमें पड़ चुकनेके बाद अमरकीर्ति मङ्गल पाण्डेयने अपने घरवालोंको कोई सन्देश न दे, अपने मुल्कको जो यह सन्देश दिया कि 'सम्पूर्ण भारतको मेरा खून देकर कहना कि तुम्हें इसकी सौगन्ध है, कि जब तक इन विदेशियोंसे इस अपमानका बदला न ले लेना, चैनसे न बैठना। अगर मरना है तो मर्दोंकी मौत मरो, कुत्तोंकी तरह जञ्जीर घसीटते हुए नहीं'। हमें अपने कार्योंसे इसे चरितार्थ करना है और इसके लिये निश्चित समय तक छातीपर पत्थर रखकर शान्त बने रहना ही मुझे उचित प्रतीत होता है। जानते हो, उतावलेपनमें आकर विना सोचे-समझे किये गये कामका नतीजा बड़ा ही खतरनाक होता है।

अज़ीमुल्ला—लेकिन मुल्कका उबलता हुआ खून क्या इतना होने पर भी यों ही ख़ामोश रह सकेगा?

नाना साहब—भले ही इसमें मानिन्द ज्वार-भाटेके उबाल आ जाय, लेकिन मैं तो कानपुरमें स्थित अंग्रेज-अधिकारियों ही नहीं, अपितु उनके बाल-बच्चों तकके हृदयोंमें तब

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तकके लिये यह विश्वास दिला देना चाहता हूँ कि नाना साहब उनका केवल परमहितैषी ही नहीं है, बल्कि उनके भाई-बन्धुओंसे भी अधिक उनका समीपवर्ती है।

अज़ीमुल्ला—लेकिन क्या आपके मानिन्द ही बाबा साहब, बाला साहब, राव साहब या तात्त्याटोपे भी तब तकके लिये चुप-चाप बैठे रह सकेंगे ?

नाना साहब—अगर नहीं बैठे रह सकेंगे, तो उन लोगोंको भी मङ्गलकी दशाको प्राप्त होना पड़ेगा। यद्यपि मङ्गलके महाबलिदानके प्रति मेरे हृदयमें सम्मान है और जबतक भारत जीवित है, इसकी सन्तति श्रद्धापूर्वक पाण्डेयका गुणगान कर अपनेको कृतकृत्य समझती रहेगी, किन्तु उतावलेपनमें आकर किया गया उनका यह उत्सर्ग चतुर अंग्रेज़ोंको अपने ऊपर आनेवाली विपत्तिसे सावधान कर देनेमें पर्याप्त सहायक सिद्ध हुआ है।

अज़ीमुल्ला—आख़िर मुल्कको आज़ादी दिलानेकी ख़ातिर हुज़ूर ने आगेके लिये क्या सोच रखा है, जो होना था वह तो हो ही गया।

नाना साहब—वकील साहब ! आप इससे अनभिज्ञ नहीं हैं कि ज़रा ज़रासे सन्देह पर अंग्रेज अधिकारी अपनी सेनामें भर्ती हुये भारतीय सैनिकोंसे हथियार रखवा रहे हैं एवं हमारे प्रचारकोंको नाना प्रकारकी यातनायें दे रहे हैं, जिससे बहुतेरे अपनी जान बचानेकी ग़रज़से अपने गुप्त भेद तक बता देते हैं; जिसके कारण हमारे साधन पङ्गु होते चले जा रहे हैं।

अज़ीमुल्ला—सब कुछ होते हुये भी आज़ादीकी लड़ाई तो अब

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहीं ही रुक सकेगी। फिर भी आगेके लिए सोचना उतना सरल नहीं है, जितना पहले था।

नाना साहब—वकील साहब। इसे मैं भी मानता हूँ; अतः जिस व्यक्तिपर राष्ट्रके असंख्य व्यक्तियोंका विश्वास हो, वह उतावलेपनमें आकर ग़ैर जिम्मेदार व्यक्तिके समान यदि कार्य करने लगे, तो निष्प्रयोजन ही लाखों प्रतिभाओंका संहार हो जाय, एवं देशकी असंख्य सम्पत्तिका उसके पागलपनके कारण बिनाश हो जाय। वकील साहब! जिस प्रकार बुरी नियतसे किये गये सत्कर्मका फल भी बुरा होता है, उसी प्रकारसे सद्भावनाके होते हुए भी अविवेकके साथ किये गये सत्कार्यका परिणाम भी बुरा होता है। वस्तुतः अविवेक किसी सद्वस्तुमें छिपे विषके समान होता है, जिससे हमें इस स्वाधीनता संग्रामके पुनीत अवसर पर पग-पगके लिये बचे रहना होगा।

अज़ीमुल्ला— हमारे बुज़ुर्गोंने मुल्कके मामलेमें इसे समझते हुये भी जो भूलें की हैं, उनके लिये भी मानिन्द कर्ज़ अदा करनेके मय सूद दर सूदके हमें कुर्बानियाँ तो करनी ही होंगी, बिना इसके तो छुटकारा होनेवाला नहीं ही है।

नाना साहब—वकील साहब! आपसे यह बात छिपी नहीं है कि मैं हमेशासे इस सिद्धान्तपर विश्वास रखता रहा हूँ कि राष्ट्रको विदेशियोंके चङ्गुलसे मुक्ति दिलानेमें कमसे कम धन-जन एवं अन्य आवश्यक उपकरणोंका संहार हो, लेकिन अब तो समयसे पहले विद्रोहाग्निके धधक उठनेसे इसकी सम्भावना ही नहीं है, फिर भी ऐसे उपायोंको तो सोचना ही है, जिससे सफलता हाथ लगे। यह मानी हुई बात है कि भारतीयोंका एक प्रबल वर्ग अंग्रेज़ोंका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समर्थक बन चुका है; इसके अतिरिक्त अपने विश्वस्त व्यक्ति भी स्वार्थ सिद्ध्यर्थ अपने प्रमुख व्यक्तियोंको अंग्रेज़ों-के हवाले करके हमारी शक्ति-क्षयके कारण हो रहे हैं। बिहारके वारिस अली वग़ैरहका अंग्रेज़ोंके द्वारा फाँसीपर लटकाया जाना इसीको प्रमाणित करता है। इसी प्रकार बिहारके तीन मौलानाओंका दुश्मनोंकी क़ैदमें चला जाना भी हमारे लिये एक विकट समस्या हो रही है। अलीकरीम का किसी प्रकारकी चालबाजीसे अंग्रेज़ोंकी क़ैदसे निकल भागना हमें ऐसी बातोंसे हमेशा चौकन्ना रहनेके लिये आगाह करनेवाला है। हमारी तूफानी शान्तिमें भी यही रहस्य है।

अज़ीमुल्ला—हुज़ूर! इससे तो हमें यही सबक़ लेना है कि प्लासी व बक्सरकी लड़ाइयोंमें हमारे बुज़ुर्गोंसे जो ख़ौफ़-नाक भूलें हुईं, उनसे हम बचें।

नाना साहब—अवश्य, प्लासी व बक्सरके बादके हमारे पूर्वजोंने तो अपनी उन भ्रान्तियोंसे होशियार होनेकी सोची थी लेकिन किया क्या जाय, तब हम एकमत होकर दुश्मनके सामने आनेमें आनाकानी कर रहे थे। नाना फड़नवीस व सुल्तान हैदरअलीने तत्कालीन मुग़लसम्राट्से साँठ-गाँठकर अंग्रेज़ोंको भारतसे बाहर खदेड़नेका प्रयत्न किया था, परन्तु इस योजनाको आपसी प्रतिस्पर्धाके कारण तत्का-लीन भारतीय प्रमुखशक्तियोंका सहयोग न मिल सका। यद्यपि टीपू सुल्तान अपनेको भारतके प्रमुख हिन्दू समाज का समर्थक बनानेमें असमर्थ था, फिर भी उसने नेपोलियन से सहयोग प्राप्तकर अंग्रेज़ोंकी भारतीय प्रभुसत्ताको समाप्त करनेका प्रयत्न किया, परन्तु उसकी योजना सफल न हो सकी। बादमें बेलोरका विद्रोह भी सामने आया, प

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंग्रेज़ोंको भारतसे खदेड़नेमें सफलता न मिल सकी, फिर भी हमें यह कहनेमें सङ्कोच नहीं है, कि भारत एक जीवित राष्ट्र है; अतः इस विशाल राष्ट्रके जागरूक सपूत अधिक दिनों तक अंग्रेज़ोंकी हिरासतमें बन्द करके नहीं रखे जा सकते ! यदि भगवान्की कृपा हुई तो असफलतायें भी हमें प्रेरणायें प्रदान करेंगी। प्रायः बाधक तत्त्व भी यथावसर साधक होते देखे जाते हैं; मानिन्द जल एवं अग्निके संयोगके आविर्भूत भापके। अतः मुझे अंग्रेज़ोंके होशियार हो जानेके बाद भी विश्वास है कि मङ्गल पाण्डेयका महाबलिदान वेकार नहीं जायगा। (इधर-उधर देखते हुए) मैं आत्मपरीक्षणार्थ एकान्तकी अभिलाषा करता हूँ।

(अज़ीमुल्लाका प्रस्थान)

नाना साहब—(स्वगत) मानव अपने मूलभूत अधिकारोंके रक्षार्थ आदिम कालसे ही सङ्घर्षरत रहता आया है और यही तथ्य प्रारम्भसे अब तकके स्वातन्त्र्य युद्धोंकी पृष्ठभूमिमें है। वस्तुतः आसन्न भविष्य हमारी विकट अग्नि परीक्षाका है, अतः अपने अदम्य साहससे हमें आगे बढ़कर यह सिद्ध कर देना है कि हम उसी प्रकार स्वाधीनतापूर्वक जीनेके अधिकारी हैं, जिस प्रकार अंग्रेज़ अपने देश इङ्गलैण्डमें, प्रभो ! भारतीय उपासना-गृहोंमें होनेवाली स्वातन्त्र्य सङ्ग्रामकी सफलताकी प्रार्थनायें स्वीकार करो।

(सहसा नेपथ्यसे गीत सुनाई पड़ती है।)

गीत

परीक्षाका अवसर आसन्न,—
जिसके सम्मुख नहीं दीखते अक्सर अपने भिन्न !
रमते योगी वहते पानीके समान स्वच्छन्द अमानी,
जन्म-मृत्यु घटना अवमानी, निस्पृह आज़ादी-सेनानी,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कहीं सुना जाता है क्या अन्तर्द्वन्दोंसे च्छन्न ? ।।परीक्षा० ।।
गति जीवनका चरम लक्ष्य हो, निष्क्रियताको कहीं न थल हो,
रूढ़िवादका आशु विलय हो, राष्ट्रधर्मकी सदा विजय हो;
मित्र बने मानवताके प्रतिरोधी हों उच्छिन्न ।।परीक्षा०।।
मातृभूमिके लिए अनागस, हों, हम समझें जीवन शाश्वत,
प्रलोभनोंके जाल बिछाकर, बाँध न सकें हमें अरि पटुतर,
हो न सके स्वातन्त्र्य युद्धका तारतम्य विच्छिन्न ।।परीक्षा०।।

(सहसा एक अनुचरका सामने आकर अभिवादन करना)

नाना साहब—क्या है ?

अनुचर—देव ! फाँसीकी सज़ा पाये अंग्रेजोंकी जेलमें बन्
फ़ैजाबादके मौलवी अहमदशाहका एक विश्वस्त अनुचर
आपकी सेवामें उपस्थित होना चाहता है ।

नाना साहब—उसे ससम्मान यहाँ आनेकी सूचना दो ।

अनुचर—जो आज्ञा । (प्रस्थान)

(आगन्तुकका सामने आकर साभिवादन मौलवी साहबका पत्र नाना साहबको देना)

नाना साहब—(पत्रको देखनेके बाद आगन्तुकसे) इसे पढ़कर सुनाओ ।

आगन्तुक—(पत्र पढ़ता है ।) पेशवा साहब ! यह बड़े अफ़सोसक बात है कि मौक़ेसे पहले ही बारिकपुरमें आज़ादीके लि शहादतका ताँता शुरू हो गया, लिहाज़ा ऐसी हालतमें य मुमकिन नहीं है, कि हम जब चाहें, आपसी ताल्लु क़ात क़ायम रख सकें व जङ्गे आज़ादीकी कामयाबी मुतल्लिक़ जेलमें होनेसे रायमशविरा कर सकें । ऐसी सूरत आपके लिए लाज़िम है कि ज़बानी तौरपर हमें बता कि ऐसे कौनसे रास्ते अख़्तियार किये जाँय; जिनसे जल्द

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जल्द आज़ादी हासिल हो सके। इस वक्त फ़िरङ्गियोंने बज़रिये अपने भेदियों मुल्क़में फूट फैलानेकी व अपने ही देशी भाइयोंके ज़रिये यतीमोंके लूटनेकी जो जालें फैला रखी हैं, उससे तो आप वाक़िफ़ ही हैं। फिर भी मैं आपको इतमीनान दिलाना चाहता हूँ कि आगराके लोगों और लखनऊके शाही ख़ानदान व रुहेल सरदारोंने, जिनसे मेरे ताल्लुक़ात अब तक क़ायम हैं, दुश्मनोंकी इस क़दर-की कमीनी चालोंको अपने यहाँ न चलने देनेकी ख़ातिर मुस्तैदीसे कारवाइयाँ करनी शुरू कर दी हैं।

नाना साहब—(ध्यानावस्थित रहनेके पश्चात्) बहादुर! तुम जाकर जनाब मौलवी साहबसे मेरी ओरसे अर्ज़ करना कि हम सही रास्ते पर हैं, इसलिए जिस परमेश्वरने हम भारत-वासियोंमें स्वाधीन होनेकी भावना उत्पन्न की है, वही यथावसर हमारा पथ-प्रदर्शन भी करेगा व आपको जीवनदान भी करेगा। अच्छा होगा, यदि तुम मेरा यही सन्देश बेगम हज़रत महल व रुहेले सरदारोंके नेता बहादुर ख़ाँ तक भी पहुँचा सको।

आगन्तुक—जैसा हुक्म!

(प्रस्थान)

नाना साहब—(स्वगत) प्रभो! तुम्हारी अभिलाषायें पूर्ण हों।

(सहसा नेपथ्यसे कोलाहलका होना एवं पेशवाका प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तृतीय दृश्य

स्थान—कानपुरसे कुछ दूर गङ्गातटपर अवस्थित ए सुरक्षित स्थान।

(पेशवा नाना साहब, रानी लक्ष्मीबाई तथा तात्त्या टोपे गम्भीर विचार-विमर्शमें संलग्न दीखते हैं।)

लक्ष्मीबाई—अननुशासित व्यक्तियोंका उतावलेपनमें आक किया गया उत्सर्ग आज जितना घातक हो रहा है, उतन शायद ही किसी अन्य स्वाधीनताके लिए होनेवाले वृह उपक्रमके प्रति हुआ हो। इस समय इलाहाबादको केन् बनाकर सिखोंकी सहायतासे अंग्रेज़ोंके भारतीय शासन ध्यक्षने जो मोर्चेबन्दी क़ायम कर रखी है और जो व हमारे लिए सानिन्द सिर दर्दके हो रही है, उसे इसीक परिणाम समझा जाना चाहिये। ह्वीलर-द्वारा तीव्र गति यहाँ होनेवाली अंग्रेज़ोंकी क़िले बन्दीको भी इसीका पि णाम समझा जायगा।

तात्त्या टोपे—ठीक कहती हो देवि! हमारे नेताओंने सम रखा था कि अंग्रेज़ोंकी सेवाओंमें संलग्न भारतीय सिप हियोंको अपने पक्षमें करके उनकी महती सहायता अंग्रेज़ी राज्यको भारतसे विदा कर देंगे; किन्तु खेद है उनकी इस धारणाका आज विपरीत परिणाम दृष्टिगो हो रहा है। इसका प्रमुख कारण है अनुशासनहीनत कारण अव्यवस्थाकी प्रबलता! मैं तो आज यही समझने बाध्य हो रहा हूँ कि हमारी आँखोंपर पट्टियाँ पड़ी हुई जिनकी वजहसे अपने नेत्र लक्ष्यको देखनेमें अक्षमसे रहे हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाना साहब—तात्या, स्वातन्त्र्य संग्रामके सञ्चालनार्थ मनमाने व्यक्ति अब गढ़कर तय्यार भी तो नहीं किये जा सकते ! अब तो जितने उपलब्ध हैं अथवा भविष्यमें प्राप्त हो सकेंगे, उन्हें ही लेकर हमें स्वातन्त्र्य संग्रामका शकट आगे बढ़ाना है। मैं मानता हूँ कि हमें फतिङ्गोंके समान प्रज्वलित आगमें कूदकर जल मरनेवालोंकी नहीं, अपितु स्वाधीनताके सजग प्रहरीके समान मरते दम तक जागरूक रहनेवालोंकी सर्वाधिक आवश्यकता है। इसके सिवा हमें यह भी नहीं भूलना है कि जो कार्य अपने नहीं करने योग्य होते; उन्हें आदर्शप्रधान व्यक्ति भी आर्थिक परिस्थितियोंसे पीड़ित होकर करनेको बाध्य हो जाते हैं; अतः हमें यह जानतेहुये भी कि जितने विदेशी हम करोड़ों भारतीयोंपर शासन कर रहे हैं, उतने लाख दो लाख बैलोंको भी न हाँक सकते, स्वातन्त्र्य-संग्रामके रवैयोंपर गम्भीरतापूर्वक विचार करते हुये आगे बढ़ना होगा। ऐसा न हो कि अपने ही गोले अपने ही व्यक्तियोंके विचारोंके विकृत हो जानेके कारण अपने ऊपर बरसने लग जाँय !

लक्ष्मीबाई—श्रीमन्त यथार्थ कहते हैं, हमारे नेताओंके मनोबल भीषण परिस्थितियोंमें भी विचलित न हो सकें, इसके लिये इस सिद्धान्तको सदैव सम्मुख रखना होगा कि क्षणिक सफलताओंको देख हम मदान्ध एवं विलासप्रिय न हो जाँय तथा क्षणिक असफलताओंको देख कर्त्तव्य-पथसे कायरोंकी भाँति भाग न खड़े हों एवं लम्बी अवधितक चलनेके कारण सैनिकोंकी जीविका-समस्यायें भी आँखोंसे ओझल होने देने योग्य नहीं हैं; इसके साथ ही अंग्रेज़ोंकी प्रचार-पटुता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के साथ ही साथ उनसे यदि हम राजनीतिक एवं सैनिक दोनों मोर्चोंपर जमकर लोहा लेनेमें समर्थ हो सके, तभी सफलताकी आशा रख सकते हैं। अतः हमें इसके लिये अपने इतिहासकी घटनाओंपर गम्भीरता पूर्वक दृष्टिपात करनेकी सर्वाधिक आवश्यकता है. ताकि हम प्रत्येक परिस्थितिमें अपने मनोबलका सन्तुलन रख सकनेमें समर्थ रह सकें।

नाना साहब—भारतीय इतिहासमें इस प्रकारके युद्धके उदाहरण शायद ही मिल सके, क्योंकि इसकी वैज्ञानिक व्यापकता भारतमें हुये अन्य संग्रामोंसे अधिक व्यापक है। पानीपतकी संग्रामभूमिकी तीनों लड़ाइयोंमें यद्यपि मैदान विदेशियोंके हाथ रहे, लेकिन एक ही स्थानपर उनके सीमित होनेके कारण, भारतीय देशद्रोहियोंकी विदेशियोंको सहायता मिलनेपर भी, हमारी चेतनापर उनका व्यापक प्रभाव न पड़ सका, बल्कि हमारा क्षात्र उत्तरोत्तर सङ्घर्ष-समर्थ ही होता गया, परन्तु वर्तमान स्वातन्त्र्य संग्रामके राष्ट्र-भरमें फैले होनेसे, तथा अत्यधिक प्रमुख स्थलोंमें बिखरे होनेसे एवं अंग्रेज़ोंके भारतकी परिस्थितियोंसे पूर्ण परिचित होनेके कारण भी बैरकपुर व मेरठके काण्डके समयसे पूर्व घट जानेसे हमारे सामने अनेक असाधारण कठिनाइयाँ आ गई हैं। यदि ऐन ३१ मईको भारतमें सर्वत्र विद्रोह होता तो विदेशी सत्ताकी समाप्ति निश्चित प्राप्त थी, किन्तु आजकी स्थितिमें तो हम यह भी निर्णय कर सकनेमें असमर्थसे हो रहे हैं कि अंग्रेज़ोंके कौन-कौनसे मोर्चे असम्बद्ध एवं असमर्थ हैं, जिनपर सर्वप्रथम प्रहार करके आगेके लिये हम अपनी स्थितिको सुदृढ़ बना सकें।

तात्त्या टोपे—देव ! इससे पहले कुछ अपने विषयमें भी सोचना-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समझना है; कहीं ऐसा न हो कि हम किसी पात्रमें जल भरनेमें व्यस्त रह जाँय और अंग्रेज अपनी जालसाजीसे उसकी पेनीमें ही सूराख कर दें।

नाना साहब—आखिर ऐसी कौन सी बात है तात्या ?

तात्या टोपे—श्रीमन्त ! इतिहास बतलाता है कि तैमूरलङ्क, नादिरशाह व अहमदशाह अब्दाली हमारे हक़में ही नहीं मानवताकी प्रगतिके लिये भी बहुत बुरे थे और क्लाइवका भारतमें आगमन तो मानिन्द धूमकेतुके था, फिर भी यदि हम उनसे सीख ले सकते तो हमारी प्रगतिमें बड़ी सहायता मिलती। क्या यह सच नहीं है कि जिस तैमूर या नादिरकी एक आवाज़में दिल्ली जैसी महानगरीको मटियामेट कर डालने की क्षमता थी, उन्हींकी दूसरे आवाज़में उसके रोकनेकी भी प्रबल सामर्थ्य थी ?

नाना साहब—(स्मित भावसे) तुम्हारे कहनेका आशय यह है कि वर्तमान भारतके स्वातन्त्र्य संग्रामके सञ्चालनार्थ तैमूर या नादिरकी पुनरावृत्ति करनेवाला कोई महानेता चाहिये ?

लक्ष्मीबाई—बर्बर शक एवं हूणों जैसी उद्धत जातियोंमें मानवताका विकास करनेवाली भारतीय प्रकृति तैमूर या नादिर जैसे व्यक्तियोंके अनैतिक कृत्योंसे घृणा करती है तात्या !

तात्या टोपे—यदि घृष्टता क्षम्य हो तो एक बात कहूँ।

नाना साहब—(स्मित भावसे) तुम प्रचण्ड शक्तिके साथ ही उत्कृष्ट देशभक्तिके भी आगार हो, इसके साथ ही विकटसे विकट परिस्थितियोंमें भी और कहींसे भी, दुश्मनोंके घेरोंको तोड़कर निकल जानेमें प्रत्युत्पन्न बुद्धि भी हो,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन्हीं सबसे तो प्रेरित होकर कोई अनहोनी बात नहीं कहना चाहते हो ?

तात्त्या टोपे—जी नहीं, बात कुछ और ही है !

नाना साहब—क्या राजनीतिके भी मँजे खिलाड़ी बननेका तो इरादा नहीं है ?

तात्त्या टोपे—एक आज्ञाकारी सैनिकका राजनीतिसे क्या मतलब ?

नाना साहब—आजकी अप्रत्याशित परिस्थितिमें ऐसे सैनिकके लिये भी राजनीतिके व्यवहारवादमें दक्ष होना अत्यावश्यक है तात्त्या !

तात्त्या टोपे—मेरी ऐसी धारणा है कि एक आज्ञाकारी सैनिकका जीवन कुम्हारके आँवेमें परिपक्व घड़ेके समान होना चाहिये, किन्तु राजनीतिकी पाठशालामें प्रवेश पानेके लिये तो कच्चे घड़ेके समान व्यक्तियोंकी आवश्यकता होती है जो परिस्थितियोंके अनुसार यथावसर सरलतासे मुड़ते रहें। खेद है कि आप मेरेमें इस अद्भुत गुणका सर्वथा अभाव पावेंगे।

लक्ष्मीबाई—तुम्हें जो कुछ भी कहना हो श्रीसन्तसे निःसंकोच कहो, यदि उसमें धृष्टता जान पड़ेगी, तो कमसे कम पेशवा महाराज उसे क्षन्तव्य तो समझ ही लेगें। (सभी स्मित भावमें दीखते हैं।)

तात्त्या—अगर सम्राट् बहादुरशाह जैसे निर्बल एवं अव्यवस्थित मस्तिष्क महानेताके स्थानपर तैमूर या नादिर जैसा कोई तेजस्वी महानेता हमारे संग्रामका नेतृत्व करता होता तो हवाका रुख किसी दूसरी ही दिशामें होता !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाना साहब--अभी कुछ दिनों पहले तक तो तुम भारत-सम्राट् के बड़े समर्थक थे ?

तात्त्या टोपे--उनके प्रति असीम श्रद्धा रखते हुये भी परिस्थिति-की गम्भीरताने मुझमें परिवर्तन कर दिया है।

नाना साहब—तुम्हें इस विषयमें यह समझकर सन्तोष करना होगा, कि भारत-सम्राट् हमारे राष्ट्रिय संग्रामके लिए सम्पूर्ण देशवासियोंको एक सूत्रमें आबद्ध करनेके प्रतीकमात्र हैं, अतः गुण-दोषोंका विश्लेषण कर उनके स्थानपर किसी दूसरेको समासीन करनेकी चर्चा तक चलाना, हमारी सैनिक पराजयसे भी भयानक राजनीतिक असफलता होगी। यह सही है कि जिन तैमूर या नादिर जैसे ताना-शाहोंकी एक आवाज़में हजारोंके कत्लेआमकी ताक़त थी, उन्हींकी दूसरी आवाजोंमें उसे रोकनेकी भी क्षमता थी, किन्तु आज न हमें ऐसे निरंकुश अधिनायकोंकी आव-श्यकता है, न कलिङ्गके रक्तपातसे प्रभावित हो क्षात्रपराङ्मुख एकछत्र अशोककी ही, क्योंकि आजकी परिस्थिति उन अतीतोंसे सर्वथा भिन्न है।

लक्ष्मीबाई—श्रीमन्त आजकी परिस्थितिमें आखिर किसकी आवश्यकता समझते हैं ? मेरी तो ऐसी ही धारणा है कि रक्ततर्पणके बिना स्वाधीनताके दर्शन खपुष्पवत् असम्भव ही होते हैं।

नाना साहब—इसमें किसी भी विवेकशीलके दो मत नहीं हो सकते, फिर भी क्या हमारे लिए यह विचारणीय नहीं है कि जहाँतक सम्भव हो, हमारे उपक्रममें कमसे कम रक्त-पात हो और अर्जित स्वाधीनता विवादास्पद न बनती हुई चिरस्थायिनी हो। निश्चित समयसे पूर्व विद्रोहाग्निके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धधक उठनेसे हमारा प्रयास लँगड़ा हो गया है और सम्राट् बहादुरशाहके विषयमें कुछ करना इस लँगड़े प्रयास पर मानिन्द कुल्हाड़ा मारनेके होगा; इसके साथ ही हमें इसे भी समझ लेना है कि तैमूर या नादिर अथवा अशोकके वंशोंमें उनके द्वारा उपार्जित साम्राज्य चिरस्थायी रह न सके। (कुछ सोचते हुए) आजके भारतके लिए चाणक्यका मेधावी मस्तिष्क तथा चन्द्रगुप्तकी शौर्यपूर्ण सङ्गठन-शक्ति अपेक्षित है, किन्तु किया क्या जाय ऐसे नरपुङ्गवोंको प्रकट करनेवाली प्रकृति आज अपने प्रतिकूल है !

लक्ष्मीबाई—श्रीमन्त ! हमें फिर भी यह न भूलना चाहिए कि हम विपरीत प्राकृतिक परिस्थितियोंसे प्रतिक्षण सङ्घर्ष करते हुए भी जीवन-पथमें अग्रसर हो रहे हैं। सर्दीसे बचावके लिए हमारा वस्त्र धारण करना, भूखसे बचावके लिये परिपक्व अन्नका उपयोग तथा आतप व वर्षासे बचावके लिए गृह निर्मित करना, इसके प्रमाणके लिए साधारणतया पर्याप्त होंगे। इसी प्रकार यदि हमें अंग्रेज़ोंका जुवा अपने कन्धोंसे उतार फेंकना है, तो प्राकृतिक नियमोंसे सदैव सङ्घर्षरत रहकर अपने अन्तरालमें ही चाणक्य एवं चन्द्रगुप्तका अनुसन्धान करना होगा।

तात्त्या टोपे—देवि ! हम भले ही अपने अन्तरालमें चन्द्रगुप्त एवं चाणक्यके अनुसन्धान करते रहें, लेकिन यदि बादशाह 'ज़फ़र' कविताकी उपासना करते करते दुश्मनोंकी हिरासतमें चले गये तो उस समय क्या होगा ? इस प्रश्नके समाधानके लिए मेरी समझसे तो यही आवश्यक प्रतीत होता है कि किसी भी प्रकार समझा-बुझाकर दिल्लीपतिको अभीसे अपने नियन्त्रणमें रखा जाय, अन्यथा अपने ही

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व्यक्तियोंके विश्वासघातके कारण ऐसी घटनाओंका घटित होना कोई असम्भव भी नहीं है, जिनसे सम्राट् शत्रुके शिविरमें मानिन्द एक वन्दीके चले जानेको वाध्य न कर दिये जायँ।

नाना साहब—भविष्यके पर्देमें छिपे इस रहस्यको इतनी स्पष्टतासे व्यक्त करनेके लिए तुम्हें अनेक साधुवाद हैं तात्या! फिर भी इस विषयमें तुमसे मेरा यही कहना है कि ज्यों ही सम्राट्को नियन्त्रणमें रखनेकी बात प्रकट होगी, अधिकांश मुसलमान इस्लामको राजनीतिक शस्त्र वना, यही कहना प्रारम्भ कर हमारे दलसे वाहर निकल शत्रुपक्षमें चले जायेंगे, कि पेशवा भारतमें मराठा-साम्राज्य स्थापित करनेके लिए षड्यन्त्र कर रहा है। अतः ऐसा करना हमारे लिए मानिन्द राजनीतिक मौतके होगा। इसलिए भविष्यमें चाहे जो भी हो; हमें इसकी चर्चातक नहीं करनी है।

(सहसा एक सैनिकका सविनय प्रवेश)

लक्ष्मीबाई—क्या है ?

सैनिक—देवि ! अंग्रेज़ सेनापति ह्यूरोज झाँसीकी ओर बढ़ता हुआ चला आ रहा है, अतः ऐसी भयानक स्थितिमें आपका अन्यत्र रहना वहाँकी क्षण-क्षणमें परिवर्तित होनेवाली परिस्थितिके प्रतिकूल होगा। इसलिए आप यथाशीघ्र यहाँसे प्रस्थान करें। क्योंकि मेरे द्वारा मुहम्मद गौस खाँने आपके लिए यही सन्देश भेजा है।

लक्ष्मीबाई—कानपुरसे प्रस्थित होनेके लिए ही तो मैं भगवती गङ्गाके तटपर स्थित थी, अच्छा ही हुआ जो तुम यहीं आ गये। (शिष्टाचार प्रदर्शनोपरान्त प्रस्थान)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाना साहब—तात्त्या ! नारीका केवल सेवा एवं सहिष्णुतामें ही पुरुषोंसे श्रेष्ठ होना स्वाभाविक है, परन्तु छबीली सैनिक एवं राजनीतिक प्रतिभामें भी, हम दोनोंसे बढ़कर है। यही नहीं, यदि अपने ही व्यक्तियोंने ऐन मौक़ेपर विश्वासघात न किया, तो झाँसीका मोर्चा अंग्रेज़ोंके लिये सैनिक एवं प्राशासनिक दृष्टियोंसे केवल सिरदर्द ही न होगा, अपितु इस स्वाधीनता संग्रामका निर्णायक तक हो सकता है। तात्त्या ! यदि दिल्लीकी सत्ताकी नकेल बादशाह 'ज़फ़र'के हाथमें न होकर मनुबाईके हाथमें होती, तो हमें पराधीन रखनेके लिए फ़िरङ्गियोंके सभी प्रयत्न बेकार जाते। एक अकिञ्चन ब्राह्मणकी पुत्रीके रूपमें छबीलीको आविर्भूतकर विधाताने भारतको जो शक्ति प्रदान की है, वह केवल आर्यावर्त ही नहीं, विश्वके लिए बेजोड़ है !

तात्त्या टोपे—श्रीमन्त ! इस विषयमें मेरा भी ऐसा ही विश्वास है। रह गई अब अपने स्वाधीनता संग्रामके सर्वाङ्गीण केन्द्रोंकी बात; इसके सन्दर्भमें मेरा यही निवेदन है कि दिल्ली, कानपुर, झाँसी तथा लखनऊ यदि इन चार मोर्चों-पर भी हमारी शक्ति अबाधगतिसे एक साथ अंग्रेज़ोंको पराजित करती रह गई, तो अपने हिमायतियोंके सभी साधन यथावसर उपलब्ध होते रहनेपर भी, फिरङ्गियोंको अपने बोरियेबिस्तर समेटकर सीधे इंग्लैण्डको प्रस्थान करनेको बाध्य होना पड़ेगा। मौलवी अज़ीमुल्लाख़ाँने ऐन मौक़ेपर विदेशी शासकों व भारतीय देशभक्तोंकी सैनिक सहायताका जो आश्वासन प्राप्त किया था, सम्भवतः उसकी भी आवश्यकता न होती; पर किया क्या जाय अपना सर्वप्रमुख दिल्लीका मोर्चा ही बड़ा कमज़ोर है, मेरी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समझसे तो वहाँकी नकेल मिर्ज़ा मुग़लसे लेकर मुहम्मद बख्तख़ाँको सुपुर्द कर देनेसे भी उसमें कोई विशेष सरगर्मी न आ सकेगी, क्योंकि बख्तख़ाँके उच्च कुलमें पैदा न होनेसे उससे दिल्लीमें स्थित प्रमुख सरदार प्रभावित न हो सकेंगे।

नाना साहब—यदि विचार किया जाय तो दिल्लीसे तगड़े लखनऊ व अवध प्रान्तके अन्य मोर्चे होंगे, क्योंकि किसानोंका जितना सक्रिय सहयोग इस प्रान्तमें स्वातन्त्र्य संग्रामको मिला है, उतना भारतमें अन्यत्र कहीं नहीं उपलब्ध हो पाया। यद्यपि लखनऊका नवयुवक नवाब बिरजिस कद्र अभी अपरिपक्व बुद्धिका है, फिर भी वहाँके राजमहलमें अत्यधिक लाड़-प्यारसे पली उसकी माता बेग़म हज़रत महल अंग्रेज़ोंकी दग़ाबाज़ीसे पूर्ण परिचित है, इसके अतिरिक्त सैनिक सङ्गठनके समान व्यावहारिक राजनीतिकी गति-विधियोंकी सूक्ष्म विवेचना करना भी जानती है। अतः यदि दिल्ली, कानपुर व झाँसीमें अङ्गरेज़ोंकी शक्तियाँ उलझायी जा सकें तो लखनऊकी रेज़ीडेन्सी व मच्छी महलमें फिरङ्गी शक्तिको आबद्ध करके वह अपनी प्रत्युत्पन्न बुद्धिसे दुश्मनोंको छठीके दूध याद करा देगी। जान पड़ता है कि इन्हीं सब बातोंको ध्यानमें रखते हुए लार्ड कैनिङ्ग अभी से व्यूह रचना करके प्रयागमें आकर जम गया है और एकसे एक बढ़कर सैनिक अधिकारियोंका वहाँ जमावड़ा कर रहा है। अतः अवधपर भरोसा करो।

तात्या टोपे—हमारी दृष्टि सर्वाधिक दिल्लीकी ओर आकर्षित हो रही है देव! मुझे वहाँका राजनीतिक मोर्चा बड़ा कमज़ोर प्रतीत होता है क्योंकि वस्तुतः वह बेग़म ज़ीनत महलके हाथमें है जिनपर मिर्ज़ा इलाही बख़्त जैसे दुश्मनके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हिमायतीके जादूके किसी भी समय चल जानेकी सम्भावना बढ़ सकती है। आजकी परिस्थितिमें दिल्लीके जय-पराजयका व्यापक प्रभाव भारतीय मनोबलपर पड़ने वाला है। (सहसा नेपथ्यसे कोलाहल होता है और एक नाविक सैनिक आकर पेशवाको नमस्कार करता है।)

नाना साहब—यह कैसा कोलाहल हो रहा है ?

नाविक सैनिक—देव ! कानपुरकी वेश्या अजीजन जिस तन्मयतासे हथियारबन्द हो, घोड़ेपर सवार होकर स्वाधीनता-संग्रामका मार्ग-प्रशस्त कर रही है, उससे आज़ादीके दीवानोंमें निश्चित समयसे पूर्व ही उबाल आ जाना चाहता है; अतः कृपया उसके शान्त्यर्थ गन्तव्य स्थलपर यथाशीघ्र चलें, नौका तैयार है।

नाना साहब—तात्या ! यद्यपि अनेक स्थानीय देवियाँ इस राष्ट्रीय कार्यमें तन्मयतासे सँल्लग्न हैं, तथापि वेश्या होते हुये भी अजीजनने अपनी ज्वलन्त राष्ट्रभक्तिसे यह सिद्ध कर दिया है कि चरित्रबल किसीकी बपौती नहीं है, अपितु व्यक्तिगत संस्कारपर आधारित है।

तात्या टोपे—श्रीमन्त ! जिन्हें हम उपेक्षणीय समझते हैं, प्रभुकी कृपासे उनके अन्दर भी ऐसी विलक्षण प्रतिभायें न्यस्त हैं, जिनके विकाससे राष्ट्र ही नहीं, अपितु विश्वको प्रगतिकी प्रेरणायें प्राप्त हो सकती हैं; किन्तु आज इसपर विचार करनेके लिये हमारे पास समय ही कहाँ है ? जब कि उपेक्षित समझ फेंके गये फलविशेषकी गुठलीमें बीज बनकर, वृक्षके माध्यमसे अपरिमित फलोंके उत्पन्न करनेकी क्षमता निहित है, तो सामान्यतया ज्ञान एवं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्मेन्द्रियोंसे युक्त मानवकी महत्ताकी तो बात ही निराली है।

नाना साहब—(चिन्तित मुद्रामें) हिन्दू समाज एवं संस्कृतिके लिये क्या यह भी साधारण कलङ्ककी बात है कि उसकी अधिकांश संख्या अस्पृश्य समझी जाकर हमारे लिये अभिशाप वन रही है। (नाविक सैनिककी ओर देख) हाँ, चलो !

नाविक सैनिक—जैसी आज्ञा।

(सबका प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन]

चतुर्थ दृश्य

स्थान—दिल्लीका बाहरी भाग।

(दो नागरिक आपसमें बातचीत कर रहे हैं।)

प्रथम नागरिक—फ़िरङ्गियोंसे फाँसीकी सजा पाये फ़ैजाबादके मौलवी अहमदशाहका सूबेदार दिलीपसिंहके जरिये आजाद किये जानेसे समूचे अवध व आगराके मोर्चे चमक उठे हैं, इसके अलावा, गर्चे हिन्दोस्तानके कोने-कोनेसे बाग़ी पल्टनें आ-आकर देहलीमें जमा हो रही हैं, फिर भी रुहलोंकी पल्टनकी आज कैसी सख्त ज़रूरत महसूस-की जा रही है, इसे 'पयामे आज़ादी' के वरक़पर देखो व इसीकी आवाज़में सुनो। इसमें साया हुये चन्द कलमें इस क़दर हैं—'भाइयो ! देहलीमें फ़िरङ्गियोंके साथ आ-ज़ादीकी जङ्ग हो रही है, अल्लाहकी दुआसे हमने उन्हें जो पहली शिकस्त दी है, उससे वे इतने घबरा गये हैं,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जितना किसी दूसरे वक़्त दस शिकस्तोंसे भी वह न घबराते। बेशुमार हिन्दोस्तानी बहादुर यहाँ आ-आकर जमा हो रहे हैं। ऐसे मौक़ेपर आप अगर अपने यहाँ खाना खा रहे हों, तो हाथ यहाँ आकर धोयें। हमारे कान इस तरह उधर लगे हुए हैं, जिस तरह रोज़ेदारके कान मुअज्ज़िनकी अजानकी तरफ़ लगे रहते हैं। हम आपकी तोपोंकी आवाज़ें सुननेके लिए बेचैन हैं। हमारी आँखें आपके दीदारकी ख़ातिर प्यासी सड़कपर लगी हुई हैं। आपका फ़र्ज़ है कि फ़ौरन् आइये। हमारे घर आपके हैं। बिना आपकी आमदके बहारे गुलाबके फूल नहीं आ सकेंगे'।

दूसरा नागरिक—अजी, रुहेलोंकी बहादुरीको देखते हुए यह तो कहना ही पड़ेगा कि जिधर ही उनकी फ़ौज पहुँच जायगी, मैदान अपने हाथ रहेगा। लेकिन इस वक़्त देहलीके मोर्चेकी नकेल सँभालनेवाले मिर्ज़ा मुग़ल क्या इसे ग़वारा कर सकेंगे कि कोई रुहेला सिपहसालार आकर हमपर हावी हो। मैं समझता हूँ कि रुहेला सिपहसालार मुहम्मद बख़्त ख़ाँ वह फ़ौलादी सिपहसालार है जिसके सामने फिरङ्गियोंका कोई भी बड़ासे बड़ा सिपहसालार अकेले नहीं टिक सकता, फिर भी वह मामूली खान्दानमें पैदा हुआ है, इसलिये डर लगता है कि कोई बड़े घरानेका सिपहसालार जाकर शाहनशाहेहिन्दको यह पट्टी न पढ़ा दे कि जिन रुहेलोंने बादशाह शाहआलमकी आँखें तक निकलवा लीं, उन्हींकी औलादका यक़ीन कर आप ख़ुदकुशी न करें। मुमकिन है कि बादशाह सलामत परले दर्ज़ेके दीनदार बख़्त ख़ाँ का यक़ीन कर भी लें, लेकिन उनके सलाहकारका खासकर मलिकाये हिन्द बेग़म जीनतमहल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रुहेलोंके पैर देहलीमें जमने न देंगी। पयामे आज़ादीमें इस क़दरके समाचारके साया होनेसे क्या होता जाता है!

पहला नागरिक—अम्याँ, बातें तो ठीक कहते हो, लेकिन आगे चलकर वग़ैर रुहेलोंकी इमदादके देहलीका महफ़ूज़ रहना भी मुश्किल है। हाँ, एक बात और है, वह यह कि चालाकी गड़े मुर्दोंके उखाड़नेमें नहीं है, बल्कि सामने मुँहवाये खड़ी वाकयातोंको मद्दे नज़रकर उनसे छुटकारा पाने में है, लिहाज़ा मुझे पूरी उम्मीद है कि ख़ुदाकी फ़ज़्लसे रुहेलोंको देहलीमें अपने फ़र्ज़ अदा करनेका पूरा मौक़ा मिलेगा, क्योंकि शायर होनेकी वज़हसे बादशाह सलामत बड़ी दूर तककी सोचते हैं।

दूसरा नागरिक—दरअसल बात तो यह है, कि जिसके सर-पर ताज होता है उसकी दिमाग़ी कूवतका अन्दाज मामूली इन्सान नहीं लगा सकते, सिर्फ़ शायरकी बात यहाँ नहीं सोचनी चाहिये। बादशाह सलामतने बहुत सोच समझकर यह ख़बर 'पयामे आज़ादी'में साया कराया होगा कि जङ्गे आज़ादीका मैदान बिल्कुल सामने ही है इसलिये इसके मुतल्लिक़ हमारा ख़ामोश रहना ही ज्यादा बेहतर होगा।

पहला नागरिक—जङ्गे आज़ादीका नतीजा चाहे जो भी हो, लेकिन यह तयशुदा बात है कि हिन्दोस्तान ग़ैर मुल्क वालोंकी मातहदी हर्गिज़-हर्गिज़ नहीं क़बूल कर सकता और चाहे जिस क़दरसे हो, किसी न किसी सूरतमें जङ्गका सिलसिला हमेशाकी ख़ातिर चालू रहेगा। (नेपथ्यसे सहसा शाहनेशाहे हिन्द गाज़ी ज़िन्दाबादकी आवाज़ सुनाई पड़ती है एवं जन समूह सामने आता दिखलाई पड़ता है।)

पहला नागरिक—यह देखो, जहाँपनाहके दीदारकी ग़रज़से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह लोग लाल क़िले की ओर बढ़े चले आ रहे हैं। अच्छा होगा कि हम भी सच्चे मानी में इनके हमराही बनें।

(दोनोंका भीड़में जाकर शामिल हो जाना)

बादशाह—(जनसमूहको लाल क़िलेके सामने गगनभेदी नारे लगाते देख, झरोखेसे दर्शन देते व अभिवादन स्वीकार करते हुये) हिन्दुस्तानके फ़र्ज़न्दगान ! तुम्हारी आज़ादीकी तमन्नाको रोकनेकी ताक़त तुम्हारे सिवा किन्हीं और इन्सानोंके पुतलोंमें नहीं है, लिहाज़ा तुम्हें अपने क़दम फूंक-फूंककर आगे बढ़ाने होंगे, क्योंकि फ़िरङ्गियोंके काले हिमा-यतियोंके जाल तुम्हें पाबन्द करनेकी ख़ातिर चारों तरफ़ बिछे हुये हैं। ऐसी सूरतमें कोई भी ऐसा काम न करो, जिससे तुम्हारे ही इन्सान दुश्मनकी ढाल बननेको मज-बूर हो सकें। ख़ुदाकी फ़ज़लसे रुहेला सरदार मुहम्मद बख़्त ख़ाँ मानिन्द फ़रिश्तेके तुम्हें हासिल हुआ है, इसलिये तुम्हारा फ़र्ज़ है कि जङ्गे आज़ादीमें कामयाब होनेकी ख़ातिर हर तरीक़ेसे उसके पञ्जोंको मज़बूत करो। आज कल तुम्हारे ही कामोंकी ज्यादतीसे मेरी सेहत ठीक नहीं रहा करती, इसलिये बग़ैर शोर गुल किये जाकर मुश्तैदीसे अपने कामोंपर जुट जाओ। ख़ुदा तुम्हें अपनी मक़सदमें कामयाबी अता फ़रमावे, अल्लाहो अकबर।

(जनसमूहका 'ग़ाज़ियोंमें बू रहेगी जब तलक ईमानकी, तख़्ते लन्दन तक चलेगी तेग़ हिन्दोस्तानकी' का नारा लगाते हुये प्रस्थान तथा झरोखेके बन्द होते होते गुप्त मार्गसे अज़ीमुल्लाका सामने आकर शाहंशाहको कोर्निश करना।)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अज़ीमुल्ला—ज़िल्ले इलाही शाहंशाहे हिन्द ग़ाज़ीको अज़ीमुल्ला कोर्निश अदा करता है।

बादशाह—(चौंककर) अज़ीमुल्ला ?

अज़ीमुल्ला—जहाँपनाह !

बादशाह—एक बएक यहाँ कैसे टपक पड़े ?

अज़ीमुल्ला—अलीजाहके पुश्तैनी वज़ीर लखनऊके नवाबकी बेग़म हज़रत महल शाही ख़िदमतमें हाज़िर होना चाहती हैं।

बादशाह—(मुस्कराते हुये) क्यों तुम तो पेशवा दरबारके वकील थे, अब लखनऊ के वज़ीर नवाबके ख़ान्दानकी वकालत भी तुमने अख़्तियार कर ली है ?

अज़ीमुल्ला—(स्मित भावसे) जहाँपनाह, जबसे आज़ादीका जङ्ग छिड़ा है मेरी वकालत भी चमक उठी है, लिहाज़ा कानपुर व लखनऊ दोनोंमें अक्सर मेरी ज़रूरतें पड़ा करती है।

बादशाह—बड़ी खुशीकी बात है। जाकर बाइज्ज़त बेगम साहिबाको यहाँ हाज़िर होनेकी इत्तला करो।

अज़ीमुल्ला—जैसा हुक्म।

(बेगम हज़रत महलका सामने आकर बादशाहको कोर्निश करना)

बादशाह—तशरीफ़ रखिये बेगम साहिबा; जिस लखनऊके वज़ीर नवाबके ख़ान्दानकी शान-शौकतका कोई ठिकाना न था, उसीकी बेग़मको आज इस हालतमें देखकर मुझे ताज्जुब होता है !

हज़रतमहल—आलीजाह ! आज मुल्कका हमसे यही तक़ाज़ा है कि हममें और उसके और इन्सानोंकी रहन-सहनमें कोई फ़र्क़ न हो। दर असल आज न कोई नवाब है न राजा,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बल्कि, हम सभी हिन्दुस्तानी फ़िरङ्गियोंके गुलाम हैं, इस लिये हमारा फ़र्ज़ है कि चाहे जैसे हो, हम अपने सरसे गुलामीके काले धब्वे मिटा डालें।

बादशाह—इन्शाअल्लाह, दख़ुाकी मर्ज़ीसे मुल्कके वाशिन्दगानके दिलोंमें आज़ादीकी जो तमन्ना जाग उठी है उसे ताक़तवर बनाना आपलोगोंके बूतेकी बात है। मेरी तो ठीक वैसे ही हालत है जैसी घरके किसी सिने राशिदा इन्सानकी होती है, जिसमें न हाथ डुलानेकी ताकत होती है न पैर डुलानेकी, फिर भी ख़ान्दानके लोग उसे ज़रूरतसे ज्यादा मर्तवा अताकर घरके तमाम काम उसीके नामपर चालू रखते हैं। हूबहू यही हालत आपके शाहनशाह 'ज़फ़र' की भी है। यह किसी क़दर कलम तो चला सकता है लेकिन तलवार नहीं चला पाता, गर्चे आज़ादीके शहीद बननेकी तमन्ना इसे गलाये डालती है।

हज़रतमहल—जहाँपनाह अपने बारेमें चाहे जो भी समझते हों, लेकिन आज़ादीके सिपाही इस क़दरकी बातें आपके मुतल्लिक़ ख्वाबमें भी नहीं सोचते। ज़िल्ले इलाहीको शायद यहाँसे बाहर जानेका कभी मौक़ा नहीं मिला, इसीसे ऐसा समझ रहे हैं, लेकिन मुल्कके कोने-कोनेमें घूमकर आज़ादीकी अलख जगानेवाले महसूस कर रहे हैं, कि आलीजाहके नाम व नीले झण्डेकी करामातें रङ्ग ला रही हैं। हिन्दोस्तानके दिलसे फिरङ्गीराज ख़तम हो चुका है और चारों तरफ़ 'ख़ल्क ख़ुदाका मुल्क़ बादशाहका' का नारा बुलन्द हो रहा है। ३१ मई सन् १८५७ के बादसे चालू होनेवाले वक्तमें इस नारेने करोड़ों इन्सानों पर जो जादूका असर किया है उसके सामने हजारों तम्बीहें फ़ीकी सी जँचती हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इससे पहले जब मैं आलीजाहकी ख़िदमतमें नाना साहब वग़ैरहके साथ हाज़िर हुई थी, तबसे मुल्क आज इतना आगे बढ़ चुका है, कि तब इसकी उम्मीद तक नहीं की जा सकती थी। ऐसी सूरतमें यह कैसे मान लिया जाय कि ख़ुदावन्द हममें मानिन्द एक बड़े बूढ़े के हैं, इसके सिवा आपकी और कोई हस्ती ही नहीं है। रह गई क़लम व तलवार की बात; इसके मुतल्लिक़ मेरा यही कहना है कि हुज़ूरे आलाकी क़लम आज तलवारसे हजारगुनी क़रामात दिखला रही है, जिसे मुल्कका बच्चा बच्चा महसूस करता है। हमारे दुश्मन भी इसे जान ख़ौफ खाते हैं।

बादशाह—ख़ुदाकी शान निराली है! इसीसे तो मैं भी अपनी इस ढलती उम्रमें दुनियाके बड़ेसे बड़े बादशाहोंमें अपना सिर्फ़ नाम ही नहीं दर्ज करा रहा हूँ, बल्कि आज़ादीकी लड़ाईमें इमदाद पानेकी ग़रज़से ईरान, अफ़गानिस्तान व ईराक़के बादशाहोंसे बादशाहकी हैसियतसे ख़तके ज़रिये ताल्लुक़ात भी क़ायम कर रहा हूँ। जब कि मेरा हुक्म करोड़ों हिन्दोस्तानियोंके सर माथों पर है तो मेरे कामको सभी जायज भी मानेंगे, ऐसी ही मुझे उम्मीद है।

हज़रत महल—क्या इसमें भी किसी शको सुबहेकी गुञ्जाइश है ज़िल्ले इलाही?

अज़ीमुल्ला—हर्गिज़ नहीं।

बादशाह—अच्छा आप लोग अब यह बतलावें, कि आगेकी लड़ाईके बारेमें आप लोगोंने क्या तय किया है?

हज़रत महल—जहाँपनाह इसे तो जानते ही हैं कि हर मोर्चे पर आज़ादीके दीवाने जमकर फिरङ्गियोंसे बदला ले ही रहे हैं और हुज़ूरे आलाको अपना बादशाह मान इन्त-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज़ामी मुहक़मे हमारे दिमाग़दार सिपाहियोंने संभाल ही लिये हैं, लेकिन डराने-धमकाने व लालच देकर अपनी ओर हमकौमोंको मिलानेके दुश्मनोंके जो तरीक़े हैं, उनकी वजहसे हम परेशान हैं। अगर इससे हम बच पाते तो इसमें कोई शक नहीं, कि मैदान हमारे हाथ रहते।

बादशाह—किया क्या जाय, अपनी हालत तो यह है कि मानिन्द जोंकों इस क़िलेके अन्दर भी फ़िरङ्गियोंके हिन्दोस्तानी गुमास्ते चिपके हुये हैं और देहलीको छोड़कर हिन्दोस्तानके हर एक कोनेमें चक्कर लगानेकी अपनेमें ताक़त ही नहीं रह गई है, वर्ना इसके लिये भी रैयतको होशियार किया जाता। फिर भी इसकी ज़रा भी फ़िक्र किये बिना हमें आगे बढ़ते रहना है। 'होता है वही, जो मंज़ूरे ख़ुदा होता है।' आप लोगोंने तवारीख़में पढ़ा होगा कि वजरिये अपने चाचा कामरान एक बरसके अकबर गोले उगलती तोपोंके सामने बैठाये गये थे, फिर भी बदतरीन अहमक़ कामरानकी यह हरक़त मुग़ले आज़म बननेवाले अकबरका बालतक बाँका न कर सकी। इसी क़दर अगर ख़ुदा हमें आज़ाद देखना चाहेगा, तो फ़िरङ्गियोंकी बड़ीसे बड़ी हरकतें भी बेकार हो जाँयगी और अपनेमें एड़ी से चोटी तक खामियाँ होते हुए भी हम ख़ुदसर होकर दुनियाँमें बाइज़्ज़त रह सकेंगे। (कुछ सोचते हुए) आप लोगोंको इतना तो मालूम है न, कि हमारे क़दम बड़े ही पाक रास्तेकी ओर बढ़ रहे हैं ?

हज़रत महल—हाँ;

अज़ीमुल्ला—ज़रूर;

बादशाह—तो आप लोगोंको इतना और समझ लेना चाहिये

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कि इसका नतीजा भी भला ही होगा। आप लोगोंने तवारीख़में पढ़ा होगा कि शाहंशाहे हिन्द हुमायूँने चित्तौड़की महारानी कर्मवतीकी राखीकी लाज रखनेकी ख़ातिर शेरख़ाँके हमलेकी रत्ती भर भी परवाह न कर चित्तौड़को गुजरातके बादशाह बहादुरशाहके पञ्जेसे छुड़ाया; इसका शुरुआतका अञ्जाम यह हुआ कि शाहनशाह हुमायूँको हिन्दोस्तानकी सल्तनतसे हाथ धोकर खानाबदोशके मानिन्द मय अपने ख़ान्दानके फ़ारसमें पनाह लेनी पड़ी, लेकिन ख़ुदाने चन्द सालके बाद इस सवाबी कामके बदले पहलेसे कहीं ज्यादा मरतबेके साथ हिन्दोस्तानकी सल्तनत उन्हें फिर बख़्श दी। यही नहीं, बल्कि हुमायूँके ईमानका नूर उनकी औलाद अकबरमें जिस शानके साथ चमका, वह दुनियामें शायद ही और कहीं देखनेको नसीब हुआ हो।

हज़रत महल—आलीजाह बिल्कुल सही फ़रमा रहे हैं।

अज़ीमुल्ला—ख़ुदाबन्द का कहना बिलकुल सच है। लेकिन हमारे दुश्मनोंके हिमायतियोंके लिये तो इस क़दरकी अनहोनी बात मानिन्द मौतके समझी जाती होगी।

बादशाह—जो भी हो, पर आप लोगोंको यह भी क़यास करना ही चाहिये कि अगर ख़ुदा हमारे अच्छे कामके बदलेमें इम्तहान लेनेकी ग़रज़से हमें फ़िलहाल उसका बुरा अंजाम दे, तो भी हमारा इससे भागना खुद अपने ही हक़में बुरा होगा। अगर यह भी मान लिया जाय कि इस लड़ाईमें हम आगे चल कर नाकामयाब हो गये, तो भी यह नज़ीर तो हमारी औलादके सामने रहेगी ही, कि हमारे बाप-दादोंने अपनेको मिटा भले ही दिया लेकिन सर रहते फिरङ्गियोंका गुलाम बनकर जीते रहना मञ्ज़ूर नहीं किया और इसीको

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बाइज़्ज़त महसूस करती हुई वह किसी न किसी दिन आसानीसे आज़ादी हासिल कर लेगी। जानते हो, मङ्गल व गौतम मरकर भी जिन्दे हैं। इङ्गलिस्तान व रूसकी लड़ाई-में क्रीमियाका मैदान सिर्फ़ इन्हीं दोनोंकी जवाँमर्दीसे फ़िरङ्गियोंके हाथ रहा, लिहाज़ा ऐसे इन्सानोंके साथ दग़ा करके अंग्रेज़ोंने ख़ुद ही अपनी कब्रें खोदनी शुरू कर दी हैं। यह तो सभीको मालूम है कि मङ्गलको फाँसी देनेके बाद फिरङ्गियोंने १७ व ३४ नम्बरकी पल्टनकी पोशीदा काररवाइयोंकी बातें जान उससे हथियार ही नहीं रखवा लिये, बल्कि ३४ नम्बरकी पल्टनके सूबेदारको इनका अगुआ समझ उसे फाँसीपर लटकवा दिया, जिनसे कि मेरठ; लखनऊ व अम्बालेमें अंग्रेज़ोंके बंगलेतक जला डाले गये लेकिन तुर्रा यह कि फिरङ्गियोंके खोफिये इन्हें जलाने वालोंके पते तक न लगा सके व ईद जैसे पाक त्यौहारोंपर मज़हबी तअस्सुब फैलानेके मंसूबे भी पस्त हो गये।

अजीमुल्ला—आलीजाहने एक क़ुदरती शायरका दिलोदिमाग़ पाया है, इसलिये जितनी दूरतककी आप सोच सकते हैं उतनी दूरतक हमारी पहुँच नहीं हो सकती। इसीसे तो हम आपकी इमदादकी हमेशा ख्वाहिशें रखते हैं।

ज़ीनत महल—मैंने तो जहाँपनाहकी सदारत में रहते हुए मरते दम तक आज़ादीकी लड़ाई चालू रखनेकी ख़ातिर कसम ले रखी है। इसलिए किसी भी सूरतमें मैं अपनी ओरसे इसकी ख़ातिर कुछ उठा न रखूँगी।

बादशाह—फ़ैयाज़ ख़ुदाके बरकत दस्तकी साया आज़ादीके हम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सभी सिपाहियोंके सरोंपर हमेशा रहे, मेरी तो पाक परवरदिग़ारसे सोते-जागते हरवक्त यहीं मिन्नत रहा करती है।

अज़ीमुल्ला—हम आज़ादीके दीवाने जहाँपनाहको अपने मुरब्बी समझ मैदाने जङ्ग व इन्तज़ामी मामलोंमें भी अपनेको महफ़ूज़ महसूस करते हैं। हमारे पेशवा साहबने कानपुरपर क़ब्ज़ाकर आलीजाहके हरे झण्डेके नीचे रह पेशवाई तख़्तपर अफ़रोज़ होते वक्त पहले पहल जो जहाँपनाहकी वफ़ादारीमें १०१ तोपकी बाढ़ें दगाईं व देहली दरबारमें नज़रें भेजवाईं; वे इसके मुतल्लिक़ बेमिशाल नज़ीरे हैं।

हज़रत महल—मैं भी अपनेको ख़ुदावन्दकी वफ़ादार महसूस करती हुई ज़िन्दगीकी सफ़र तय करनेकी आदी होती जा रही हूँ।

बादशाह—काश, खुदाकी मर्ज़ी वफ़ादारीकी इस ख़ुशीको हमेशाकी ख़ातिर हिन्दोस्तानकी रियाया पा सकती............(नेपथ्यसे कोलाहल सुनाई पड़ते ही बादशाहके नेत्रोंसे इशारा पाकर सतृष्ण दृष्टिसे इनकी ओर देखते गुप्तमार्गसे दोनोंके प्रस्थित होते ही, स्वगत) या ख़ुदा! मुझे पता नहीं है कि जिन तवारीख़के लिखनेवालोंने तैमूरी नस्लके बहादुरोंकी मौत मरनेका डङ्केकी चोटपर एलान किया है, वे इस नामके बहादुर इन्सानके मुतल्लिक़ आगे चलकर क्या लिखेंगे, फिर भीं अगर क़यामतके रोज़ मैं तेरी इनायतसे उन क़िस्मतमन्द इन्सानोंकी क़तारमें खड़ा हो पाया, जो अपने मुल्ककी आज़ादीकी ख़ातिर किसी भी सूरतमें अपनी जाँ निसार कर पाते हैं, तो मैं इस दुनियाँमें अपना आना मुक़म्मल कामयाब समझूँगा। या रहमतुल्लिल आल-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मीन! इस नाचीज़ इन्सानपर तेरी मेहर हो! (सहसा मलिकाये आज़म ज़ीनत महलको सामने देख, प्रकट) ज़ीनत! मैंने ग़ैर मुल्कोंके बादशाहोंसे जङ्गे आज़ादीमें इमदाद पानेकी ख़ातिर ताल्लुकात कायम किये हैं लेकिन अभी तक इसका कुछ भी नतीजा नहीं निकला।

ज़ीनतमहल—बादशाहसलामतको मालूम होना चाहिये कि दुनियावी इन्सान ताक़तवरोंके मददगार हुआ करते हैं। लिहाजा जङ्गे आज़ादीके अञ्जामपर ही हमें बाहरी इमदादकी भी उम्मीद रखनी होगी। आप इस ख़बरको सुनकर ख़ुश होंगे, कि जिस क़दर मुहम्मद बख़्त ख़ाँके यहाँ आनेसे देहलीके हर क़िस्मके मोर्चोंमें सरगर्मी आगई है, व रुहेलोंके कामयाब होने से बरेली-बदायूँ, शाहजहाँपुर व मुरादाबादमें हरे झण्डे लहरा रहे हैं, उसी तरह आज शहर आगरा व उसके इर्द-गिर्दके शहर व इलाक़े और अलीगढ़, इटावा, जौनपुर, आजमगढ़ और क़रीब-क़रीब तमाम अवध हरे झण्डेके नीचे हैं। पेशवा नाना साहब, लक्ष्मीबाई, लियाक़त अली, मौलवी अहमदशाह व कलकत्तेमें बैठे लखनऊके अली नकी ख़ाँके बारेमें तो आप जानते ही हैं, लेकिन आपको यह जानकर ताज्जुब होगा कि अंग्रेजी फ़ौजकी गोलोंकी मारने उनके हिमायती सिख सिपाहियोंको भी बनारसमें आज़ाद हिन्दू-मुसमानोंकी फ़ौजमें मिलनेको मज़बूर कर दिया। तीनों लोकोंसे न्यारी काशीकी बलिहारी ही इसे समझना चाहिए क्योंकि ख़्वाबमें भी मुझे इनसे ऐसी उम्मीद न थी। इसके सिवा बाबा गोरखनाथका गोरखपुर भी जमकर फिरङ्गियोंसे लोहा ले रहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बादशाह—खुदाकी शान निराली है। (सहसा नेपथ्यसे गीत सुनाई पड़ते ही दोनोंका ध्यान इधर ही केन्द्रित हो जाता है।)

गीत

जाग रहा है हिन्दुस्तान।

नहीं बना सकते सम्मुख अरि अपना हमें निशान,
सह न सकेंगे वार छिपे रिपुओंके वश अज्ञान।
जीना है तो जीयेंगे मानिन्द एक इन्सान,
मरना है तो मिट जायेंगे, रख स्वदेशकी आन।
भारतीय धन कितना लूटे रिपु-दल दस्यु-समान;
कोहनूरके नूर बिना, इससे हैं हम अनजान!
चमके गत संघर्षोंमें, ले निज आयुध, रण-ठान,
लौटाने हैं कोहनूर सँग धन, असि-अरि-शिर-तान।
नन्दकुमार माँगते निज-रिपु-उष्ण-रक्तका दान,
प्लासी-बक्सर-बेलोर-कण-कणमें गूँज रहे रण-गान।
आजादीके लिए व्यथित मङ्गल-भारतमय प्राण,
बुला रहे हैं अपने पथपर, हमें दिखा निज शान।

(आलोक)

[पटाक्षेप]

तृतीय अङ्क

प्रथम दृश्य

स्थान—कानपुर नगरका बाहरी भाग।

(पेशवा नाना साहब तथा अज़ीमुल्ला ख़ाँ गम्भीर मुद्रामें परस्पर विचार-विमर्श करते दीख रहे हैं।)

अजीमुल्ला—हुज़ूर! यह बड़ी ख़ुशीकी बात है कि जालन्धर,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फ़िलौर तथा लुधियानेकी देशी पल्टनें अंग्रेज़ी सङ्गीनोंकी परवाह किये बिना देहलीमें दाख़िल हो गईं और मुहम्मद बख़्त ख़ाँकी सदारतमें रहकर मुश्तैदीसे अपने फ़र्ज़ अदा कर रही हैं। हमारे इस सूबेके हज़ारों इन्सान जो पञ्जाबमें बस गये थे, सिर्फ़ इस बिनापर निकाल बाहर किये गये हैं, कि अंग्रेज़ोंके फ़ौलादी क़िले पञ्जाबको भी ये लोग बलवाइयोंका बारूदख़ाना न बना डालें। (कुछ सोचते हुये) अगर अम्बाला व देहलीके बीच पटियाला नाभा व झींदकी सिख रियासतें न होतीं तो, दुश्मनोंको देहलीकी ओर ताकना तो दूर रहे अपने बोरिया-बिस्तर समेटकर सीधे अपने मुल्ककी राह पकड़नी होती।

नाना साहब—महाराज रणजीतसिंह जब तक लाहौरके शासक थे, पञ्जाबमें अंग्रेज़ोंकी दाल नहीं गली, लेकिन उनके अस्त होते ही इन दुश्मनोंने उनका राज्य तो हड़प ही लिया, उनके नाबालिग लड़के दिलीपसिंहको इङ्गलैण्ड भेजकर ज़बरन् उसे ईसाई बना डाला, फिर भी आजके कमअक़्ल सिख दग़ाबाज़ फ़िरङ्गियोंके, मानिन्द बिरादरे वतनके हमराही बने हुए हैं। यद्यपि इन्हें भी अपनी ऐसी करनी का फल तो मिलेगा ही, किन्तु इसे भारतके दुर्भाग्यके सिवा और क्या कहा जाय? क्या हमारे लिए यह भी कम दुर्भाग्यकी बात है कि ईरानसे सन्धि हो जानेसे जो अंग्रेज़ी फ़ौजें चीनपर धावा करने जा रही थीं, कलकत्तेमें ही हमें दबानेको रोक ली गईं व कैनिङ्ग बम्बई, मद्रास एवं रंगूनकी सम्पूर्ण सेनाओंको भी वहाँ एकत्रित करके हमारी ओर बढ़ रहा है।

अजीमुल्ला—हुज़ूर, महाराज यशवन्त राव होलकर अंग्रेज़ोंसे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज़बर्दस्त मुहिम लेनेके बाद कमज़ोर पड़नेपर इमदाद पाने की ग़रज़से कभी महाराज रणजीतके यहाँ गये थे, लेकिन कोरे जवाब पानेके बाद ग़मग़ीन हो होलकरने साफ़ अलफ़ाज़में कहा था कि अपने घर इमदाद पानेकी ग़रज़से आये अपने भाईको जब आप ख़ाली हाथ लौटा रहे हैं, तो मैं भी आपसे कहे देता हूँ कि हमारे ख़ान्दानमें इन्दौरका राज्य बहुत दिनों तक क़ायम रहेगा, लेकिन आपकी वफ़ातके बाद पञ्जाबमें आपकी सल्तनत का क़ायम रहना तो दूर रहे, आपकी औलादको हिन्दोस्तानमें कहीं पनाह तक न मिल सकेगी। आज अगर राजा रणजीत सिंह होते तो इसे सच जान इतना कहते हुये दिल मसोस कर रह जाते, कि हे अकालपुरुष! जिस इन्सानकी जक़ातके सोनेसे अमृतसरका गुरुद्वारा व बनारसका विश्वनाथ-मन्दिर रातों-दिन इन्सानकी औलादकी आँखोंमें चकाचौंध पैदा करता रहता है, उसीकी औलादको अपने इतने बड़े मुल्क़में ठहरने तककी जगह न मिल सकी, यह किस पापका फल है। आप समझ लें, सिखोंको भी आगे चलकर इसी तरहकी मुसीबतें उठानी पड़ेंगी!

नाना साहब—राजा रणजीत सिंहने तो केवल एक यशवन्तरावको सैनिक सहायता नहीं दी, जिसके फलस्वरूप भगवान्ने उनकी सन्तानको इतना बड़ा दण्ड दिया, किन्तु प्रमुख सिख-सरदारों एवं राजाओंने भारत-सम्राट्के प्रतिनिधि ताजुद्दीनको ऐन मौक़ेपर हर तरहकी मदद देनेके विश्वास दिलानेके बाद भी, सम्राट् द्वारा भेजे गये अपने पास सहायतार्थ आये सैनिकोंको जिन निर्दय उपायोंसे मरवा डाला, उनके परिणामस्वरूप उन्हें परमेश्वर कौन सा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दण्ड देगा ! यही नहीं, मानवसृष्टिके अभूतपूर्व हत्यारे कर्नल नीलके इशारोंपर सिख सैनिक आये दिन जिस प्रकार निर्दयता पूर्वक हज़ारों भारतीयोंके वधिक बन रहे हैं, क्या विश्वनाथ इसे यों ही भूल जायँगे ? यद्यपि सती चौराघाटके जैसे अमानुषिक कार्य हमारे अपरिणामदर्शी सहयोगियोंके द्वारा भी कराये गये हैं, किन्तु इन्हें वाराणसी एवं प्रयागसे आये उत्पीड़ित प्राणियोंकी प्रतिशोध भावनाका ही कुपरिणाम समझा जायगा। सूबेदार टीकासिंह, शमसुद्दीन ख़ाँ, मुहम्मद अली अथवा ज्वालाप्रसाद आदिमेंसे यदि इसका किसीको भी पहले पता होता, अथवा मुझे नवाबगञ्जमें पहलेसे इसकी कोई भी सूचना होती, तो मैं कदापि ऐसी दुर्घटनाओंको न होने देता, यही नहीं, अपितु ज्वालाप्रसाद एवं बाबा साहबकी अदालत अथवा हुलास सिंहकी अदालत ऐसोंको दण्ड तक देती।

अज़ीमुल्ला—हुज़ूर ! फ़िरङ्गियोंको हमारे मुल्कपर हावी होनेका कोई भी जायज हक़ नही है, लिहाज़ा चाहे जिन भी तरीक़ोंसे हो सके, हम उनसे अपना पिण्ड छुड़ाना चाहेंगे। इसमें अजाब या सवाबका तो कोई सवाल ही नहीं है। दर असल हमें तो सिर्फ़ यही देखना है कि अगर हम कामयाब हुए, तभी ज़िन्दा रह सकते हैं, वर्ना लाखों हिन्दोस्तानियोंके साथ हमारा भी सफ़ाया हो जायगा, क्योंकि अंग्रेज़ कामयाब होनेपर जमकर अपना बदला चुकायेंगे। फ़िरङ्गियोंके ज़रिये इस वक्त होनेवाले हिन्दोस्तानियोंके क़त्ले आमको तो सिर्फ़ हमारी हिम्मत पस्त करनेका महज़ एक तरीक़ा भर समझना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(सहसा एक गुप्तचरका आकर नाना साहबको अभिवादन करना)

नाना साहब—कहो पञ्जाब, सीमाप्रान्त एवं दिल्लीके क्या समाचार हैं ?

गुप्तचर—श्रीमन्त ! फ़िरङ्गियोंने हिन्दुओंको मुसलमानों व मुसलमानोंको हिन्दू-सिखों एवं हिन्दू-सिखोंको आपसमें लड़ानेका अपना हथकण्डा जिस प्रचण्ड वेगसे प्रारम्भ किया है, उसका साधारण जनता पर साधारण, किन्तु प्रभावशाली व्यक्तियोंपर बड़ा करारा असर पड़ रहा है। माटगोमरीके कारनामोंसे तो आप अवगत ही हैं, अतः उसीके निर्देशानुसार फ्रेडरिक कूपरने २६ नम्बरकी भारतीय सेनाके प्रति अजनालेमें जो संहारक कृत्य किया, नीलके पाशविक अत्याचार भी उसके आगे फीके जँचते हैं। सिखोंकी तो बात ही छोड़िए, क्योंकि वे तो आजकल एनसनसे प्रभावित हो फ़िरङ्गियोंके मौसेरे भाई ही बने हैं, हिन्दू बनिये भी ६ प्रतिशत सूदपर कम्पनीको कर्ज़ देकर उसका राज्य भारतमें चिरस्थायी बनाना चाह रहे हैं, ताज्जुब तो यह है कि वहाँकी जनता भी इन बनियोंका अन्धाधुन्ध अनुकरण कर रही है। अपनी चालबाजियोंसे फ़िरङ्गी पेशावर एवं सीमाप्रान्तमें अपनेको निरापद बना चुके हैं, यह तो श्रीमन्तको मालूम ही होगा, लेकिन नया समाचार यह है कि उधरके मुसलमानोंको अपने हिमायती बनानेके लिए मुल्लाओंको कम्पनीकी ओरसे पर्याप्त आर्थिक सहायतायें एवं अन्य प्रचारके साधन प्रदान किये जा रहे हैं; जिनसे शाहनशाहे हिन्दके नामपर उन्हें कम्पनी सरकारका हिमायती बनाया जा रहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाना साहब—लखनऊकी बेग़म हज़रतमहलने अफ़ग़ानिस्तानके शाह अमीर दोस्त मुहम्मद ख़ाँके पास फ़िरङ्गियोंके विरुद्ध अपनी मददके लिये एवं सीमाप्रान्तके पठान सरदारोंके पास भारतीय स्वतन्त्र्य संग्राममें मदद पानेकी अभिलाषासे अपने दूत भेजे थे, दुःख है, इसका उनपर कोई भी असर न पड़ा। इसके अतिरिक्त सम्राट्की जाली घोषणाओंद्वारा उधरकी जनताको फ़िरङ्गियोंने अपने पक्षमें करनेका जो सफल प्रयत्न किया, उसके प्रतिकारके लिए दिल्लीके आम रास्तोंपर हाथीपर सवार होकर सम्राट्के स्वयं एलान करनेका भी जान पड़ता है, उधरके लोगोंपर कोई असर न पड़ा!

गुप्तचर—आप इसे तो जानते ही हैं, कि अपने देशबन्धुओंका निर्दयतासे प्राण हरनेवाला अजनालेका तहसीलदार, जहाँ प्राणनाथके नामसे विख्यात हो, वहाँके लोगोंके लिए यदि चाँदीके टुकड़ोंमें ही परमेश्वरके दर्शन हों, तथा धर्मविध्वंसक फ़िरङ्गी ही उनके हृदयके अधिपति हों, तो इसे सिवा अपने दुर्भाग्यके और किसे दोष दिया जाय?

नाना साहब—वह दिन भी आवेगा, जब ऐसोंको जयचन्द व अमीचन्दकी गतिको प्राप्त होना पड़ेगा। अच्छा, अब तुम जा सकते हो।

गुप्तचर—जैसी आज्ञा। (प्रस्थान)

अज़ीमुल्ला—हुज़ूर! इस वक्त देहली, कानपुर, लखनऊ व झाँसीमें जिस मर्दानगीसे फ़िरङ्गियोंका मुकाबला किया जा रहा है, उसी क़दर अगले साल भर तक भी रवैया चलता रहा तो बेड़ा पार है। काश, ऐन मौक़ेपर हिन्दुस्तानके बाहर कहीं किसी ग़ैर मुल्क़वालोंसे अंग्रेजोंसे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लड़ाई ठन जाती? जब मैं यूरोपके मुल्कोंका चक्कर लगा रहा था, तो इसके मुतल्लिक़ कुछ ख़ास-ख़ास मुल्कोंके सरदारोंसे मेरी जो बातें हुई थीं, जान पड़ता है उन्हें वे भूल गये, वर्ना, दुश्मनके दुश्मनोंको अपने दोस्त बनाकर हम अपनी गोटी लालकर सकते थे?

नाना साहब—खेद है कि इस समय विदेशोंसे अपना सम्बन्ध टूट सा गया है। जागरूक नेताओंकी कमीके कारण न हमारे घरेलू मोर्चे ही समर्थ हो सके, न बाहरी ही; और अब तो इतना समय भी नहीं है कि भारतीय स्तरपर जनताको सन्नद्धकर इसे युद्धोपयोगी बनाया जा सके! इस समय यदि हम और मोर्चोंको छोड़ झाँसी, लखनऊ, तात्त्याटोपे एवं कुँवरसिंहकी स्थितियोंपर भी विचार करें, तो स्पष्ट हो जायगा कि फ़िरङ्गियोंकी लगभग आधी शक्ति इधर ही फँसी हुई है। इसके अतिरिक्त मौलवी अहमद-शाह क़ैदसे निकलनेके बादसे फ़िरङ्गियोंके ऊपर मानिन्द यमदूतके वार कर रहा है। कैनिङ्गकी नाकके नीचे ख़ुद इलाहाबादमें ही ख़ुसरो बाग़के पास मौलवी लियाकत-अली जिस शानके साथ गद्दार सिखों व गोरखोंकी फ़ौजों-के सामने डटा है, उसे देख अनेक युद्धोंमें व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त अनेक अंग्रेजसेनापति तक दाँतों अङ्गुलियाँ दबा रहे हैं। अतः हतोत्साह होनेकी आवश्यकता नहीं है। (एक गुप्तचरका सामने आ नाना साहबको अभिवादन करना)

नाना साहब—कहो क्या समाचार है?

गुप्तचर—श्रीमन्त! नैपाल-युद्धके समय लखनऊके वज़ीर नवा-बने ढाई करोड़ रुपयोंसे कम्पनी सरकारकी सहायता की थी, उसीका बदला लेनेके लिए नैपाल-दरबारने तीन हज़ार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गोरखोंकी अतिरिक्त फ़ौज कम्पनीको दी थी, जो आजमगढ़ व जौनपुरके स्वातन्त्र्य संग्रामके नेता मुहम्मद हुसेन व बेनीमाधव, एवं नादिर ख़ाँकी तोपोंकी मारसे अपना रास्ता नापने लगी। अब पता चला है कि इसी पराजयसे व्यथित होकर नैपालसरकारने राणा जङ्गबहादुरकी अधीनतामें फ़िरङ्गियोंकी सहायताके लिए नव हज़ार गोरखे सैनिक और भेजे हैं, जो लखनऊपर शीघ्र धावा करेंगे; इसके साथ ही रुहेलखण्डके बरेली मण्डलके प्रबन्धक ख़ाँ बहादुर ख़ाँपर तथा आगरापर भी एक साथ धावा बोलनेकी गरज़से अंग्रेज़ अपनी पैंतरेबाज़ियोंमें संलग्न हैं, फिर भी मौलवी अहमदशाहने अपने ओजस्वी भाषणों व वीरोचित कार्योंसे इन अञ्चलोंमें जो जागृति पैदाकर दी है, वह आसन्न सङ्कटके सामनेके लिये पर्याप्त है। अवधके बारेमें तो यह स्पष्ट ही है कि वज़ीर नवाब शुजाउद्दौलाके बाद यह पहला अवसर है, जब कि वहाँकी प्रजा मय अपने शासकके विदेशियोंकी दासतासे मुक्त्यर्थ पूर्णतया सक्रिय है। अतः हमें अवधका भरोसा करना चाहिए।

नाना साहब—अवश्य; डलहौसीने सातारा, नागपुर, झाँसी, सम्भलपुर, जैतपुर, बघात और दक्षिणी उदयपुरके राज्योंको जाल व फरेबोंसे हड़पकर व बरारको निजामकी भयजनित स्वीकृतिसे हस्तगतकर जो अनैतिकता की, वह तो भुलाई भी जा सकती है; लेकिन उसने जिन हथकण्डोंसे अन्तमें अवधकी रियासतको हज़म किया, उसे मानवका दयार्द्र-हृदय प्रलयपर्यन्त भी न भुला सकेगा। नवाब वाजिद अलीकी विलासप्रियताका अनर्गल प्रचारकर एवं लखनऊ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दरबार-द्वारा अनेक असाधारण अवसरोंपर कम्पनीकी की गई आर्थिक सहायताओंको कृतघ्नता-पूर्वक तिलाञ्जलि देकर अंग्रेजोंने जिस प्रकार उन्हें नवाबीसे हटाया, वह भुलाने योग्य नहीं है; लेकिन उटरमने इसके प्रतिकार करने-पर, नृशंस सैनिकों-द्वारा जिस बर्बरतासे नवाबी महलोंको लुटवाया व बेग़मोंको उत्पीड़ित किया, उसकी तो स्मृति मात्रसे ख़ून खौल उठता है। सृष्टिके शाश्वत नियमानुसार शासन व शासक तो आते जाते रहेंगे, लेकिन अंग्रेज़ अपने ऐसे कृत्योंसे सदैव गोरी चमड़ीके होते हुए भी कालिमाके प्रतीक समझे जाँयगे।

अज़ीमुल्ला—हुज़ूर! काली करतूतवाले अंग्रेज़ोंके ऐसे कारनामों-के अञ्जाममें अल्लाहताला उनपर कहरकी बिजली तो गिरायेगा ही; लेकिन इन्सानियतके नाते हमारा यह भी फ़र्ज़ है कि हम लड़ाईके मैदानमें अंग्रेज़ोंको इसका बदला गोलोंकी मारोंसे दें। आप यक़ीन रखें, हिन्दोस्तानी नामर्द नहीं हैं।

नाना साहब—लज्जा, सङ्कोच एवं सम्भ्रम जिस नारी जातिकी स्थायी निधि हैं, उसपर अमानुषिक अत्याचार करनेवाले पशुओंके अवसानमें ही मानव-कल्याण है। (कुछ सोचते हुये, गुप्तचरसे) बहादुर! जाकर अवधके प्रमुख जन-सेवकोंको मेरा यह सन्देश दो कि शेष भारत तो यथाशक्ति आततायियोंसे इन अत्याचारोंके बदले लेनेमें प्रवृत्त है ही, लेकिन अगर अवधमें इन्सान रहते हैं, तो उनसे इन्सा-नियतका यह तकाजा है कि वे इस जीवन मरणके संग्राममें ऐसा शौर्य दिखावें, जिससे प्रभावित भावी इतिहासको

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह सगर्व स्वीकार करना पड़े कि सन् १८५७ के स्वातन्त्र्य युद्धमें अवध भारतमें सर्व प्रथम था।

गुप्तचर—श्रीमन्तकी महती आज्ञा शिरोधार्य है। (प्रस्थान)

अज़ीमुल्ला—हुज़ूर, डलहौसीका बाप जार्ज रैमजे कभी अपनी वीवीके साथ लखनऊ दरबारमें इस ग़रज़से पहुँचा था कि अपने सिपहसालारे आज़मके मर्तवेके मुताविक अपनी वीवीको शाही हरमोंमें भेज ज्यादा-से-ज्यादा ज़र हासिल करूँ; लेकिन लखनऊके वज़ीर नवावने–जिन्हें कम्पनीने सल्तनते मुग़लियासे अलहिदा करनेकी गरज़से ख़याली वादशाह बना दिया था—यह समझकर कि यह अंग्रेज़ अपनी वीवीको मेरे हाथ वेचना चाहता है, उसे हरमोंमें जानेसे रोक दिया। कौन जाने, उटरमके ज़रिये डलहौसी-ने वैसी वारदातें करवा अपने माँ-वापकी तौहीनके वदले लेनेकी न सोची हो ?

नानासाहव—मातृजातिके सम्मानको अपने प्राणोंसे भी अधिक महत्त्वका समझनेवाला व्यक्ति, 'जिसने तुम्हारी एक आँख निकाली, तुम उसकी दोनों आँखें निकालो'के सिद्धान्तमें यद्यपि विश्वास नहीं रख सकता और यद्यपि मैं व्यक्तिगत हिताहितके लिये समष्टिके संहारका घोर विरोधी हूँ तथापि मातृ-वर्गके प्रति हुए ऐसे अत्याचारोंके प्रतिशोधार्थ इसमें प्रवृत्त हो सकता हूँ। (अपने एक गुप्तचरको सामने आते देख) कहो क्या समाचार है ?

गुप्तचर—देव ! एलिफेन्स्टनने पश्चिमी भारतमें जिस दृढ़तासे अपने भारतीय सैनिकोंको नियन्त्रित कर रखा है, उससे वे हमारे कार्योंके प्रति अत्युत्कट आस्था रखते हुए भी खुल-कर योगदान करनेमें असमर्थ हो रहे हैं। वस्तुतः कोल्हा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुरकी असफलताका भी उनपर विपरीत असर हुआ है। सिन्धके भूतपूर्व शासक मीरोंके वंशज एवं गुजरात, काठियावाड़ व कच्छकी रियासतोंके अधिकारी, यद्यपि अनिश्चित स्थितियोंमें हैं, तथापि सैनिकों एवं जनवर्गका आकर्षण हमारी ओर है, लेकिन संग्राममें सक्रिय होनेमें इन्हें यह आपत्ति है कि यदि लड़ाई लम्बे अरसेतक चली तो हमारे आश्रितोंको कहींका भी ठिकाना न रह जायगा। इसके अतिरिक्त अङ्ग्रेजोंकी सामुद्रिक शक्तिका हौवा भी निकलसन व एडवर्ड्स जैसे अनेक युद्धोंमें व्यावहारिक अनुभवप्राप्त अङ्ग्रेज-सेनापतियोंके समान भयानक प्रतीत हो रहा है, फिर भी इन क्षेत्रोंमें अपनी छिट-फुट काररवाइयाँ तो चालू ही हैं।

नाना साहब—बहादुर! हमारे लिये अंग्रेजोंकी समुद्री शक्ति एवं उनके सेनापतियोंकी दक्षता उतनी कष्टदायक नहीं है; जितना सिख, गोरखों व पठानोंकी शक्तियोंके फ़िरङ्गियोंकी वशवर्तिनी होने की है।

गुप्तचर—देव! राजनीतिक दृष्टिसे गोरखे एवं सांस्कृतिक दृष्टिसे पठान तो हमसे कुछ दूरके हैं, लेकिन सिख तो हर हालतमें अपने होतेहुये भी आफ़तके परकाले हो रहे हैं। श्रीमन्तको यह तो ज्ञात ही होगा, कि कम्पनीकी ओरसे थानेश्वरकी कमान पटियाला राज्यने तथा कुरुक्षेत्रका मोर्चा झींदकी रियासतने सँभालनेका पापकर्म किया है?

नाना साहब—क्या किया जाय, जो हारता है वह अपनोंसे ही! यद्यपि आज अपने इन दोनों ऐतिहासिक युद्ध-स्थलोंके महत्त्व घट गये हैं, तथापि ऐसे शत्रु-पोषक कार्योंका तो अपनी स्थितिपर व्यापक प्रभाव पड़ने ही वाला है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अज़ीमुल्ला—हुज़ूर ! पञ्जाबी तो आज कुछ समझ ही नहीं सकते, लेकिन अगर गोरखे सर चार्ल्स नेपियरकी इस बातको समझ पाते कि,—'अगर मैं सिर्फ़ बारह सालकी ख़ातिर हिन्दुस्तानका बादशाह होता, तो समूचे हिन्दुस्तान ही नहीं, बल्कि पूरे नेपालको भी अंग्रेज़ी अमलदारीमें मिला लेता'-तो कमसे कम वे अपने मुल्कको तो इन जालिमोंसे महफ़ूज़ रखनेकी कोशिशें करते। रह गये पेशावारके इर्द-गिर्दके पठान जिन्हें फ़िरङ्गियोंके गोले आगे चलकर ठिकाने लगा देंगे।

नानासाहब—वकील साहब ! पतनोन्मुख प्रवृत्ति विवेक-शून्य हुआ करती है। (गुप्तचरकी ओर देख) तुम जा सकते हो।

गुप्तचर—जो आज्ञा (प्रस्थान)

(सहसा तात्त्याटोपेका आकर नानासाहबको अभिवादन)

नाना साहब—तुम्हें भी कुछ कहना है तात्त्या ?

तात्त्या—केवल यही, कि जीवन-मरणके झूलोंपर हमारे प्रयास अहर्निश झूल रहे हैं।

(सहसा नेपथ्यसे 'ग़ाज़ियोंमें बू रहेगी जब तलक ईमान की, तख़्ते लन्दन तक चलेगी तेग़ हिन्दुस्तानकी'की आवाज़ सुनाई पड़ती है और एक सैनिक आकर पेशवाको अभिवादन करता है)

नाना साहब—(सैनिकसे) कहो क्या समाचार है ?

सैनिक—देव ! पेशावर, लाहौर एवं रावलपिण्डीसे तो कोई आशा थी ही नहीं, परन्तु भारत-सम्राट्के राजस्थान, महाराष्ट्र एवं पञ्जाबके राजाओंके पास सहायतार्थ भेजे गये पत्रोंके भी निष्फल होनेसे, एवं निकलसनकी सिख व गोरखोंसे संयुक्त नई सेनाके दिल्लीमें आ जानेसे हमारा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सारा प्रयत्न व्यर्थ हो जाना चाहता है। बख्तख़ाँकी बरेलीका फ़ौजका एवं मिर्ज़ा मुग़लसे नियन्त्रित नीमचकी सेनाका, परस्परका संघर्ष इतना उग्र हो गया, कि दोनोंका एक स्थलसे नजफ़गढ़की ओर बढ़ना सम्भव न हो सका, अतः इससे अपनी पराजयका जो ताँता प्रारम्भ हुआ; उससे प्रभावित ही विल्सन, निकलसन, कैम्पवेल, जोन्स, जैकब बरगस आयर एवं लाङ्गफील्डको असमर्थ दिल्लीमें प्रवेशका अनायास अवसर मिल गया। इसके अतिरिक्त बादशाहके समधी मिर्जा इलाहीबक्स व एहसानुल्ला ख़ाँ और मुबारक अलोसे अनेक महत्त्वपूर्ण भेद पाकर हडसन, बख्तख़ाँकी पराजयसे भी बढ़कर विपत्तिसे दिल्लीको वीरान बनानेके लिये आकाश-पाताल एक कर रहा है।

नाना साहब—(तात्त्याकी ओर देखते हुये) इससे हमें घबरानेकी कोई आवश्यकता नहीं है, अपितु प्रत्येक परिस्थितिके सामनेके लिये अभीसे तय्यार रहना है। (कुछ सोचते हुये) प्रायः सभी भारतीय रियासतें गत रोमन अथवा मिस्री साम्राज्योंके समान अंग्रेजी शासनकी पोषिका हैं, अतः हमें इनसे कोई आशा ही नहीं करनी है।

तात्त्या टोपे—श्रीमन्त यथार्थ कहते हैं। न हमें भारतीय रियासतोंसे कोई आशा है, न अन्तर्द्वन्द्वोंसे आक्रान्त दिल्लीकी भावी दशासे; तथापि हमारा स्वातन्त्र्य संग्राम भारतके घरघरमें चालू रहेगा। हमें जीवन एवं मृत्युके झंझावात अपने पथसे न डिगा सकेंगे। देव ! यतः प्रत्येक प्राणीका हृदय एक विश्व है, अतः हम यहींसे अपने उद्देश्यके पोषक तत्त्वोंको भी ग्रहण करेंगे !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(सहसा नेपथ्यसे कोलाहल सुनाई पड़ते ही सबका प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन]

द्वितीय दृश्य

स्थान—लखनऊके समीपस्थ गोमती-तटके पासका एक देवालय।

(स्वाधीनता संग्रामके दो सैनिक कुछ दूरीपर स्थित हो बातें कर रहे हैं।)

प्रथम सैनिक—अपने दिल्ली, लखनऊ, कानपुर तथा झाँसी जैसे प्रमुख केन्द्रोंके शिथिल हो जानेसे मर्माहत हमारे अवध, आगरा व रुहेलखण्डके नेताओंने जो यह विज्ञप्ति प्रकाशित की है वह पठनीय एवं मननीय है। 'भारतीयो! तुम विदेशियोंकी साधन-सम्पन्न सेनाओंका खुले मैदानोंमें सामना न करो; वल्कि उनकी गति विधियोंपर कड़ी नज़र रखो। नदियोंके समस्त आवागमनके साधनोंपर गुप्तरूपसे पहरे रखो, उनके पत्र-व्यवहार रोक दो, उनकी रसदें रोक लो एवं उनकी आँखोंसे बचते हुये उनकी छावनियों व चौकियोंमें हर तरहकी गड़बड़ियाँ फैलानेसे बाज़ न आओ और चाहे जैसे भी हो, फ़िरङ्गियोंको हर्गिज़ चैन न लेने दो।'

दूसरा सैनिक—हमारी तो कोई बात ही नहीं; देशका बच्चा-बच्चा इस राष्ट्रीय घोषणाका स्वागत करेगा। यह सच है कि इलाहीवक्स जैसे विश्वासघातियोंने देशके उज्ज्वल भविष्यको फिरङ्गियोंके हाथ बेच दिया, फिर भी भारत जीवित है। सम्पूर्ण भारतकी तो वात ही क्या है, अभी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नरपिशाच हडसन कूपर, लैंसडेन व नीलको ही नहीं, हैव-लाकको भी यमसदन पहुँचानेवाले लखनऊके पतनके बाद भी अवध सक्रिय है। बादशाह बिरजिस कद्र व उनकी माता हज़रत महल, पेशवा नाना साहब, बाला साहब, ख़ाँ बहादुर ख़ाँ, शाहज़ादा फ़िरोज़ शाह, राजा तेजसिंह, नरपति-सिंह, रामबक्ससिंह वेनीमाधव सिंह, बहुनाथ सिंह, गुलाबसिंह, भूपालसिंह व हनुमन्तसिंह जैसे शेरदिल नेता-गण आज भी हमारे नेतृत्वमें संलग्न हैं; अतः विश्वास रखो, आदमियोंकी कमीसे आज़ादीकी लड़ाई नहीं रुकेगी।

प्रथम सैनिक—सच कहते हो, जब हमें ऐसे नेताओंका आश्रय प्राप्त है, तो हम हताश क्यों हों? युद्धभूमिके अस्थायी जय-पराजयोंका कोई विशेष महत्त्व नहीं होता। फिर हमारे लिये यह भी कम सौभाग्यकी बात नहीं है, कि जिस प्रकार मैसूरके हैदरअलीने स्वयं अपनी शक्तिसे फ़िरङ्गियों-को शिकस्तपर शिकस्त देनेमें कमाल कर दिया था; उसी प्रकार आज भी महावीर तात्याके सामने अँग्रेज़ोंके आधे दर्जन सेनापति अपनी काली एवं गोरी सेनाओंके साथ अपने मुँहकी खा रहे हैं। तुम्हें याद होगा कि हैवलाक द्वारा पहली बार पेशवाकी सत्ता समाप्त किये जानेपर भी, जब दूसरी बार अपने लोकोत्तर पराक्रमसे अत्यल्प साधनों-द्वारा अल्पकालके लिये ही सही, पहलेसे सुदृढ़ फिरङ्गियोंको परास्तकर तात्याने कानपुरको हस्तगत कर लिया; तो हमें ऐसे सेनानीके जीते जी निराश नहीं होना चाहिये। विश्वास रखो, चिनहटसे लेकर सहादतगञ्ज तककी लखनऊकी सञ्जीदगी हमारे सामने मानिन्द तस्वीर-के नाच रही है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दूसरा सैनिक—तुर्रा तो यह है किसीने कैनिङ्गसे जाकर कह दिया कि तात्त्या सम्पूर्ण महाराष्ट्रके अधिपति बननेकी ग़रज़-से तीव्रगतिसे दक्षिणकी ओर बढ़ रहा है, जिससे उसकी नींद व भूख हराम हो गई है और पेशवाके द्वारा सम्राट् 'ज़फ़र' के मुक्त किये जानेकी अफ़वाह तो उसके लिये सर-दर्द पहलेसे ही बनी हुई है, फिर भी हमारे लिये तो ऐसी अफवाहोंसे भी प्रेरणाएँ प्राप्त होती रहती हैं।

प्रथम सैनिक—अफवाहें उसी स्थितिमें हमें प्रेरणायें प्रदान कर सकती हैं, जब वे यथार्थके धरातलपर स्थित होनेकी अपने-में क्षमता रख सकें। यद्यपि कोल्हापुर एवं नागपुरका सक्रिय विद्रोह फ़िरङ्गियों-द्वारा दबा दिया गया; जबलपुरके राजा शङ्करसिंह तथा उनके पुत्रको तोपके गोलोंसे उड़ा दिया गया एवं जोरापुरके नाबालिक राजाको फाँसीपर लटका दिया गया; जिससे भयभीत उधरकी जनताका मनोबल तात्त्याको प्रश्रय देनेमें समर्थन न हो सका; अतः महाराष्ट्रपर अपनी सत्ता स्थापित करनेका विचार कुछ कालके लिये त्याग, तात्त्याने कुछ समयके लिये टोंकको अपना अड्डा बनाना चाहा; लेकिन मातृभूमिके कलङ्क अमीर ख़ाँके वंशज वहाँके नवाबने नगरके फाटक बन्द करवा दिये और तात्त्यासे लोहा लेनेके लिये अपने सम्पूर्ण सैनिक भेज दिये; फिर भी मातृभूमिके ऐसे सपूत सैनिक तात्त्याके सहयोगी बन आज हमारी शक्ति बढ़ा रहे हैं, इसलिये हमें यह तो मानना ही पड़ेगा कि तात्त्याकी विलक्षण सैनिक प्रतिभा हमें आश्वस्त करनेकी सामर्थ्य अपनेमें रखती है।

द्वितीय सैनिक—(चिन्तित मुद्रामें) यदि विश्वासघातियोंसे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हमारा पिण्ड छूटे, तभी हम कोई आशा रख सकते हैं। अभी हालमें ही यह बात सुनी गई है, कि जो बाँदाका नवाब तात्त्याटोपे व राव साहबके साथ एक जीव होकर फ़िरङ्गियोंसे लोहा ले रहा था, जाकर उनसे मिल गया। अतः महाराष्ट्रके स्वाधीन करनेकी तात्त्याकी योजना एवं भारत-सम्राट्के मुक्त करानेकी नाना साहबकी चेष्टा कैसे साकार हो सकेगी, जब कि अपने ही गोलके व्यक्ति अपना सर्वनाश करनेको उधार खाये बैठे हैं।

प्रथम सैनिक—खेद है कि पराजितोंके अपने साथी तो साथ छोड़ ही देते हैं, उनके प्रबल पराक्रम भी जागतिक दृष्टिसे ओझल हो जाते हैं, अन्यथा यदि हम सफल हुये रहते, तो १४ सितम्बर सन् १८५७ के साथ ही, वर्नवेस्टियनकी दिल्ली-की गली व जामा मस्जिदके भारतीय शौर्य विश्वस्तरके पराक्रमके कीर्तिमान होते व १४ नवम्बरका सिकन्दरबाग़ लखनऊका भारतीय रणकौशल विश्वमें बेजोड़ कहा जाता तथा तात्त्या जैसे महावीर सिकन्दर व अलफ्रेडके समक्ष समझे जाते !

(सहसा नेपथ्यसे बाहशाह बिरजिस क़द्रकी घोषणा सुनाई पड़ती है।)

'भाइयो ! इलाहाबादसे फ़िरङ्गियोंके सदर कैनिङ्गने जो यह फ़रमान जारी किया है कि अबसे कम्पनीकी जगह इङ्गलि-स्तानकी रानीने हिन्दुस्तानकी हुक़ूमत संभाली है, लिहाज़ा यहाँके बाशिन्दगान अबसे चैनकी वंशी बजावेंगे, इसके चकमेमें हर्गिज़ न फँसो। तुम्हें यह अपने सीनों पर दर्ज कर लेना चाहिये कि नील, हैवलाक, ग्रेटहेट, एनसन व बर्नार्ड जैसोंने जिस क़दर हम हिन्दोस्तानियोंके कत्लेआम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किये हैं, गाँव व शहरके शहर जलाकर राख कर दिये हैं, हमारी बहू-बेटियोंकी अस्मतें लूटी हैं, हमारे लाखों भाइयों को ज़बरन ईसाई बनाये हैं, हमारे मुल्ककी मनमाने ढङ्गसे लूटकी है व अपने उल्लू सीधे करनेकी गरज़से हम हिन्दू व मुसलमानोंमें फूट फैलाकर लड़ाइयाँ करवाई हैं; उनमें दिन दूनी व रात चौगुनीकी रफ़्तारसे तेजी आ जायगी। लिहाज़ा तुम इन दग़ाबाज विलायती इन्सानोंको अपने मुल्कसे दूर भगानेके लिये हमेशाकी तरह तैय्यार रहो। कमसे-कम तुम मौलवी अहमदशाहके क़ातिलके नापाक़ रास्तेको न अपनाओगे, ऐसी ही तुमसे मुझे उम्मीद हैं।'

प्रथम सैनिक—अरे! मैं यह क्या सुन रहा हूँ? क्या कैम्प-वेलको दो-दो बार परास्तकरनेवाले मौलवी साहब तलवार-के वार हो गये? उनके गुम होनेकी बात तो बहुत पहलेसे सुनी जाती थी?

द्वितीय सैनिक—तलवारके वार नहीं, जन्मभूमिके कलङ्क विश्वासघाती पवनके राजाके भाईकी गोलीके शिकार हो गये। जानते हो, भारतमाताके ऐसे कुपूतोंके अत्याचार यहीं तक न रुके रहेंगे, बल्कि ये कैनिङ्गकी घोषणासे प्रभावित हो; नाना साहब, तात्त्या टोपे, बेग़म हज़रतमहल व मुह-म्मद बख़्त खां जैसे हमारे नेताओंको भी क़त्ल करनेसे बाज़ न आवेंगे! भला लियाक़त अली महगाँवीको इलाहा-बादसे हटा कालेपानी भेजनेकी ताक़त किसमें थी, यदि सिख व गोरखोंने अंग्रेजोंका साथ न दिया होता; फ़र्रुख़ा-बादके नवाब तफ़ज़्ज़ल हुसेन ख़ां व नाना साहबके सेनापति नादिर खांको बेइज्जतीके साथ कौन फाँसीपर लटकाता, यदि अपने ही इन्सान फिरङ्गियोंकी ढाल-तलवारें न बने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होते ? वीराङ्गना लक्ष्मीबाईको झाँसीसे कोई भी विदेशी शक्ति न हटा सकती, यदि एक भारतीय देश-द्रोही झाँसी नगरका दक्षिणी फ़ाटक़ शत्रुके प्रवेशके लिए न खोल देता, व सरदार गौस खाँ व ख़ुदाबक्स समयसे पहले ही वीर-गतिको न प्राप्त हो गये होते।

प्रथम सैनिक—चाहे जो भी हो, परन्तु हमारे नेताओंके बलिदान व्यर्थ न जाँयगे। रानी लक्ष्मीबाई तथा उनकी सखी मन्दरा व काशीकी वीरगति एवं रानीके विश्वस्त सैनिक राम-चन्द्रराव तथा ग्वालियरकी समीपस्थ बाबा गङ्गादासकी कुटीसे स्वातन्त्र्य संग्रामके सैनिक सदैव प्रेरणायें प्राप्त करते रहेंगे; एवं मौलवी अहमदशाह जैसे शहीद हमें विश्वास-घातियोंसे सदैव होशियार रहनेकी शिक्षा देते रहेंगे। (फ़क़ीरके रूपमें परिवर्तित अज़ीमुल्लाको सामने आते देख) कहिये शाह साहब ! इधर आपका कैसे आना हुआ ?

फ़क़ीर—हम फ़क़ीरोंके लिये अलख जगाये हुए। खल्क़े ख़ुदामें चक्कर लगाते रहना ही तो बेहतर माना गया है।

प्रथम सैनिक—फिर भी दुनियावी इन्सान इसे जाननेकी ख्वा-हिस तो रख ही सकते हैं।

फ़क़ीर—ठीक समझते हो; क्योंकि आजके ज़मानेमें इसे जानना इसलिये और भी ज़रूरी हो गया है, कि फ़िरङ्गियोंने अपनी सल्तनत क़ायम रखनेकी ग़रज़से अपने चन्द हिमा-यतियोंको साधु-फ़क़ीरोंकी शक्लोंमें तब्दीलकर मुल्क़के ख़ास-ख़ास हिस्सोंमें बिखेर रखे हैं।

दूसरा सैनिक—लेकिन शाह साहब ! ईमानदार इन्सान इस क़दरके ग़लत काम तो नहीं ही कर सकते, अगर करना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चाहें, तो उनके हृदय काँपने लगेंगे, माथे चक्कर देने लगेंगे; चेहरे स्याह हो जायँगे !

फ़क़ीर—लेकिन इसे भी समझ लो कि अल्लाहताला इन्सानसे जिस वक्त जैसे काम कराना चाहता है, उन्हींके मुताबिक़ उसकी अक़्ल भी बदल देता है। गर्चे औरङ्गज़ेब बड़ा परहेजगार था; फिर भी इन्सानियतके ऊपर उसने जानते हुए भी जितने ज़ुल्म ढाये, वे किसी भी तवारीख़के जानकारसे छिपे नहीं हैं। यही बात आजके मुल्क़के गद्दारोंकी निस्वत भी मुझे कहनी है। अपने बादशाह ही नहीं, बल्कि मुल्क़को भी, बारहसौ रुपये महावारकी पुश्तैनी पेन्शनपर अंग्रेजोंके हाथ बेचनेवाला इलाही बक्स भी रोज़मर्रा पाँच बार नमाज़ें पढ़ता होगा, लेकिन इससे क्या वह इसलिये क़यामतके रोज़ बक्स दिया जायगा कि कि अपने बादशाहको क़ैद कराते वक्त ख़ुदाने उसे ऐसा ही करने दिया ? नहीं, बल्कि मरनेके दिन इलाही वक्स और पवनके राजा व उसके भाई जैसोंके सामने भी औरङ्गज़ेबके ही मानिन्द ख़ौफ़नाक शैतान आकर मँडराने लगेंगे। मज़हबी बाने न कभी अज़ाबके अञ्जामसे बचानेकी ख़ातिर ढाल बने हैं, न बनेंगे ही।

प्रथम सैनिक—शाह साहब ! आपके हृदयमें केवल अपने देश ही नहीं; बल्कि सचाई एवं ईमानदारीके प्रति भी इतनी आस्था है, फिर भी आप कहते थे, कि अंग्रेजोंने अपने फ़ायदेके लिये प्रचारकी ख़ातिर अपने हिन्दुस्तानी भेदियोंको साधु-फ़क़ीरोंके जामे पहनाकर मुल्क़में बिखेर रखे हैं।

शाह साहब—अरे भाई ! अंग्रेज़ोंने तो हमारी नक़ल भर की है, जब साधु-फ़क़ीरोंको आज़ादीके लिये मुल्क़में प्रचा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करते देखा, तो बदलेमें कुछ अपने भी साधु-फ़क़ीर पैदाकर मुल्क़में फैला दिये। ऐसी दशामें यह तो समझदारोंका काम है कि मानिन्द हंसके असल व नकलकी परख करें। जिस तरह हिन्दू व मुसलमान दोनों ही खुदाको एक समझते हैं, फिर भी इनमेंसे जानकार ही अमली तौरपर इस बारेमें कामयाब हो पाते हैं, इसीतरह सियासती मामलोंके निस्वत भी हमें हमेशा सोचते-समझते रहनेकी सख़्त ज़रूरत है।

द्वितीय सैनिक—शाह साहब! हम आपके राजनीतिक विचार जाननेको लालायित हैं।

फ़क़ीर—सच्ची बातें कहनेपर नाराज़ तो न होगे?

द्वितीय सैनिक—कदापि नहीं।

प्रथम सैनिक—हर्गिज़ नहीं।

फ़क़ीर—हिन्दुस्तानी यूरोपियनोंकी नक़ल करनेमें अपना सानी नहीं रखता, ख़ास तौरसे रहन-सहन व बोल-चालमें! मसलन् मामूली अंग्रेज़ी जाननेपर भी हिन्दुस्तानी अंग्रेज़ोंसे अंग्रेज़ीमें ही बोलनेमें अपनी शान समझता है, व अपने मुल्क़में भी अंग्रेज़ी पोशाक पसन्द करता है। मेरी समझसे पेशवा नाना साहबका वकील अज़ीमुल्ला अकेला इन्सान था, जिसने इङ्गलिश व फ़्रेञ्चके माहिर होते हुए भी कानपुरके अंग्रेज़ोंको हिन्दुस्तानीमें बोलनेको मज़बूर किया, व मग़रबी एशिया और यूरोपके मुल्क़ोंमें हिन्दुस्तानी पोशाक़से पोशीदा हो दौरा करनेमें अपनी शान समझी। अच्छा होता, कि हम मानिन्द उन मुल्क़-वालोंके, अपने मुल्क़की ख़ातिर जाँ निसार कर पाते। देहलीके हाथसे निकल जानेके बाद बिलोबी व स्काली जैसे ९ अंग्रेज़ोंने साढ़े तीन सौ हिन्दुस्तानियोंको राख

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बना, जल मरना ठीक समझा, लेकिन अपना बारूदखाना देना नहीं क़बूल किया, यह है फ़िरङ्गियोंके मुल्ककी मुहब्बतका एक आलीशान नमूना ! क्या इसे हमारे जौहरसे कम मर्तबा दिया जा सकता है ?

पहला सैनिक—शाह साहब ! मैं हिन्दुस्तानकी प्रमुख आबादीवाले हिन्दू व मुसलमानोंके विषयमें आपके विचार जानना चाहता हूँ।

फ़क़ीर—अच्छा सुनो, हिन्दू की तारीफ़ यह है कि यह होश-संभालनेके साथ ही संसार भरके अमन-चमनके ठेकेदार बननेकी ग़रज़से ज़मीं व आसमानके कुलावे एक करने लगता है, ग़र्चे आपसमें ही एक दूसरेको नापाक समझनेका यह आदी है, व छुआछूत या छूत-अछूतके भूत मानिन्द यमदूतके पैदाइशसे मौत तककी ख़ातिर हर एक हिन्दूके सरपर सवार रहते हैं। क़यास करो, जङ्गे आज़ादीको तयशुदा वक्तसे पहले शुरूकर नाक़ामयाब बनानेमें इन्हीं भूतोंका हाथ था।

दूसरा सैनिक—लेकिन शाह साहब ! मुसल्मानोंमें तो ऐसी ख़ामी नहीं है, फिर भी हमारे किये-करायेपर कैसे पानी फिर गया ? मुसल्मान भी तो इसमें शरीक़ थे ?

फ़क़ीर—'तुख़्मे तासीर, सोहबते असर' इसीमें इसका ज़बाब छिपा है। इसके सिवा हिन्दुस्तानी मुसलमानोंकी कैफ़ियत यह है कि इस्लामके सामने ये देश-परदेशमें कोई फ़र्क नहीं समझते। बजरिये तवारीख तुम्हें मालूम होगा कि पानीपतकी तीसरी लड़ाईने हिन्दोस्तानकी कमर तोड़ दी, वर्ना अंग्रेज़ हमपर इस क़दर हावी न हो पाते। उसमें रुहेलोंने ही नहीं, बल्कि और भी बहुतेरे मुस्लिम सरदारोंने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बाहरी हमलावर अहमदशाह अब्दालीकी मुसल्मान होनेकी वजहसे पेशवाके ख़िलाफ़ मदद की थी।

प्रथम सैनिक—लेकिन गड़े मुर्दे उखाड़नेसे अब क्या होने जाने वाला है, शाह साहब ?

फ़क़ीर—पहले मैं भी तुम्हारी ही तरह सोचता था, लेकिन अब तो आँखें मूँदकर इस कदरकी बात मैं नहीं मानता मुरादाबादके अंग्रेज़ कमिश्नर पावेल व उसके हमराहियोंने अपने नज़ूले सिताराके वक्त इस्लाम क़बूल कर लिये, जिससे उन्हें आपनी हिफ़ाज़तके साथ ही अपने मुल्कवालोंकी मदद करनेकी भी आज़ादी मिल गई, लेकिन फिर भी अपनी सितारा बुलन्दीके बाद ईसाई बन, अपनेपनाह देनेवालोंके साथ ही पूरे मुरादाबादको ही इन्होंने वीरान बना दिया लिहाज़ा मैं तो नाक़ामयाब होनेपर भी हिन्दू-मुसल्मानोंके लिये जङ्गे आज़ादीको ख़ुदाका शुक्र ही समझूँगा, क्योंकि इससे कम-से-कम दोनोंमें दीग़र मुल्कवालोंसे लोहा लेनेकी ख़ातिर मिल्लतकी ख्वाहिश तो पैदा हुई !

प्रथम सैनिक—मुझे ख़ुशी है कि शाह साहबके विचार समयके अनुकूल हैं।

दूसरा सैनिक—शाह साहबकी खरी बातें सुनकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है।

फ़कीर—इसे मैं ख़ुदाका शुक्र समझता हूँ। अच्छा, अब मैं नमाज़ पढ़नेकी ग़रज़से वज़ू बनानेकी ख़ातिर गोमतीके किनारे जाऊँगा और शायद तुम दोनों इस मन्दिरमें पूजा करने जाओगे। मेरा मुँह पच्छिमकी ओर होगा और शायद तुम दोनोंका पूरब या उत्तरकी ओर हो; इसके बाद मैं बोलकर या मनमें ही नमाज़ पढ़ लूँ और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शायद तुम दोनों मनमें ही परमेश्वरकी याद करो; लेकिन इन तफ़रक़ोंसे हममें कोई दूरी आनेवाली नहीं है। क्या ही अच्छा होता, कि जिन फ़िरङ्गियोंके लिये गाय व सुअर दोनों हलाल हैं, उनसे हमेशाकी ख़ातिर नफ़रत रखनेकी ग़रज़से हिन्दू व मुसल्मान दोनोंके लिये एकसे गाय व सुअरके गोश्त हराम करनेकी ग़रज़से आलिमोके फ़तवे मिल पाते! अच्छा होगा, कि हम यहाँसे रुख़्सत होनेके पहले मिलकर मुल्क़की गीत गायें।

दोनों सैनिक—हम इसके लिये सहर्ष तय्यार हैं शाह साहब!

(सभी मिलकर गाते हैं।)

गीत

एक हमारा झण्डा ऊँचा, एक हमारा देश!
हमें नहीं विलगा सकते, भाषा-लिपि-पन्थ-प्रदेश।

मातृभूमिपर हुये निछावर, लाखोंके सन्देश,
लिये जगाने अलख चले हैं, हम सैनिक-दरवेश।

मन्दिर-मस्जिद-अग्यारी-गिर्जा-गुरुद्वारे, देश,-

वना रहेगा, तभी बचेंगे, निज संस्कृति-अवशेष।

जन्मे यहीं, यहीं हम पलते और इसी फिर देश-
की मिट्टीमें मिलते, होते यदि कृतज्ञ इस देश,

तो निज; अरि-असि-ढाल न बनते, देश न होता वश विदेश;

शत्रु रोगवत् राष्ट्र-देहमें कभी न पा सकते प्रवेश।

इसलिये हमें आगेकी खातिर रखना है अव होश;
भूल-भुलैयेके तिलस्मसे हो न सकें वेहोश।

भारतको पामाल करें जो हमें समझ बदहोश;
उन अरियोंसे भिड़नेमें, हो सके न ठण्ढा जोश।

(एक ओरसे सैनिकों तथा दूसरी ओरसे फ़क़ीरका प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तृतीय दृश्य

स्थान—गोरखपुरमें योगीश्वर बाबा गोरखनाथजीकी समाधि।

समय—अर्धरात्रि

(पेशवा नाना साहब एक नाथपन्थी सन्तसे बातें करते हुए गम्भीर मुद्रामें दृष्टिगोचर हो रहे हैं।)

सन्त—पेशवा महोदय ! योगिराज बाबा गोरखनाथका यह वह समाधिमन्दिर है, जिसपर विधर्मियोंके बार बार आक्रमण हुये, परन्तु फिर भी आज तक यह ज्योंका त्यों भारतीयोंकी असीम श्रद्धाका केन्द्र-विन्दु बना हुआ है। अलाउद्दीन खिलजी एवं औरङ्गजेब जैसे मानवता-विरोधी शासकोंने इसके नामोनिशान तकको मिटा डालनेमें कोई कोर-कसर तक नहीं छोड़ी, परन्तु फिर भी यह अपने शाश्वत प्रकाशसे ज्योंका त्यों प्रकाशमान् है, यद्यपि उन अत्याचारियोंकी उन तलवारोंके टुकड़े तक महाकालकी चपेटोंसे न बच सके, जो इनपर अनायास टूटीं।

नाना साहब—महाराज ! पोषक तत्त्वोंमें ही प्राकृतिक नियमानुसार संहारके बीज भी अन्तर्निहित रहते हैं, जैसे अन्तमें पोषक तत्त्वोंका समन्वय है, फिर भी परिस्थिति-वैषम्यसे वही सेवन करनेसे प्राणघातक भी हो जाता है। उसी प्रकार तलवारके असंयत प्रयोगके विषयमें भी समझा जाना चाहिये। लेकिन अचम्भेकी बात तो यह है, कि जिनके पूर्वजोंने हमारे उपासना-स्थलोंको बार बार विकृत अथवा भूमिसात् कर दिया,'आज उन्हींकी व्यथायें अपनी बन रही हैं। ज़ालिम औरङ्गज़ेबके वंशज 'ज़फ़र'का सपरि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वार हडसन-द्वारा वन्दी बनाया जाना तथा देशद्रोही रजब अलीकी प्रेरणासे चाँदीकी तश्तरियोंमें रखे उनके शाहजादों मिर्ज़ा मुग़ल, अबूबकर व खिज्र सुल्तानके कटे शिरोंका उनके सम्मुख रखा जाना; आज प्रत्येक विवेकशील भारतीयको रुला रहा है।

सन्त—सम्भवतः इसीलिये कि भारतकी जलवायु अपने वक्षस्थलपर आश्रयपानेवाले प्राणियोंके वंशजोंको मानवता का पाठ पढ़ा, इसका पात्र बना देती है। फिर सबसे बड़ी आश्चर्यकी बात तो यह है, कि जिस देशकी प्रकृतिने शक-हूण एवं कुशाण जैसे बर्बरोंकी हिन्दू-सभ्यताका पोषक अङ्ग बना लिया, उसने मुसल्मानोंको आत्मसात् करना तो दूर रहे, करोड़ोंकी संख्यामें जाकर उनमें मिल जानेमें अपना सौभाग्य समझा एवं आज तक अबाध गतिसे मिलते चले जानेमें अहोभाग्य समझती है।

नाना साहब—महाराज! हिन्दुओंकी आज जैसी मनःस्थिति है, उसे देखते हुए तो इसका रुकना असम्भव सा प्रतीत होता है। इसके रोकनेका सर्वोत्तम उपाय तो शक्तिसञ्चय ही है, क्योंकि कमज़ोर शक्तिशालीसे डरकर अनायास उसके अङ्ग बनने लगते हैं, तथा शक्तिशाली उसके मित्र बननेमें गौरवका अनुभव करते हैं। लेकिन यह सब समझते हुये भी सम्राट् बहादुरशाहके नेतृत्वमें हमने जो फ़िरङ्गियों-से संघर्ष किया है, असफल होते हुये हम इसमें अपमान का अनुभव नहीं करते। इसके अतिरिक्त अमरसिंहकी असफलताके बाद जगदीशपुर-राजभवनकी डेढ़ सौ वीराङ्गनाओंने स्वप्रज्वालित तोपोंके गोलोंकी भेंटें बन, जो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संयुक्ता एवं पद्मिनीके समान भारतकी संस्कृतिको गौरवान्वित किया है, उससे हम आश्वस्त हैं।

सन्त—ऐसा ही होना भी चाहिये, क्योंकि राष्ट्रियता साम्प्रदायिक मान्यताओंसे ऊपरकी वस्तु है, एवं राजनीति आन्तरिक भावनाओंको हृदयस्थकर परिस्थितिके अनुसार कार्यसाधक तत्त्वोंके उपयोगमें लानेकी समर्थिका है। एवं सतीत्वकी परम्परा तो हमारी स्थायी निधि है ही।

(सहसा नेपथसे गीत सुनी जाती है)

गीत

मर करके अमर हुये कितने, जीवित ही कितने मृतवत्, हैं,
जीवनके फेर हुये कितने, जिसने जाना वे कितने है ?
खोजते स्वप्नमें समाधान, पर, इसका मिलना दूर रहा;
जाग्रत जीवनका नव बिहान, भावना-सरित् मझधार बहा।
खोये सवनाँका वना हार, वनकर भी बिखर गया स्मृतिमें,
है कौन खोजकर ला सकता, चिन्ता इसकी रहती मनमें।
व्यापार निखिल जिसके वशमें, केन्द्रित हैं अगणितनामी हो,
द्रष्टा-साक्षी अव्यव परमेश्वर इस चिन्तासे अवगत हो।
अगणित प्रतिभायें न्यस्त हुँई, स्वातन्त्र्य धाम-परकोटेमें,
वहुसङ्ख्यक युवक शहीद हुये रणचण्डीके आराधनमें।
उज्वल भविष्यकी आशासे आश्वस्त तथापि अहर्निश्,
विधिके विधानसे प्रेरित हो कर्त्तव्यकर्ममें है तत्पर।
जीना जो चाहे जी सकता है, सङ्घर्षोंमें रत रहकर,
प्रज्ञा-सन्नति बन, अंप्रमेय बन शाश्वत जीवनमें प्रवेशकर।
रोता है किसके लिये कौन ? हँसता है किसके लिये कौन ?
जब आत्म तृप्तिहित निखिल कर्म होते हैं द्रष्टा लखते मौन।
उदयास्त सदृश रवि, एकरूपता सभी परिस्थितिमें मतिमान
रखनेमें अभ्यस्त अतः होता है गत मद-मोह-मान।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाना साहव—यह भी हमारा सौभाग्य ही है कि प्रारब्धकी गतिके पुरुषार्थ-गतिसे तीव्रतम होनेपर भी हमारी भावनाएँ किसी-न-किसी रूपमें वैखरी वाणी-द्वारा जागरूक समाजतक पहुँचती ही रहती हैं।

सन्त—'जहाँ चाह है वहाँ राह है', इस न्यायके अनुसार ऐसा तो होना ही चाहिए। इस सिद्ध-सेवित स्थलपर सदासे आर्त प्राणियोंके मनस्ताप दूर करनेके हेतु दैवी आदेश प्राप्त होते रहे हैं। मानव-प्रवृत्तिने अपनी धार्मिक मान्यताओंके अनुसार अनेक भौतिक एवं आध्यात्मिक संस्थान निर्मित किये हैं, जिनमें आवश्यक तत्त्व हैं, यदि मानव-मस्तिष्क एवं हृदय उनसे अवगत होनेमें प्रयत्नशील हों।

नाना साहव—(सहसा एक परिव्राजकको प्रत्यक्ष होते देख, सविनय) भगवन्! मैं आपके दर्शनसे कृतार्थ हुआ!

परिव्राजक—मैं यहाँ आपके आगमनसे स्वयं अनुगृहीत हुआ हूँ।

नाना साहव—प्रभो! मेरे जैसे एक सांसारिक प्राणीको इतना बड़प्पन देना स्वयं आपकी महानता है।

परिव्राजक—समाजसे उपेक्षित व्यक्तियोंके लिए आप भले ही सांसारिक हों, किन्तु जिन्होंने मानवीय जीवनकी सुकुमार भावनाओंका सन्निकटसे अवलोकन किया है, उनके लिए आप जैसोंके जीवन-वृत्त उन एकान्त साधकोंसे भी महान् है, जिन्हें भौतिक प्रलोभन नहीं डिगा पाते। मेरी समझसे मातृभूमिका अनन्य सेवक एकान्त साधकोंसे बढ़कर होता है।

नाना साहव—किन्तु देव! इसके निष्पत्त्यर्थ मेरे आगेका मार्ग तो अवरुद्ध-सा प्रतीत हो रहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परिव्राजक—पुनर्जन्ममें विश्वास रखनेवालोंके लिए आगेके मार्ग अवरुद्ध हो ही नहीं सकते। सञ्जया लक्ष्मीवाईने जिस अदम्य साहससे अपना कर्तव्य समर भूमिमें निभाया और अन्तमें जिस तन्मयतासे मृत्युका वरण किया, इससे क्या उसके आगेका पथ अवरुद्ध हो गया ? कदापि नहीं; अपने नये कलेवरमें दिव्य वर्चस्‌के साथ भारतकी स्वाधीनताके हेतु ऐसी वीरात्माओंके अवतरण अवश्यम्भावी हैं। स्वाधीनताके दृश्य जागरूक प्रहरीके विषयमें भी मेरी यही धारणा है।

नाना साहब—महाराज! मेरे जैसे व्यक्तिके भाग्यमें स्वतन्त्रताका जागरूक प्रहरी होना कहाँ लिखा है ? इस समयकी मेरी स्थिति तो एक राजनीतिक भगोड़ेके समान हो रही है।

परिव्राजक—अपने सम्बन्धमें आपकी चाहे जो भी धारणा हो, पर मेरे लिए आप ऐसे नहीं हैं, जिस महामानवके अन्तरालमें अपने राष्ट्रको स्वाधीन बनानेके हेतु अविराम गतिसे अहर्निश् वाड़वाग्नि धधक रही हो, परिस्थितिवश वह चाहे जिस किसी भी रूपमें विचर रहा हो, मातृभूमिका जागरूक प्रहरी ही समझा जायगा। साध्यकी प्राप्तिके लिए साधनके विभिन्न स्रोतोंके अन्वेषण तथा अनुसरण हेय नहीं समझे जाते। यह तो मानवीय गुण समझे जाते हैं।

नाना साहब—जीवनकी इस अँधेरी रात्रिमें तो ऐसे साधन भी स्पष्टतया दृष्टिगोचर नहीं होते।

परिव्राजक—अन्धकारमयी रात्रियोंमें ही प्रायः राष्ट्रिय उत्थानके बीज अङ्कुरित होते हैं, अवश्य ही इसके लिए संयति अपेक्षित हैं। क्या इसमें भी सन्देहके लिए कहीं स्थान है, कि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिस प्रकार कवि अपनी कविताके एक शब्दके लिए रात्रिके उस क्षणमें भी, जिसमें पशु-पक्षीतक निद्रादेवीकी गोदका आश्रय लेते हैं, जागता रहता है, उसी प्रकार मातृभूमिका सेवक भी अहर्निश् जागरूक रहता है, एवं राष्ट्रनायक राष्ट्रके हितार्थ भावी योजनाके अनुसन्धानमें आत्म-विभोर रहा करता है। (सहसा नेपथ्यसे गीत सुनाई पड़ती है।)

गीत

शोक ही आदि कविका बन श्लोक, चिरस्थायी संस्मृति-पटपर,
स्मृति प्रथम वियोगी कविकी, कविता-क्षेत्र न रखती निज पटतर।
जो बाह्य वृत्तिको अभ्यन्तरसे सम्बन्धित करती सत्वर—
है प्राचैतस् कविकी प्रवृत्ति सान्त्वना दे रही बन संवर।
संस्कृतियोंके संस्कार हुए जिसकी गुण-गरिमा गा-गाकर,
जिसके प्रसादसे तत्त्व अगोचर होते रहने गो-गोचर,
कल्याण-धाम उस कवि-पुराणके चरणोंका आश्रय पाकर,
निर्मुक्त शोक होता प्राणी, श्रद्धा-विश्वास-विभव लेकर।
भव-सम्भव भव-सन्तप्त मनुज शान्त्यर्थ व्यथाके है पुकार-
करता, यद्यपि मृग-नाभि सदृश औषधि स्थित है निज हृद्-मझार।
मानव निसर्ग विज्ञानवृत्त यदि प्रश्रय दे नैराश्य हार,
तो कौन दूसरा जीव बचेगा, जो प्रतिरक्षा करे गुहार!
देहें भौतिक प्रयोगशालाएँ, आत्मस्थिति प्राप्तव्य, प्राण,-
अन्वेषणमें तत्पर सदैव करते रहते उनसे प्रयाण।
इससे देही जड़ देह नहीं, कौशिक-बाल्मीकि-भुशुण्डि-प्रयाण;
करते हैं नित विश्वस्त हमें आत्मोन्नतिसे हो महाप्राण!

(विनयावनत उपस्थित-जन, आत्मतेजसे प्रकाशित एक योगीको अपने सम्मुख देखते हैं।)

योगी—अन्तर्द्वन्द्व जीवनके बाह्य व्यापारोंपर अपना एकाधिकार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जमानेके हेतु प्रारम्भसे ही सचेष्ट हैं, फिर भी मानव अपने सांस्कृतिक इतिहाससे प्रेरणायें प्राप्तकर उसे रोकनेमें प्रवृत्त रहता ही है। भगवान् वासुदेवने युद्धकी विभीषिकासे कातर पार्थको सन्मार्गपर लानेके लिए जिस अमृतमय उपदेशका व्याख्यान किया, उसकी उपयोगिता त्रिकालाबाधित है। इसी प्रकार कोई भी व्यक्ति या समस्या देखने-सुननेमें भले ही भयानक लगे, किन्तु समर्थके समक्ष हो वही व्यक्ति या समस्या अपने आर्जवसे आकर्षणका केन्द्र-बिन्दु बन जाती है। अङ्गुलिमालसे लोग डरा करते थे मानिन्द यमदूतके, परन्तु भगवान् बोधिसत्त्वके साक्षात्कारके बाद वह केवल मानवकी श्रद्धाका भाजन ही नहीं बन गया, अपितु अपनी अन्तर्साधनासे तपस्वियोंके आकर्षणका पात्र भी बन गया। इसी प्रकार समस्याका समाधान तो विकसित जीवनमें ही स्थित है।

नाना साहब—नाथ ! साधारण प्राणी अपनी स्थितिसे तो सर्वथा असन्तुष्ट रहा ही करता है, किन्तु असहायावस्थामें तो यह उसके मनस्तापको और भी बढ़ाने लगती है।

योगी—नाना ! सदा आगे बढ़ते रहनेके लिए ही तो यह मानव-जीवन प्राप्त हुआ है। अतः इस विषयमें साधारण प्राणीको ही विचारका विषय क्यों बनाया जाय ? 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' इस आदर्शपर गम्भीरतासे विचार करो।

सन्त—प्रभो ! पता नहीं चलता कि साधारण प्राणीके लिए क्या कर्तव्य है और क्या अकर्तव्य ?

योगी—यदि कोई कर्त्तव्याकर्त्तव्यके निर्णयमें समर्थ हो जाय, तो वह साधारण स्तरपर रह ही नहीं जाता। जगत्में इतनी अधिक स्मृतियाँ बनीं; कर्मकाण्डका इतना अधिक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विस्तार हुआ, ज्ञान एवं उपासनाके नित्य नये-नये संस्करण प्रस्तुत होते रहे, परन्तु कर्त्तव्याकर्त्तव्यके निश्चित समाधान इनसे न हो सके। वस्तुतः अज्ञानका अत्यन्ताभाव ही इस प्रकारकी समस्याओंका सर्वोत्तम समाधान है।

वरिव्राजक—नाथ! समाधान तो सभी दिव्य विभूतियाँ लेकर जगत्‌में आविर्भूत होती रहती हैं।

योगी—अवश्य, फिर भी उनके तिरोधानके पश्चात् संसारका रवैया ज्योंका त्यों चलता रहता है। यही नहीं, अपितु ईश्वरीय विभूतियाँ भी सांसारिकोंकी विकृत कल्पनाओं-द्वारा खरी-खोटी समझी जाती हैं। किसी नाथपन्थीके लिये बुद्ध असफल, किसी बौद्धके लिये महावीर असफल और इसी प्रकार एक मतावलम्बीके लिये दूसरे पथ-प्रदर्शक अपर्याप्त ठहराये जाते हैं यद्यपि सत्य दर्शन हमें परिस्थितियोंकी ओर मुड़कर अवलोकन करनेको बाध्य करते हैं।

नाना साहब—प्रभो! मेरे जैसा राजनीतिका असफल स्नातक किसी औरको असफल कहनेकी तो कल्पना भी नहीं कर सकता, यद्यपि यह भी मायास्तूपोंका उपासक बना है।

योगी—राजनीतिक जीवन तो बड़ा अस्थिर होता है नाना! आज जो साम्राज्यका सूत्र सँभाले हैं, कल किसी अप्रत्याशित घटनाके कारण जेलके सीकचोंमें भी बन्द किया जा सकता है, अथवा फाँसीके तख्तेपर भी लटकाया जा सकता है। स्वाधीनता संग्रामके सैनिक या सेनापतिके भविष्य भी इसके अपवाद नहीं हैं। प्रमाणके लिये बहादुरशाह एवं स्वयं तुम्हारे जीवन-वृत्त हमारे सामने हैं। यदि तुम सफल होते तो भारतके प्रधान मन्त्री अथवा प्रधान सेना-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पति होते एवं विदेशियोंकी उपेक्षणीय कृपापर जीनेवाले 'ज़फ़र' भारतके वास्तविक सम्राट् होते !

नाना साहब—(कुछ सोचते हुये) प्रभो ! मनुष्य अपने पूर्वकृत कर्मफल भोगनेके समान ही, अपने पूर्वजों द्वारा किये गये कर्मोंके फल भोगनेको भी बाध्य होता है ?

योगी—मैं अहर्निश् पितृतर्पण एवं नान्दीश्राद्धोंमें विश्वास रखनेवाले तुम्हारे जैसे श्रोत्रियोंसे इस विषयमें कुछ कहनेकी आवश्यकता नहीं समझता, फिर भी इस विषयमें मेरा तुमसे यही कहना है कि मानव-सभ्यताको सुरक्षित रखनेके लिये ऐसा होना आवश्यक ही नहीं; पोषक-तत्त्वोंके समान है।

नाना साहब—(कुछ सोचते हुये) सर्वज्ञदेव ! इसीलिये मेरे सम्मुख कोई निरापद साधन नहीं दीखता। भगवान्ने लक्ष्मीबाईकी यह अभिलाषा पूर्ण कर दी, कि मेरे चेतना-शून्य शरीर तकको फ़िरङ्गी अथवा उनके आधीनस्थ व्यक्ति न छू सकें; मेरे विषयमें भी यदि यही आदर्श चरितार्थ हो पाता...............

योगी—जिस सर्वेश्वरने तुम्हारे अन्तरालमें इस पवित्र भावनाका सृजन किया है, वही इसकी पूर्ति भी करेगा।

नाना साहब—प्रभो ! मैं आपके इस दैवी सन्देशसे कृतार्थ हुआ। (सहसा नेपथ्यसे गीत सुनाई पड़ती है।)

गीत

लेकर कोई भी क्या आता, लेकर कोई भी क्या जाता।
मूर्धाभिषिक्त कोई होता, कोई परन्तु याचक बन जाता।
पञ्चतत्त्वमें सभी समाता, यश-अपयश केवल रह जाता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मातृभूमिका सैनिक आता आज़ादीका अलख जगाता;
रविमण्डलको भेदित करता योग-युक्तकी गति अपनाता।
कैवल्य पान्थ, तत्त्वोंका शास्ता, ध्यानतीर्थ अवगाहन-कर्त्ता;
समाधिस्थ हो जिसे देखता, उसे हुतात्मा रणमें लखता।
अमृत-धाम अमृत हो जीता राष्ट्रिय-रणका निर्भय नेता!
अविवेकी इसको समझ न पाता, प्रतिपल जीता-मरता रहता।
भार व्यथाका लिये उलझता, कण्टक-पथ तय करता रहता-
घर अगले दरवाजेसे आता, पिछले दरवाजेसे जाता।

योगी—नाना! जो पदार्थ साधारण प्रयत्नोंसे लभ्य नहीं हो सकते, तपः साधनासे प्राप्त किये जा सकते हैं। पाशुपत अस्त्रके प्राप्त्यर्थ अर्जुनको भी यही करना पड़ा था। अतः अपने उद्देश्य-प्राप्तिकी असफलतासे खिन्न मनस्तापकी शान्ति चिन्ता-निमग्न रहनेमें नहीं है अपितु उल्लासमयी सक्रियतामें है। (सहसा नाना साहबके नेत्र प्रकाशपुत्रको देख बन्द होने लगते हैं और सभी सन्त अन्तर्ध्यान हो जाते हैं।)

[पट-परिवर्तन]

●

चतुर्थ दृश्य

स्थान—भारत एवं नेपालके सरहदमें स्थित हिमालयकी उपत्यका।

नाना साहब—(स्वगत) वास्तवमें उन वीतरागोंके जीवन ही सुखमय हैं, जिन्हें सफलता-एवं असफलताओंके झंझा-वात विचलित नहीं कर पाते। अमरकीर्ति बालाजी विश्व-नाथ पन्तने जिस पेशवापदको भारतके लोकत्तर सौभाग्यकी क्षमतामें देखना चाहा और जिसने अपने उत्कर्ष कालमें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवाध्वजको भारतका उज्ज्वलतम प्रतीक सिद्ध किया, आज उसीका उत्तराधिकारी धुन्धु पन्त अपनी इहलीलाकी समाप्तिके साथ ही उस पेशवापदको भी भारतका दुर्भाग्य विज्ञापित करने जा रहा है। मातृभूमि! अपनी इस भाग्यहीन सन्ततिको क्षन्तव्य समझना। (सहसा नेपथ्यसे होती गीत सुनाई पड़ती है।)

गीत

हिमालय करता है आह्वान !
जागरूक ही जीवित है, निष्क्रिय जीवन मरणोन्मुख है;
तन्द्राकी भी कोई हद है, अन्यथा रोगवत् वह भी है।
वह अंकुश पर-शासनका है, करता है जो इसका निदान ॥ हिमा० ॥
जो शस्त्र-शास्त्रसे सज्जित है पर नहीं विज्ञ अवसरका है,
यदि सत्ता अपना पाता है, अपने सँग राष्ट्र गँवाता है,
आपन्नबुद्धि ही करता है, राष्ट्रीय समस्या-समाधान ॥ हिमा० ॥
कासिमके धावेसे लेकर, तात्कालिक असफलताओंपर,
भावी पीढ़ीने घुल-मिलकर, यदि ध्यान दिया संयत होकर,
तो निस्सन्देह हो सकता है, इस आर्य देशका समुत्थान ॥ हिमा० ॥
शत-शत आघातोंको सहकर, अरियोंसे नित टक्कर लेकर,
निज ज्ञान-कर्म-बलको प्रयुक्तकर, जल-थल-नभमें असि चमकाकर।
भारतकी संस्कृति जीवित है, जीवित है हिन्दुस्थान ॥ हिमा० ॥

(सहसा विनयावनत नाना साहबके सामने एक अवधूतका प्रकट होना)

नाना साहब—प्रभो! धुन्धु पन्त विरह-सन्तप्त भारतके सम्मुख श्रीरामके साक्षात्कारके समान आपके पुण्यदर्शनसे अपनेको कृतार्थ समझता है। इसका अभिनन्दन स्वीकृत हो।

अवधूत—नाना! विश्वात्माकी अभिलाषा है कि तुम नेपालमें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवस्थित हो, भारतकी स्वाधीनताके लिये कुछ कालतक एकान्त साधना करो। यह जीवन चिरन्तन जीवनका एक भाग मात्र है। (अवधूतका अन्तर्धान होना एवं एक धड़ाकेकी आवाज़के पश्चात् कुछ सैनिकोंका आगमन)

प्रमुख सैनिक—(साश्चर्य) अरे हम जिसकी इतने दिनोंतक तलाश कर रहे थे, यह शख़्स वही नाना साहब है। ताज्जुब तो यह है कि गोलीका निशान बेकार गया और इसे क़ैद करनेकी ख़ातिर हाथ आगे भी नहीं बढ़ पाते !

नाना साहब—आख़िर तुम लोग इसे क़त्ल या क़ैद करके अपना कौन सा कार्य सिद्ध करना चाहते हो ?

प्रमुख सैनिक—हम लोग अंग्रेजी सरकारके सिपाही हैं और हमें उसका हुक्म है कि हो सके तो नाना साहबको पकड़-कर सरकारके हवाले किया जाय, वर्ना उसकी लाश सर-कारको सुपुर्द की जाय। जो भी इन्सान या फ़ौजी दस्ता यह काम करेगा, उसे क़ाफ़ी इनाम दिया जायगा व मुह-कमेकी तरक्क़ी मिलेगी। तुम्हारे नेपाल-रियासतमें कहीं छिपे होनेकी बात सुनी जाती थी, लेकिन हमारी ख़ुद-क़िस्मतीसे तुम सरहद्पर ही मिल गये।

नाना साहब—अपने भाईकी तलवारसे मौतके घाट उतरने या उसके ज़रिये क़ैदी बनाये जानेमें नाना साहब अपने सम्मान का अनुभव करता है और अपनी सरकारके हुक्मकी तामीली तुम्हारे लिये भी ज़रूरी है।

प्रधान सैनिक—अगर मेरी गोलीके वारसे तुम ख़तम हो गये होते तो और बात होती, लेकिन जानकर ब्रह्महत्या कौन करने जाय ? मुझे मालूम है कि तुम्हारी इमदादकी ख़ातिर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इटलीसे गैरीबाल्डीकी फ़ौज जहाज़से रवाना हो चुकी थी, लेकिन ग़दरकी नाक़ामयाबीको जान, वह वापस हो गई।

नाना साहब—मैंने तुम्हारी सरकारकी ख़िलाफ़तकी है; इसलिये तुम्हारे जैसे नमकहलाल सैनिकका कर्तव्य है कि मुझे क़त्ल कर दो। (प्रधान सैनिकके सामने गर्दन झुका देना)

प्रधानसैनिक—मेरी बात भी तो सुनो, इतनी जल्दी क्या पड़ी है ?

नाना साहब—(पूर्ववत् स्थित हो) हाँ कहो, क्या बात है ?

प्रधान सैनिक—बातें तो बहुत सी हैं यदि ग़ौरसे सुनो।

नाना साहब—कहो भी !

प्रथम सैनिक—अच्छा सुनो, मैं यह बखूबी जानता हूँ कि फ़तहपुरपर क़ब्ज़ा करनेके बाद हिन्दुस्तानियोंने जिस शेररकी जान बख़्स दी थीं, वही जब फिर अंग्रेज़ोंके पासा पलटनेपर वहाँका कलक्टर हुआ, तो इस नेकीका बदला उसने पूरे इस शहरको जलाकर चुकाया, इसके सिवा और भी इसी तरहके अंग्रेज़ोंके जुल्म हैं, लिहाज़ा इस कदरकी अहसान-फ़रामोशी करनेवालोंकी जातसे उनकी तावेदारीमें रहते हुवे भी मैं नफ़रत रखता हूँ। दूसरी बात यह है कि तुम जङ्गे आज़ादीके मामूली सिपाही नहीं, सिपहसालारे आज़म हो, इसलिये अगर कहीं नैया-नाव संयोगसे हिन्दुस्तानकी बागडोर तुम्हारे हाथ आयी; तो सीना तानकर मैं तुमसे इस नेकीका बदला लूँगा। तीसरी बात यह है कि तुम अंग्रेज़ी सरकारके दुश्मन हो, मेरे निजी नहीं; इसलिये इसे हमें नहीं भूलना है, कि जो भारतमाताका दुश्मन है, वह हम दोनोंका दुश्मन है। चौथी बात यह है कि मैं तुम्हारे साथ चाहे किसी भी नीयतसे इन्सानियतका बर्ताव करूँ, मेरा फ़ायदा ही फ़ायदा है। हमारी तनख्वाह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व भत्तेमेंसे तो छदाम कम होनेवाला नहीं है उल्टे, 'झूठे करिवो विप्र क काजा, कोटि जनम नहिं होय अकाजा' के मुताबिक इस लोक व परलोकमें भी मेरी पाँचों अंगुलियाँ घी में ही रहनेवाली हैं।

नाना साहब—मुझे आश्चर्य होता है कि इतना समझतेहुए भी तुम कैसे फ़िरङ्गियोंकी नौकरीमें रह सके ?

प्रधान सैनिक—मैंने अंग्रेज़ोंकी तावेदारीमें रहते हुए भी……… (चौंककर) यहाँ मौजूदा सभी इन्सानोंका फ़र्ज है कि मेरे साथ ही अपने धर्म व ईमानकी कसम लो कि ताज़िन्दगी यहाँपर होनेवाली किसी भी बातका कहीं भी भण्डा फोड़ नहीं करेंगे।

सभी उपस्थित व्यक्ति—हम लोग छातीपर हाथ रखकर अपने अपने धर्म व ईमानकी रूहसे इसकी क़सम खाते हैं।

प्रधान सैनिक—(अन्य सैनिकों एवं बादमें नानासाहबकी ओर देखते हुये) अच्छा, तुम लोग मेरे साथ जल्दसे जल्द यहाँसे भागो और नाना साहब! तुम भी यहाँसे नौ-दो ग्यारह हो! (विपरीत दिशासे दोनों पक्षोंके प्रस्थान)

नाना साहब—(कुछ आगे बढ़नेके बाद बैठकर, स्वगत) नाथ! वह कौन सी शक्ति है जो, बह्वपायसङ्कुल इस जीवनकान्तारमें मुझे आगे बढ़नेको बाध्य कर रही है। (सहसा 'ला इला इल्लिल्लाह' व 'अल्लाहो अकबर'के नारे लगाते फ़क़ीरके रूपमें परिवर्तित अज़ीमुल्ला ख़ाँका चौंककर साक्षात्कार करतेहुए) कहिये शाहसाहब क्या मर्ज़ी है ?

अज़ीमुल्ला—(ध्यानपूर्वक नाना साहबकी ओर देखते हुये) हूज़ूर यह इन्सान फ़क़ीर नहीं, बल्कि आपका फ़र्माबरदार अज़ीमुल्ला है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाना साहब—आखिर किस उद्देशसे आपने फ़क़ीरका बाना लिया और कहाँ जानेका इरादा रखते हैं ?

अज़ीमुल्ला—चूँकि साधु व फ़क़ीरकी शकलमें तबदील होकर हर क़िस्मके इन्सान अपनेको महफ़ूज़ महसूस करनेके साथ ही अमीर व ग़रीब सभीसे रोटियोंके सिवा मर्तबा भी हासिल कर सकते हैं, इसलिये मैंने अपनेको इस शकलमें तबदील करना ज़रूरी समझा। इसीके साथ मेरी मन्शा क़ाबा शरीफ़की ज़ियारत करनेकी है और सिर्फ़ ज़ियारत ही नहीं, वहाँ जाकर ताज़िन्दगी बस जानेकी भी है, वह इसलिये कि मैं हमेशा ख़ुदासे दुआ माँगता रहूँ, कि या परवरदिग़ार! मैंने अपनी ज़िन्दगीमें जो भी अज़ाब किये हों, उसके बदलेमें क़यामतके रोज़ मुझे उनकी सज़ायें दे, लेकिन मैंने अगर इस जहाँमें आकर कुछ भी सवाबी काम किया हो; तो उसके अञ्जामके तौरपर मेरे मुल्कके सरपर आज़ादीका सेहरा बाँध दे।

नाना साहब—आपकी पहली बात तो मेरी समझमें आती है और दूसरी बात भी यहाँ तक मैं समझ पाता हूँ, कि अपनी जानोंके ग्राहक फ़िरङ्गियोंकी जालोंसे बचते हुये ही रास्ते बदलते हुये हमें अपने गन्तव्यकी ओर अग्रसर होते रहना चाहिये, लेकिन मैं यह नहीं समझ पाता, कि क़ाबा शरीफ़ भारतसे पश्चिममें है और इधर पूर्वोत्तरकी ओर आप कैसे भटक पड़े। यद्यपि मेरे लिये आपका साक्षात्कार प्रसन्नताका विषय है, फिर भी आपका दिग्भ्रम चिन्त्य है।

अज़ीमुल्ला—जिस ख़ुदाने मुझे लाकर आपकी ख़िदमतमें हाज़िर किया है, वही क़ाबा शरीफ़की ओर भी ले जायगा। उसके यहाँ तो उत्तर-दक्खिन या पूरब-पच्छिमका कोई

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सवाल ही नहीं। फिर लेने गये आग, मिल गई पैग़म्बरी'की कहावत भी तो कोई नई नहीं है। लिहाजा इस रास्तेसे भी क़ाबाशरीफ़ पहुँचना नामुमकिन न समझा जाना चाहिये।

नाना साहब—वकील साहब; इसे समझते हुए भी मैं तो अपनों से उन्हें अच्छा समझता हूँ, जो दुश्मनोंका सामना करते हुए वीरगतिको प्राप्त हो गये, अथवा फाँसीके तख्तोंपर लटका दिये गये। कमसे-कम वे भावी इतिहास-द्वारा हमारे मानिन्द असफल राजनीतिज्ञ अथवा अयोग्य सेनानी तो नहीं ही समझे जाँयगे।

अज़ीमुल्ला—हुज़ूर! हमें अपनेको ऐसा समझलेना जायज़ न होगा। दुश्मनोंकी जालोंसे बचते हुए हम चाहें जहाँ कहीं भी रहें, किसी न किसी तरीक़ेसे अपनी मक़सदको पूरी करनेके फ़न तो अपनाते ही रहेंगे। मैं अगर क़ाबा शरीफ़में रहूँ और आप पशुपतिनाथके मन्दिरमें रहें, तब भी आज़ादी-की खातिर हमारे दिमाग़ काम करते ही रहेंगे। हमने अबतक जो काम किये हैं, साधु या फ़कीरकी शक़्लमें हमारे तब्दील हो जानेसे वह छूटनेवाले इस ज़िन्दगीमें नहीं हैं। आप इसे समझ लें कि मेढ़ा अगर पीछे हटता है तो ख़ामोश रहने के लिए नहीं, बल्कि ज़बर्दस्त वार करने-की ग़रज़ से। हमारी भी यही हालत है। आप यक़ीन रखें कि सेवस्तोपॅलके मैदानमें जङ्गका रूसी गोला जब अज़ी-मुल्लाको अपनी जगहसे न हटा सका, तो अब वह अपना सियासती बाना नहीं ही छोड़ेगा।

नाना साहब—यह मानी हुई बात है, कि राजनीतिक षड्यन्त्र कभी-कभी प्रत्यक्ष युद्धोंकी अपेक्षा अनायास सफल हो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाया करते हैं, लेकिन आप क़ाबा शरीफ़में बैठकर और हम नेपालके किसी कोनेमें बैठकर क्या कर सकेंगे ? इस कार्यकी निष्पत्तिके लिए हमारे पास आन्तरिक अथवा बाह्य साधन ही कितने हैं ? अन्तर्मुखी साधन तो केवल परिव्राजकोंके लिए ही विहित हैं।

अज़ीमुल्ला—हुज़ूर ! जिस क़दर बादशाह हुमायूँने फ़ारसमें मानिन्द हम लोगोंके जिन्दगी बसर करते हुए भी सूरी सल्तनतको लड़खड़ाती देख, वहाँवालोंकी इमदादसे उसे शिकस्त दे हिन्दोस्तानकी सल्तनत वापस ली, उसी क़दर हम भी अँग्रेज़ोंके ग़ैरमुल्कवालोंसे उलझ जानेपर, यहाँ उनकी ताक़तके कमज़ोर होते ही, हिन्दोस्तानियों व बाहरवालोंकी इमदाद से अपने मुल्कको आज़ाद कर लेंगे। नेपोलियनके कहनेके मुताबिक़ नामुमक़िन नामकी किसी चीज़पर हमें यक़ीन नहीं करना है, फिर सियासती मसायल तो और भी तिलस्मी हुआ करते हैं। मिसालके लिए नेपाल-सरकारका लखनऊके नवाबी खान्दानको—जो उसके दोस्तों फ़िरङ्गियोंका दुश्मन हैं—अपने यहाँ पनाह देनेकी सोचना काफ़ी है। आप यक़ीन रखें; सियासती मसायलको तगड़े बनानेकी ग़रज़से ही मैंने अपने लिए क़ाबा शरीफ़में आबाद होना व आपके लिए पशुपतिनाथके इर्द-गिर्द चक्कर लगाते रहना ज़रूरी समझा है।

नानासाहब—इस समय तो हमारी पराजयसे फ़िरङ्गियों-द्वारा उत्पीड़ित भारतीयोंके मनोबल इतनी गिरी अवस्था तक पहुँच चुके हैं कि उनके ऊँचे उठनेके लिए पर्याप्त समयकी अपेक्षा है। रह गई भारतमें अँग्रेज़ोंकी शक्तिके शिथिल होने एवं बाहरी सहायताकी बात, मेरी समझसे इस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषयमें सम्राट् हुमायूँका व्यक्तिगत स्वार्थसे सम्बन्धित विजयका उदाहरण, तथा अँग्रेज़ सेनापति नेल्सनद्वारा पराजित हो सिसलीमें मृत्युपर्यन्त बन्दी-जीवनसे आवृत रहनेवाले नेपोलियनका आदर्श पर्याप्त न होगा। अब तो हमें यही करना चाहिए कि हम चाहे संसारके किसी भी कोनेमें अपनी सुविधानुसार रहें, भारतीय स्वतन्त्रताकी जो ज्योति जाग्रत हो चुकी है उसे बुझने न दें, ताकि भावी पीढ़ी हमें लानत न देने पावे।

(सहसा विनयानवत दोनोंके सम्मुख प्रकाशपुञ्जसे युक्त योगीका अन्तरिक्षसे अवतरण)

योगी—मैं तुम दोनोंकी मनःस्थितियोंसे अवगत हूँ, फिर भी अपने उद्देश्य क्रमशः कह सुनाओ।

नाना साहब—देव ! संस्कृतियोंकी जन्मभूमि भारत सावित्रीकी स्वतन्त्रतामें ही मेरी सम्पूर्ण अभिलाषाओंकी अन्तर्निहित पूर्णता है।

अज़ीमुल्ला—ऐ दीनके सच्चे पादशाह ! नानिन्द पेशवा साहबके मेरी भी यही दिली ख्वाहिश है।

योगी—इसके लिए भारतवासियोंको अभी लगभग सौ वर्षोंतक सङ्घर्षरत रहना होगा। जिस राष्ट्रमें मनुष्यकी प्रभूत सन्तानें जन्मसे मरणपर्यन्त ज्ञान एवं कर्मेन्द्रियोंसे शून्य न होती हुई भी अस्पृश्य एवं अन्त्यज समझी जायँ, जहाँ कुछ थोड़ेसे व्यक्तियोंके स्वार्थसिध्यर्थ समाजके नब्बे प्रतिशत श्रमनिमग्न व्यक्तियोंको भूखा-नङ्गा रहना पड़े, उसे सृष्टिके शाश्वत नियमानुसार पराधीनताकी चक्कियोंमें पिसना ही पड़ेगा। क्योंकि मानवीय सभ्यता मात्स्य न्यायमें विश्वास रखनेकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अभ्यस्त नहीं है। (अज़ीमुल्लाको बार-बार अपनी ओर सतृष्ण दृष्टिसे देखते देख) क्या चाहते हो?

अज़ीमुल्ला—शाह साहब! मेरी क़ाबा शरीफ़ पहुँचनेकी मुराद पूरी हो व मुझे आज़ादीकी अलख जगाने दी जाय।

योगी—ईश्वरेच्छासे आँखें बन्द करनेके बाद ही अपनेको भारतके पश्चिमी समुद्र तटके उस स्थानपर पाओगे, जहाँसे ईरान होतेहुए क़ाबाशरीफ़ पहुँचना सुगम है। वहाँसे तुम अपना प्रचार-कार्य करते हुए स्थल मार्गसे सकुशल क़ाबा पहुँच जाओगे। वहाँ दिल्लीके मुग़ल शाहज़ादे फ़ीरोज़शाहसे भी तुम्हारी भेंट होगी, जो तुम्हारे कार्यमें पर्याप्त सहायक होंगे; इसके अतिरिक्त वहाँ तुम्हें और भी देशी व विदेशी सहयोगियोंके सहयोग प्राप्त होंगे। (आँखें बन्द करते ही अज़ीमुल्लाका तिरोधान)

नाना साहब—भगवन्! आपका प्रभुत्व क्या मुझे भी अपने गन्तव्यतक नहीं पहुँचा सकता?

योगी—इसलिये नहीं, कि तुम नेपालराज्यकी निरापद सीमामें विद्यमान हो। यौगिक चमत्कार अकर्मण्यताको प्रश्रय नहीं दिया करते। भगवान् विश्वामित्रने नारियलके वृक्षोंसे मानव-सृष्टिकी अपने तपोबल-द्वारा कल्पना की, तो विधाताको यह स्वीकार न हुआ। भगवान् राम सेतुके बिना भी ससैन्य लङ्कापर अभियान करनेमें समर्थ थे, तथापि मर्यादापुरुषोत्तमका समुद्रमें तैरनेवाले सेतु-निर्माणका प्रमुख उद्देश्य यह था, कि इससे मानव भौतिक विज्ञानकी उस सीमातक उन्नति कर सके, जहाँ तक अकर्मण्यता, विलासिता, शोषण व अहङ्कार एवं संहारकी गति न हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फिर अनुग्रहकी सार्थकता भी साधक होने में है, न कि बाधक अथवा शोषणकी समस्याको बल देनेमें।

नाना साहब—प्रभो ! यदि आपके माध्यमसे मेरा महाभारत-कालीन वीरात्मा चिरञ्जीवी अश्वत्थामासे निकटका सम्पर्क स्थापित हो सके, तो भारतके साथ ही विश्व-संस्कृतिको नवचेतना प्राप्त हो। कृपया 'महते जानराज्याय' आपका असामान्य वर्चस् मेरा प्रकाशस्तम्भ हो ! आप............

(सहसा योगीका तिरोधान)

नाना साहब—(ध्यानावस्थित रहनेके बाद, स्वगत) छत्रपति साहूकी, विलक्षण परखशक्तिने मठ-भिक्षुक श्रीबालाजी विश्वनाथको अपना पेशवा बनाकर जिस भविष्यकी कल्पना-की होगी, उसे पूर्ण करनेमें अन्तिम बाजीरावका यह दत्तक सफल न हो सका। मातृभूमिकी बेड़ियाँ आज पहलेसे भी कहीं अधिक जकड़ी हुई हैं और पेशवाक पद जिस मठ-भिक्षुककी स्थितिसे प्रारम्भ हुआ था, पु वहीं पहुँच गया है। करोड़ों देश-बन्धुओंको विपत्तिव अग्निमें झोंक, मातृभूमि ! तुम्हारा यह कुपूत अज्ञातवास करने जा रहा है। माँ ! अपने इस कुपुत्रको क्षन्तव्य सम झना। प्रभो ! राष्ट्रकी स्वाधीनताके लिए सङ्घर्ष करनें हेतु नव-चेतनाके साथ यथाशीघ्र मेरा पुनर्जन्म हो। (पृथ पर माथा टेकतेहुए) माँ ! तुम्हें अपनी इस अबोध सन तिका अभिनन्दन स्वीकृत हो। (अन्तरिक्षमें देखतेहुए) स श्वर ! स्वाधीनताके प्राप्त्यर्थ एवं उसके संरक्षणार्थ भार की भावी सन्ततिको मेरा आह्वान स्वीकृत हो। (निस्तब्ध

[यवनिका]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुद्रक
महावीर प्रेस, भेलूपुर, वाराणसी–१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi